

वाला।

श्री हरिश्चन्द्र कला

अथवा

गोलोकवासी भारतभूषण भारतेन्दु श्री हरिश्चन्द्र का जीवनसर्वस्व

तृतीय भाग।

जिसमें

उक्त महामान्य सुप्रसिद्ध कविवर लिखित राजभक्ति-सूचक ग्रन्थों का संग्रह है।

हिन्दी भाषा के प्रेमी तथा रसिकजनों के मनोविलास के लिये श्री म० कु० बाबू रामदीन सिंह "क्षत्रिय—पत्रिका" सम्पादक ने संग्रह कर प्रकाशित किया।



पटना—"खड्गविलास" प्रेस बांकीपुर।
साहिबप्रसाद सिंह ने मुद्रित किया।
हरिश्चन्द्र संवत् ८] १९४९ [सन १८९२ ईस्वी

दाम २) रुपये   डाकमहसूल ।)

भूमिका ।



भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी के अमूल्य और अलभ्य नाटकीय तथा ऐतिहासिक रत्नों का उपहार प्रथम और द्वितीय भाग में सुजन रसिकों को समर्पित कर चुका हूं, सम्प्रति इस खण्ड में उन की अपूर्व राजभक्ति का स्वरूप दर्शन कराया जाता है। ग्रन्थकार के विषय में लोगों का चाहे जो विचार हो परन्तु वास्तव में वह अन्त करण से भारतीय गवर्मेण्ट के परम शुभचिन्तक भक्त थे। जब २ कोई हर्ष वा शोक का अवसर उपस्थित हुआ, माननीय ग्रन्थकार ने यथोचित रीति पर आन्तरिक आनन्द वा खेद सूचित किया, और सब से भारी बात तो यह थी कि जो कुछ वह करते थे श्रद्धासहित करते थे। चक्रवर्त्तिनी महारानी भारतेश्वरी के राजकुल तथा शासन विषय में बाबू हरिश्चन्द्र जी को कितना अनुराग था वह सहजही में इन ग्रन्थों के पढने से ज्ञात हो सकता है विशेष कहने की आवश्यकता नहीं, कहावत प्रसिद्ध है कि हाथ कंगन को आरसी क्या है।

प्रकाशक.

ग्रन्थसूची ।



PREFATORY NOTE.

A special meeting of the Benares Institute was held on the 22nd September 1882 at 6 P M in the Town Hall to express our joy at the recent success of the Indian army in Egypt Almost all the Raises, Civil, Revenue, and Judicial officers, Pandits Professors, Members of Municipal and District committees and Scholars were present The Hall was full and many were obliged to hear the recital from the Veranda The Honorable Raja Sivaprasad C S I was unanimously voted to the chair

Babu Harischandra read an excellent poem in Hindi on the subject The opening stanzas of the poem explain the cause of India's unusual cheerfulness It is the signal success of the Indian army in Egypt A vivid constrast is drawn between the past and present conditions of India and the victory of the British nation in Egypt is described

The gentlemen present expressed their unqualified applause at the recital and the hall resounded with cheers The Honorable Raja Sivaprasad C S I then described the importance of Egypt as a high way to India and said that the British conquest has been extremely rapid He thanked Babu Harischandra for his excellent poem

Mr Bullock, the Collector warmly thanked Raja Sivaprasad and Babu Harischandra for sentiments of loyalty to the British Government, expressed by the people of Benares

H H The Maharaja of Benares was unavoidably detained at Ram Nagar on account of some religious ceremony but he has expressed his full sympathy with the object of the meeting

॥ विजयिनी विजय वैजयन्ती ॥

कहो कहा यह सुनि परयौ , जाको सबहि उछाह ।
हरखित आरज मात्र मे , जिय बढाइ अति चाह ॥ १ ॥
फरकि उठी सब की भुजा, , खरकि उठीं तरवार ।
क्यौ आपुहि ऊंचे भए , आर्य मौंछ के बार ॥ २ ॥
जे आरज गन आजु लौं , रहे नवाए माथ ।
तेहू सिर ऊंचो किए , क्यौ दिखात इक साथ ॥ ३ ॥
क्यौं पताका लहरन लगी , फहरन लगे निसान ।
क्यौ बाजन बजिबे लगे , घहरि घहरि इक तान ॥ ४ ॥
क्यौ दुंदुभि दकार सों , छायो पूरि अकास ।
क्यौ कम्पित करि पवन गति , छई नफीरी आस ॥ ५ ॥
ब्रिटिश सुशासित भूमि मैं , रन रस उमगे गात ।
सबै कहत जय आजु क्यौं , यह नहि जानी जात ॥ ६ ॥
छुटत तोप गम्भीर रव , वज्र नाद सम जोर ।
गिरि कम्पत थर थर खरे , सुनि धर धर धर सोर ॥ ७ ॥
विन्ध्य हिमालय नील गिरि , सिखरन चढ़े निसान ।
फहरत " फ्लग ब्रिटानिया " , कढ़ि कढ़ि मेघ समान ॥ ८ ॥
भटक भटक लौं आजु क्यौ , सगरो आरज देस ।
अति अनन्द मै भरि रह्यौ , मनु दुख को नहिं लेस ॥ ९ ॥
क्यौ अजीव भारत भयो , आजु सजीव लखात ।
क्यौ मसान भुव आजु बनि , रंग भूमि सरसात ॥ १० ॥
सहसन बरसन सों सुन्यौ , जो सपनहु नहि कान ।
सो जय भारत शब्द क्यौ , पूर्यो आजु जहान ॥ ११ ॥

शाखा ।

कहा तुम्हैं नहि खबर खबर जय की इत आई ।
जीति मिसर मैं शत्रु सैन सब दई भगाई ॥ १ ॥
तड़ित तार के द्वार मिल्यो सुभ समाचार यह ।
भारत सैना कियो घोर संग्राम मिस्र मह ॥ २ ॥

जैनरल मकफर्सन आदिक जे सैनापति गन ।
तिन लै भारत सैन कियो भारी अति ही रन ॥ ३ ॥
बोलि भारती सैन दयो आयसु उठि धाओ ।
अभिमानी अरबी बेगहि बेगहि गहि लाओ ॥ ४ ॥
सुनि के सब ही परम बीरता आजु दिखाई ।
शत्रु गनन सों सनमुख भारी करी लराई ॥ ५ ॥
छिन में शत्रु भगाइ गह्यो अरबी पासा कह ।
तीन सहस रन बीर करे बधुआ समर मह ॥ ६ ॥
भारज गन को नाम आजु सब ही रखि लीनो ।
पुनि भारत को सोस जगत मह उन्नत कीनो ॥ ७ ॥

आरम्भ ।

कित अरजुन कित भीम कित , करन नकुल सहदेव ।
कित बिराट अभिमन्यु कित , द्रुपद सम्ब नरदेव ॥
कित पुरु रघु अज यदु किते , परशुराम अभिराम ।
कित रावन सुग्रीव कित , हनूमान गुनधाम ॥
कित भीषम कित द्रोन कित , सात्यकि अति रनधीर ।
कित पोरस कित चन्द्र कित , पृथीराज हम्मीर ॥
कित सकारि बिक्रम किते , समर सिंह नरपाल ।
कित अन्तिम नर बीर , रन जीत सिंह भूपाल ॥
आहडु लखहि सब आइ निज , सन्तति को उत्साह ।
सजे साज रन को खरे , मरन हेत करि चाह ॥
स्वामि भक्ति किरतज्ञता , दरसावन हित आज ।
छाडि मान देखहि खरो , आरज बल समाज ॥
तुमरो कीरति कुल कथा , साची करिबे हेतु ।
लखहु लखहु नृप गन सबै , फहरावत जय केतु ॥
मेटहु जिय के सल्य सब , सफल करहु निज नैन ।
लखहु न अरबी सो लरन , ठाढो आरज सैन ॥

शाखा ।

सुनत बीर इक हद नर की सम्मुख धायो ।

श्वेत सिंह जिमि गुहा छाडि बाहर दरसायो ॥
सुभ्र मोछ फहरात सुजस की मनहु पताका ।
सेत केश सिर लसत मनहुं थिर भई बलाका ॥
अरुन बदन ढिग सेत केश सुन्दर दरसायो ।
बीर रसहि मनु घेरि रह्यौ रस सान्त सुहायो ॥
रवि ससिमिलि इक ठौर उदित सो कान्ति पसारे ।
पीन हृदय आजानु बाहु श्वेताम्बर धारे ॥
कटि पैं भाथा कान्ध धनुष कर मैं करवाला ।
परी पीठ पैं ढाल गुलाबी नैन विशाला ॥
सिंह ठवनि निरभय चितवनि चितवत समुहाई ।
तन दुति फैलो छुटत परत धरनी पर आई ॥
नभ मधि ठाढ़े होइ कही यह घन सम बानी ।
अति गभीर कछु करुना कछुक बीर रस सानी ॥

कोरस ।

क्यों बहरावत झूठ मोहि , और बढ़ावत सोग ।
अब भारत में नाहिं वे , रहे बीर जे लोग ॥
जो भारत जग मे रह्यौ , सब सों उत्तम देस ।
ताही भारत में रह्यौ , अबनहि सुख को लेस ॥
याही भुव मैं होत है , हीरक आम कपास ।
इतही हिमगिरि गङ्गजल , काव्य गीत परकास ॥
याही भारत देस में , रहे कृष्ण मुनि व्यास ।
जिन के भारत गान सों , भारत बदन प्रकास ॥
जासु काव्य सों जगत मधि , ऊंचौं भारत सीस ।
जासु राज बल धर्म को , तृषा करहिं अवनीस ॥
सोई व्यास अरु राम के , बंस सबै सन्तान ।
अब लौ ये भारत भरे , नहि गुन रूप समान ॥
कोटिकोटि ऋषि पुन्य तन , कोटि कोटि नृप सूर ।
कोटिकोटि बुध मधुर कवि , मिले यहां की धूर ॥

आरम्भ ।

हाय यहै भारत भुव भारी । सब ही विधि तें भई दुखारी ॥
रोम ग्रीस पुनि निज बल पायो । सब बिधि भारत दुखित बनायो ॥
अति निरबलो स्याम जापाना । हाय न भारत तिनहु समाना ॥
हाय रोम तू अति बड भागी । बरबर तोहि नास्यो जय लागी ॥
तोडे कीरति खम्भ अनेकन । ढाहे गढ बहु करि जय टेकन ॥
सबै चिन्ह तुव धूर मिलाए । मन्दिर महलनि तोरि गिराए ॥
कछु न बची तुव भूमि निसानी । सो बरु मेरे मन अति मानी ॥
पै भारत भुव जीतन हारे । थाप्यौ पद या सीस उघारे ॥
तोड्यो दुर्गन महल ढहायो । तिनही मैं निज गेह बनायो ॥
ते कलङ्क सब भारत केरे । ठाढे अजहू लखो घनेरे ॥
हाय पञ्चनद हा पानीपत । अजहु रहे तुम धरनि बिराजत ॥
हाय चितौर निलज तू भारी । अजहु खरो भारतहि मझारी ॥
जा दिन तुव अधिकार नसायो । ताही दिन किन धरनि समायो ॥
रह्यो कालक न भारत नामा । क्यों रे तू बारानसि धामा ॥
इन के भय कम्पत संसारा । सब जग इन को तेज पसारा ॥
इन के तनिकहि भौंह हिलाए । थर थर कम्पत नृप भय पाए ॥
इन के जय की उज्जल गाथा । गावत सब जग के कवि साथा ॥
भारत किरिन जगत उजियारा । भारत जीव जियत संसारा ॥
भारत भुजबल लहि जग रच्छित । भारत विद्या सों जग सिच्छित ॥
रहे जबै मनि क्रीट सुकुण्डल । रह्यो दण्ड जब प्रबल अखण्डल ॥
रह्यो रुधिर जब आरज सीसा । ज्वलित अनल समान अवनीसा ।
साहस बल इन सम कोउ नाहीं । तबै रह्यो महि मण्डल माहीं ॥
तब इनहीं को जगत बडाई । रही सबै जग कीरति छाई ॥
तितही अब ऐसो कोउ नाहीं । लरै छिनहु जो समर माहीं ॥
प्रगट बीरता देइ दिखाई । छन महं सिसरहि लेइ छुडाई ॥
निज भुज बल बिक्रम जग माडै । भारत जस ध्रुव अविचल गाडै ॥
यवन हृदय पबी पर बरबस । लिखै लोह लेखनि भारत जस ॥
पुनि भारत जस करि विस्तारा । मम मुख फेर करै उजियारा ॥

गाथा ।

हाय ! सोई भारत भूमि भई सब भांति दुखारी ।
रह्यो न एकहु बीर सहसन कोस मंझारी ॥
होत सिंह को नाद जौन भारत बन माहीं ।
तह अब ससक सियार स्वान खर आदि लखाहीं ॥
जह भूमी उज्जैन अवध कनौज रहे वर ।
तह अब रोवत सिवा चहू दिसि लखियत खंडहर ॥
धन विद्या बल मान बीरता कीरति छाई ।
रही जहां तित केवल अब दीनता लखाई ॥

कोरस ।

अरे बीर इक बेर उठहु सब फिर कित सोए ।
लेहु करन करवालन काढ़ि रन रङ्ग समोए ॥
चलहु बीर उठि तुरत सबै जय ध्वजहि उड़ाओ ।
लेहु म्यान सों खड्ग खींचि रन रंग जमाओ ॥
परिकर कटि कसि उठो धनुष पै धरि सर साधौ ।
सजो जुद्ध बानो सब ही रन कंकन बाधौ ॥
का अरबी की बेग कहा वाको बल भारी ।
सिंह जगे कहुं स्वान ठहरिहैं समर मझारी ॥
पद तल इन कह दलहु कीट तृन सरिस नीच चय ।
तनिकहु संक न करहु धर्म जित जय तित निश्चय ॥
जिन बिनही अपराध अनेकन कुल संहारे ।
दूत पादरी बनिक आदि बिन दोसहि मारे ॥
प्रथम जुद्ध परिहार कियो विश्वास दिवाई ।
पुनि धोखा दै एका एकी करी लराई ॥
इन कों तुरतहि हतो मिलैं रन कै घर मांहीं ।
इन छलियन सों पाप किये हू पुन्य सदाहीं ॥
उठहु बीर तरवार खींचि माडहु घन संगर ।
लोह लेखनी लिखहु आर्य बल जवन हृदय पर ॥
मारू बाजे बजे कहो धौंसा घहराहीं ।

उड़हि पताका सत्रु हृदय लखि लखि थहराही ॥
चारन बोलहि विजय सुजस बन्दी गुन गावैं ।
छुटहिं तोप घन घोर सबै बन्दूक चलावैं ॥
चमकहि असि भाले दमकहि ठनकहि तन बखतर ।
हींसहि हय झमकहि रथ गज चिक्करहि समर थर ॥
नासहु अरबी शत्रु गनन कहँ करि छन महँ छय ।
कहहु सबहि विजयिनी राज मह भारत की जय ॥

आरम्भ ।

सुनत उठे सब बीर बर कर महँ धारि कृपान ।
कियो सबन मिलि जुद्ध हित धारि उमग पयान ॥
पहिरि सिरस्त्र कटि कसि सबै तौलत चले कृपान ।
लै बंदूक साधत चले अच्छ बीर बलवान ॥
निरभय पग आगहि परत मुख तें भाखत मार ।
चले बीर सब लरन हित मिसरिन सों इक बार ॥
चन्द्र सूर्य्य बंसी जिते प्रमर अनल चौहान ।
घोड़न चढ़ि आए सबै छत्री बीर सुजान ॥
सुमिरि सुमिरि छत्री सबै निज पुरुखन की बात ।
धाए ऐंठत मोछ निज उमगि बीर रस गात ॥
उमगि भारती सैन जब समुद सरिस घनघोर ।
तब मिसरी चीनी कहा का सैंधव की ओर ॥
बजी हटकि रन दुन्दुभी गरजे गहकि निसान ।
कंपे थर थर भूमि गिरि नदी नगर असमान ॥

गाथा ।

दमामा नगाड़े बजाओ बजाओ । अरे राग मारू सुनाओ सुनाओ ॥
सबै फौज आगे बढ़ाओ बढ़ाओ । अरे जै पताका उड़ाओ उड़ाओ ॥
कहाँ वीर हो बेग धाओ सुधाओ । अरे वीरता को दिखाओ दिखाओ ॥
अरे म्यान सों शस्त्र खोलो सु खोलो । अरे मार मारो धरो मार बोलो ॥
अरे शत्रु को सीस काटो सु काटो । अरे कायरै दौरि डाटो सु डाटो ॥

निसाना सबै लै लगाओ लगाओ । अरे लै, बंदूकै चलाओ चलाओ ॥
सबै जुद्ध भारी मचाओ मचाओ । अरे शत्रु सेनै, भगाओ भगाओ ॥

कोरस ।

भगी शत्रु की सैन रह्यो कछु नाहिं ठिकाना ।
के जमपुर कै गिरि बन कंदुरन कियो पयाना ॥
सुख सों बस्यो स्वदेश प्रजा गन अति सुख पायो ।
ब्रिटिश क्रोध को फल सब काहु परतच्छ लखायो ॥
भयो समुद्रहि जिन ब्रिटानिया निज काटाचबल ।
जग मह जिन को निरभय बिचरत कठिन प्रबलदल ॥
जिन भारत मह आइ तोप बल दह्यौ बच्छ कह ।
अग्नि बान जय पत्र लिख्यौ जिन भारत अंग मह ॥
कठिन छत्रियन जीति लए जिन बहु गढ सहजहि ।
सिक्खन दीनी हार लियो मुलतान तनिक चहि ॥
तर्जनि अग्र हिलाइ लखनऊ छिन मह लीनो ।
तनिक दृष्टि की कोर सकल राजन बस कीनो ॥
कठिन सिपाही द्रोह अनल जा जल बल नासो ।
जिन भय सिर न हिलाइ सकत कहु भारत बासो ॥
जासु सैन बल देखि दुष्ट सहजहि जिय हार्यो ।
बरलिन सधिहि मानिकोऊ विधि मसयहि टार्यो ॥
सहजहि निज बस कीनो जिन मिस्र को टापू ।
छाड़ दियो सब नृप गन पै निज प्रबल प्रतापू ॥
काबुल अरु कन्धार कठिन मह हलचल पार्यो ।
शेर अली याकूब अयूबहि सहज उखार्यो ॥
खैबर दर्र अरगना कठिन गिरि सरित करारे ।
शत्रु हृदय सह तोडि तोड़ि रिजु कीन्हे सारे ॥
रूस रूस उर सूल दियो ईरान दबायो ।
ब्रिटिश सिंह को अटल तेज करि प्रगट दिखायो ॥
सिंह चिन्ह की धुजा चढी बाला हिसार पर ।
जय देवी विजयिनी सोर भो काबुल घर घर ॥

ताके आगे काहा मिसिर का बरनो को मल ।
इन सों अपराधु वैर किए पावे परतछ फल ॥
बज्यो हरिश डंका गहकि धुनि छाई चहु ओर ।
जयति राज राजेश्वरी कियो सबनि मिलि सोर ॥

इति



॥ भारतवीरत्व ॥

"अहो आज का सुनि परत भारत भूमि मझार ।
चहू ओर ते घोर धुनि कहा होत बहुबार ॥
ब्रटिश सुशासित भूमि मैं रंग रस उमगो गात ।
सबै कहत जय आज क्यों यह नहि जान्यो जात ॥

शाखा ।

जितन हेतु अफगान चढत भारत महरानी ।
सुनहु न गगनहि भेदि होत जैजै धुनि बानी ॥
जै जै जै विजयिनी जयति भारत सुख दानी ।
जै राजा गन मुकुटमनी धन बल गुन खानी ॥
सोई ब्रटिश अधीश चढत अफगान जुध हित ।
देखहु उमग्यो सैन समुद उमड्यो सब जित तित ॥

पूरनकोस ।

अरे ताल दै लै बढाओ बढाओ । सबै छाड़ कै राग मारू सुनाओ ॥

आरम्भ ।

"कहा सबै राजा कुवर और अमीर नवाब ।
कहौ आज मिलि सैन में हाजिर होहु सिताब ॥
धाओ धाओ वेग सब" पकरि पकरि तरवार ।
लरन हेतु निज सत्रु सों चलहु सिन्धु के पार ॥
चढि तुरङ्ग नव चलहु सब निज पति पाछे लागि ।
"उडुपति सग उडगन सरिस रूप सुख सोभा पागि" ॥
याद करहु निज वीरता सुमिरहु कुल मरजाद ।
रन कङ्कन कर बाधि कै लरहु सुभट रन स्वाद ॥
यज्यो वृटिश डङ्का सबै गह गह गरजि निसान ।
कंपे थर थर भूमि गिरि नदी नगर असमान ॥

शाखा ।

"राज सिंह छूटे सबै करि निज देश उजार ।
लरन हेत अफगान सौं धाए बांधि कतार ॥

पूर्वकीरस ।

सुन्दर सैना सिबिर सजायो । मनहु वीर रस सदन सुहायो ॥
छुटत तोप चहु दिसि अति जङ्गी । रूप धरे मनु अनल फिरङ्गी ॥

कहा कोई ऐसो इतेना दिखावै । अबै भूमि के जो कलंकै मिटावै ॥
चलै संग मै जुद्ध को स्वाद चाखै । अबौ देस की लाज को लाइ राखै ॥
कहा हाय ते बीर भारी नसाए । किते दर्प ते हाय मेरे बिलाए ।
रहे बीर जे सूरमा पूर भारे । भए हाय तेइ अबै कूर कारे ॥

तब इन ही को जगत बड़ाई । रही सबै जग कीरति छाई ॥
तिन ही अब ऐसे कोउ नाही । लरै छिनहु जो समर माही ॥
प्रगट बीरता देहि दिखाई । छन महं काबुल लेइ छुड़ाई ॥
रूस हृदय धंसो पर बरबस । लिखे लोह लेखनि भारत जस ॥

आरम्भ ।

परिकर कटि कसि उठी धनुष पै धरि सर साधी ।
केसरिया बानो सजि कर रन कंकन बांधी ॥
जासु राज सुख बस्यो सदा भारत भय त्यागी ।
जासु बुद्धि नित प्रजा पुञ्ज रञ्जन मह पागी ॥
जो न प्रजा तिय दिखि सपनहू चित्त चलावैं ।
जौन प्रजा के धर्महि हठ करि कबहु नसावैं ॥
बांधि सेतु जिन सुगम किए दुस्तर नद नारे ।
रचा सड़क बेधड़क पथिक हित सुख बिस्तारे ॥
ग्राम ग्राम प्रति प्रबल पाहरू दिए बिठाई ।
जिन के भय सों चोर बृन्द सब रहे दुराई ॥
नृप कुल दत्तक प्रथा कृपा करि निज थिर राखी ।
भूमि कोष को लोभ तज्यो जिन जग करि साखी ॥
करि बारह कानून अनेकन कुमहि बचायो ।
बिद्या दान महान नगर प्रति नगर चलायो ॥
सब ही बिधि हित कियो बिबिध बिधि नीति सिखाई ।
अभय बांह को छांह सबहि सुख दियो सोभाई ॥

जिन के राज अनेक भांति सुख किए सदांहीं ।
समर भूमि तिनसों छिपनो कछु उत्तम नाहीं ॥
जिन अधनन तुम धरम नारि धन तीनहु लीनो ।
तीनहू के हित आरज गन निज असु तजि दीनो ॥
मान सिंह बङ्गाल लरे परताप सिंह संग ।
राम सिंह आसाम विजय किय जिय उछाह रंग ॥
छत्रसाल हाडा जूझ्यौ दारा हित भारी ।
नृप भगवान सुदास करो सेना रखवारी ॥
तौ इन के हित क्यों न उठहि सब बीर बहादुर ।
पकरि पकरि तरवार लरहि बनि युद्ध चक्राधुर ॥

साखा ।

सुनत उठे सब बीर बर कर मह धारि कृपान ।
सजि सजि सहित उमङ्ग किय पैसावरहि पयान ॥
चलो सैन भूपाल की बेगम प्रेषित धाइ ।
अलवर सों बहु ऊंट चढि चले बीर चित चाइ ॥
सैन सस्त्र धन कोष सब अर्पन कियो निजाम ।
दियो बहावलपूर पति सैन सहित निज धाम ॥
बीस सहस्र सिपाह दिय जम्बू पति सह चाह ।
सैन सहित रनहित चल्यो आपुहि नाभा नाह ॥
मण्डी ;झींद सुकेत पटियाला अम्बाधीस ।
टौंक बैन्धिया बहुरि करपूरथला अवनीस ॥
जोधपुराधिप अनुज पुनि टौंक चचा सह साज ।
नाहन मालारकोटला फरिद कोट के राज ॥
साजि साजि निज सैन सब जिय में भरे उछाह ।
उठि के रनहित चलत भे भारत के नरनाह ॥
'डिसलायाल' हिदुन कहत कहा मूढ ते लोग ।
द्दग भर निरखहि आज ते राजभक्ति सञ्जोग ॥
निरभय पग आगेहि परत सुख तें भाखत मार ।
चले बीर सब लरन हित पच्छिम दिसि इकबार ॥

पूर्ण कोरस ।

दोहा—छूटी तोप फहरी धुजा , गरजे गहकि निसान ।
भुवमण्डल घमासान भयो , भारत सैन पयान ॥

इति ।

भारतभिक्षा ।

अहो आज का सुनि परत भारत भूमि मझार ।
चहूँ ओर आनन्द धुनि बाढ़ा होत बहुबार ॥
बृटिश सुशासित भूमि मैं आनन्द उमगे गात ।
सबै चहत जय आज क्यों यह नहिं जान्यो जात ॥
बृटिन राज चिन्हन सजी नगरन अटा अटारि ।
धुजा पताका फरहरहिं सहसन आज सवारि ॥
गङ्ग जमुन गोदावरी पथ ह्वै ह्वै बहु जान ।
क्यों सब धावत हैं सजी देव बिमान समान ।
घर बाहर इत उत सबै सजि बसन मनि साज ।
चातिक मोर चकोर-से अरे भरे क्यों आज ॥

भाखा ।

गावत भारत आज कुमार बृटिनहिं सुखदानी ।
सुनहु न गगनहिं भेदि होत जैजै धुनि बानी ॥
जै जै जै बिजयिनी जयति भारत महरानी ।
जै राजा गन मुकुटमनी धन बल गुन खानि ॥
जाकी कृपा कटाच्छ चहत सिगरे राजा गन ।
जा पद भारत भुवन लुठत बस ह्वै कंपत मन ॥
आवत सोई बृटिन कुमार जल पथ सुनि एहि छन ।
ठाढ़ो भारत मग मैं निरखन प्रेम पुलक तन ॥

पूर्न कोरस ।

मृदङ्गादि बाजे बजाओ बजाओ । सितारादि यन्त्रै सुनाओ सुनाओ ॥
अरे तालदै लै बढ़ाओ बढ़ाओ । बधाई सबै धाइ [illegible] जगाओ ॥
कहा है रबाबी मृदङ्गी सितारी । कहा हैं गवैये कहा नृत्यकारी ॥
कहा आज सोलावकस बाजपेई । कहा आज हैं [illegible] गुसाईं ॥
कहाँ भाट नाटकपती स्वांगधारी । कहा [illegible] करैं मद तयारी ॥
कहो रागिनी आज भारी जमावैं । मिलै [illegible] सु गावैं बजावैं ॥

कहा भाड कत्थक छिपे हे बुलाओ । मुबारक कहाओ बधाई गवाओ
कहा हैं सबै सुन्दरी बार नारी । कहो पेसवाजै सजै आज भारी
लगै टुनमुन आज अवाज प्यारी । सरङ्गी बजै राग रङ्गी सवारी
छिडै भैरवी सारगी सिन्धु काफी । जमै जोगिया पूरीया श्री धनाश्री
रहै कान्हरा देश सोरठ बिहागा । कलिंगा किदारा परज आदि रागा
मिले तान लै राग रंगै जमाओ । मिलै मान संगीत भावै दिखाओ
रहै लाग डाटौ डरप तिर्प संगा । रहै तत्थई तत्थई नृत्य रंगा
दिखाओ हमारे कला आज धाए । बडे भाग सों पाहुने गेह आए ।

आरम्भ ।

कहा सबै राना कुवर और अमीर नवाब ।
गाजराज दरबार में हाजिर होहु सिताब ॥
सिरन झुकाइ सलाम करि मुजरा करहु जुहारि ।
जटितहु जूतन त्यागि कै स्वच्छ बूट पगधारि ॥
जानु सुपानि नवाइ कै पद पैं धरि उसनीस ।
चूमि चूमि बर अभय प्रद कर जुग नावहु सीस ॥
परम मोच्छ फल राज पद परसन जीवन माहि ।
बूटन देवता राजसुत पद परसहु चित चाहि ॥
कित हुलकर कित सेन्धिया कित बेगम भूपाल ।
कित काशीपति कित रहे सिक्खराज पटियाल ।
कित लायक ईजानगर मानी नृप मेवार ॥
किते जोधपुर जैपुरी तायकोर कछार ।
जाट भरतपुर धोलपुर राना कित तुम जाम ॥
कित मुहम्मदिन के पती दच्छिण राज निजाम ।
धाओ धाओ बेग सब पहिरि पहिरि पौसाक ॥
पगरी मोतीमाल गल साजि साजि इक ताक ।
गने बांधि इस्टार सब जटित हीर मनि कोर ।
धावहु धावहु दौरि कै कलकत्ता की ओर ॥
चढि तुरग बग्गीन पर धावहु पाछे लागि ।
उड्पति सग उडग सरिस नृप सुख सोभा पागि ॥
राण भेंट समहो करो अहो अमीर नवाब ।

हाज़िर ह्वै झुकि झुकि करौ सबै सलाम अदाब ॥

गाथा ।

राज सिंह छूटे सबै करि निज देश उधार ।
सेवन हित नृप वर कुमर धाये बांधि कतार ॥
सजि अफ़गानिस्तान कों धाये पुष्ट पठान ।
हिमगिरि को ह्वै पीठ किय काश्मीरेस पयान ॥
नाभा पटियाला अमृत-सर जम्मु अस्थान ।
कच्छ सिंधु गुजरात मेवाड़ राजपुतान ॥
कोल्हापुर हैदराबाद काशी अरु इन्दौर ।
धाए नृप इक साथ सब करि सूनो निज ठौर ॥
भरि कुल दीपक राज सुत धाये भूप पतङ्ग ।
रुके न गिरिवर नगर नद समुद जमुन अरु गङ्ग ॥
जहां पण्डु जिन हस्तिनापुर मधि कीनी जाग ।
राजसूय साचो लखे वृटिश रचित सब भाग ॥

पूर्ण कौरस ।

अति सुन्दर मोहनो सजायो । आज कलकत्ता नगर सुहायो ॥
द्वार द्वार पर वन्दन माला । रंग रंग बसन फूल दल जाला ॥
कदली खम्भ पात थरहरहीं । पट भय हिलि २ मनु सगहरहीं ॥
फर फर फहरत धुजा पताका । चम चम चमकत कलस बलाका ॥
अटा अटारी बाहर भीतर । छज्जे छाजन गोख झरोखन ॥
दीपन्हि दीपक परत लखाई । मनु नभसे तारावलि आई ॥
दिगकी रविप्रकाशअरुविजली लसित । मनहु हीर गिरि खण्डन सज्जित ॥
छुटत अतसबाजी रंग रंगी । गगन प्रकट मनु अनल फिरंगी ॥
नय तारे प्रगटहि नसि जाहीं । उड़त बान इमि गगन लखाहीं ॥
गजसितारनि की छबि भारी । नभ मनु तेजोमय फुलवारी ॥
धन कलकत्ता कन्नि रजधानी । जेहि लखिके सुरपुरी लजानी ॥
चलत कुमर चढ़ि चपल तुरंगनि । संग सोभित दल बल चतुरंगनि ॥
नृप गन धावत पाछे पाछे । अश्व चढ़े मनि काछे आछे ॥
ताजन पर कलगी थर हरई । नृपगन दल दल सोभा करई ॥

घनहि नगर दरसन हित धाई। झमक झमक बाजनी बजाई॥
बजत वृटिस भेरी घहराई। कादर मन सुनि सुनि थहराई॥
रूल बृटानिय रूल दि वेवस। ताल तरङ्ग बजत अति रंग रस॥

आरम्भ।

उठहु उठहु भारत जननि नेह सुधर भरि गोद।
आज जगी तुव भाग फिर मानहु मन अति मोद॥
करि आदर मृदु वेन कहि बहु बिधि देहु असीस।
चिरदिन सों सिसु सुख लह्यो नहि तुम सोइ असीस॥
सेज छाडि माता उठहु उदित अरुन तुव देस।
मिटे अमङ्गल तिमिर सब राजकुमार प्रवेस॥
माति रोओ रोओ न तुम जानो व्याकुल होय।
उठहु उठहु धीरज धरहु लेहु कुअर सुख जोय॥
तुम दुखिया बहु दिनन सों सदा अन्य आधीन।
सदा और के आसरे रह्यो दीन मन खीन॥
तुम अबला इत भागिनी सदा अनाथ दयाल।
जोग भजन भूलो रहत सुधि जिय की बाल॥
सो दुख तुमरो देखि मह रानी करुना धारि।
निज प्रानोपम पुत्र तुव ढिग पठयो सनुहारि॥
रिपु पद के बहु चिन्ह सब कुअरहि देहु गिनाय।
काढ करेजो आपनो देहु न सुतहि दिखाय॥
सदा अनादर जो सह्यो सह्यो कठिन रिपु लात।
सो छत देहु दिखाय अब करहु कुअर सों बात॥
उठहु फेर भारत जननि है प्रसन्न इक बार।
लेहु गोद करि नृप कुअर भयो प्रात उजियार॥

आरम्भ।

सुनत सेज तजि भारत माई। उठी तुरन्तहि जिय अकुलाई॥
निबिड केश दोउ कर निरुआरी। पीत बदन की कान्ति पसारी॥
भरे नैन असुअन जल धारा। लै उसास यह वचन उचारा॥
क्यों आवत इत नृपति कुमारा। भारत में छायो अंधिआरा॥

कहा यहां अब लखिबे जोगू । अब नाहिन इत वे सब लोगू ॥
जिन के भय कंपत संसारा । सब जग जिन को तेज पसारा ॥
रहे शास्त्र की जब आलोचन । रहे सबे जब इत षट दरशन ॥
भारत विधि विद्या बहु जोगू । नहि अब इत केवल है सोगू ॥
सो अमूल्य अब लोग इतै नहि । कहा कुअर लखिहैं भारत महि ॥
रहे जबै मनि कीट सुकुण्डल । रह्यो दण्ड जब प्रबल अखण्डल ॥
रह्यो रुधिर जब आरज सीसा । ज्वलित अनल समान अवनीसा ॥
साहस बल इन सम कोउ नाहीं । जबै रह्यो महि मण्डल माहीं ॥
जब मोहि ये कहि जननि पुकारें । दशहू दिशि धुनि गरजन पारें ॥
तब मैं रही जगत की माता । अब मेरी जग मैं कह बाता ॥
लखिहै का कुमार अब आई । गोद बैठि हंसिहैं इत आई ॥
जब पुकारिहैं कहि मोहि माता । आनन्द सों भरिहै सब गाता ॥
युरपअमरिका इहिहि सिहाहीं । भारत भाग सरिस कोउ नाहीं ॥
पूर्व रह्यो मम रोम पिआरो । मरि कै बांचि उठो फिरि बारो ॥
योंसहु पुनि निज आनन पायो । हाय अकेली हमहि बनायो ॥
भग्न दण्ड कंपति कर धारी । कब लौं ठाढी रहौं दुखारी ॥
भग्न सकल भूषन तन माली । हाय जननि कहवे की लाजी ॥
मेरे भाग्य जीवन हारे । थाम्यो पद मम सीस उघारे ॥

आरम्भ ।

मुनि बोलो भारत जननि आये कहा कुमार ।
आये किन आओ निकट पुत्र जननि अकवार ॥
रहत निरन्तर अन्तरहि कठिन पराजय पीर ।
आवो सुत मम हृदय लगि सीतल करहु सरीर ॥

लेहु माय कहि मोहि पुकारी । सोइ भावन जिमि निज महतारी ।
सत सबत लौं रह्यो अधूरो । करो न आज माय सोइ पूरो ॥
अतिहि अकिंचन भारत वासा । अतिहि छीन हिन्दुन की आसा ॥
भूलि बृटिसबल धारि सनेहू । भारत सुतन गोद करि लेहू ॥

याहि छमा इन्है मति तुच्छ करो । नहि कीटहु तुच्छ विचार धरो ॥
इन्हहू पाइ जीवन देह दया । इनहू कह प्रान सनेह मया ॥

इनहू कहँ लाज दया ममता । इनहू कहँ क्रोध सुधा समता
इनहू तन शोणित हाड तुचा । इनहू कहँ चाखिर ईश रचा

कबहु कबहु अबहू सोइ उदय होत चित आस ।
इनसों कबहु न कुअर तुम कबहू होय उदास ॥
सोई परम पवित्र भुव आये अहो कुमार ।
ताहि न समझहु तुच्छ तुम सो सम्बन्ध विचार ॥
पालत पच्छिहु जो कुअर करि पिंजरन मुह बन्द ।
ताहु कहँ सुख देत नर जामें रहैं अनन्द ॥
सोई सुख लहि घरहु मे गावत विविध विहग ।
जतनहि सो बस होत है बन के मत्त मतग ॥
कोकिल स्वर सब जग सुखी बायस शब्द उदास ।
यह जग सों कह देत है वह या लेत निवास ॥
केवल यह भाखै मधुर वह कठोर रव नित्त ।
तासों जग चाहै सबै मधुर सरल बस चित्त ॥

हम तुव जननी को निज दासी । दासी सुत मम भूमि निवासी ॥
तिन को सब दुख कुअर छुड़ावो । दासी को सब आस पुरावो ॥
मेटहु भय कर अभय दिखाई । हरहु विपति वच मधुर सुनाई ॥
बृटिस सिंह के बदन कराला । लखि न सकत भय भीत भुआला ॥
फाटत हिय जिय थर थर कापत । तेज देखि कै दृग जुग झपत ॥
कहि न सकत मन को दुख भारी । झरत नयन जुग अविरल वारी ॥
सौदागर मेलुवा जहाजी । गोरा धरमपती जग काजी ॥
सबहि राज सम पूजन करही । सब को मुख देखतही डरही ॥
तेज चण्ड सो हरहु कुमारा । पोंछहु मम दुख को जल धारा ॥
लै भारतवासी मम सुत ढिग । बैठहु छिनक लखहु छबि भरि दृग ॥
लखहु लखहु सुत आनन्द भारी । कैसी छायो भुवन मझारी ॥
तुमहि देखि सब पुलकित गाता । गदगद गल कहि सकहि न बाता ॥
कहहि धन्य यह रैन धन्य दिन । धन धन घरी आज धन पल छिन ॥
प्रेम अश्रु जल सबहि नैन ते । जियहु कुअर सब कहहि बैन ते ॥
फिरहु कुअर जब जननी पासा । कहियो पूरहि मम मन आसा ॥

मिथ्या नहिं कछु याकी साही । राजभक्त भारत सम नाहीं ॥
लेहिं प्रात उठि के तुव नामा । करहिं चित्र तव देखि प्रनामा ॥
तुमरे सुख सों सब सुख पावैं । छल तजि सदा तुमहिं गुन गावैं ॥
यह कहि भारत नैन भरि , आदर बदन छिपाय ।
दै असीस जिय सों स्तवहि , भई अदृश्य सुहाय ॥
बजे वृटिश डङ्का सघन , गड़गड़ शब्द अपार ।
जय रानी विकटोरिया , जै जुवराज कुमार ॥

पूर्ण कोरस ।

उदयो भानु है आज या देश माहीं । रह्यो दुःख को लेसहू शेस नाहीं ॥
महाराज चक्रवर्त या भूमि आये । अरे लोग धावो बजावो वधाये ॥
छुटी तोप फहरी धुजा , गरजे गहकि निसान ।
भुवमण्डल खलभल भयो , राजकुमार प्रयान ॥

इति ।

—०:|:०—

विजय बल्लरी।

—○*○—

अहो आज आनन्द का, भारत भूमि मंझार।
सब के हिय अति हर्ष क्यों, बाढ्यो परम अपार॥
आर्य्य गनन कों का मिल्यो, जो अति प्रफुलित गात।
सबै कहत जे आजु क्यों, यह नहि जान्यो जात॥
सब के मन सन्तोष अति, सब के मन आनन्द।
सब ही प्रमुदित देखियत, ज्यों चकोर लहि चन्द॥
कहा भूमि कर उठि गयो, कै टिकस भो माफ़।
जन साधारन कों भयो, किधौ सिविल पथ साफ़॥
नाटक अरु उपदेश पुनि, समाचार के पत्र।
कारामुक्त भए कहा, जो अनन्द अति अत्र॥
कै प्रतच्छ गोबधन को, जवनन छोड़ो बानि।
जो सब आर्य्य प्रसन्न अति, मन मह मंगल मानि॥

कहा तुम्हें नहि खबर खबर जय की इत आई।
जीति देश गन्धार शत्रु सब दिए भगाई॥
सब औगुन की खानि अयूब भज्यो अस लेके।
प्रविसी सैना नगर माहि जय डंका देके॥
मेरट कारागार बसो याकूब अभागो।
और सबै बबर दल इत उत बस इत भागो॥
गो भच्छक रच्छक बनि अंगरेजन फल पायो।
तोसो करि अति क्रोध शत्रु गन मारि भगायो॥
पचम पांडव जिमि सकुनी गन्धार पछाड़्यो।
हटिश रिषभ सितमि खरज काबुली मध्यम माड़्यो॥
रूम रूस उर सूल दियो ईरान दबायो।
हटिशसिंह को अटल तेज करि प्रगट दिखायो॥
प्रथम जबै काबुलपति कछु अभिमान जनायो।
तबै हटिश हरि गरजि कोपि वापै चढ़ि धायो॥

शेर अली भजि मांद समाधि प्रवेस कियो तब ।
ठहरि सकत कछु अली रग नायक उमडै जब ॥
रूम झूम दै घूम प्रथम तेहि आस बढाई ।
धोखा देकै अन्त घुस मनि पीछ दबाई ॥
खैबर दर अरगला कठिन गिरि सरित करारे ।
अरु हृदय सह तोडि तोडि रिपु कीन्हें सारे ॥
काबुल का बल करे ब्रिटिश हरि गरजि चढै जब ।
बन गरजी केहरी भजहि झट खर खच्चर सब ॥
नीति विरुद्ध सदैव दूत बध के अघ सानै ।
रूस कुमति फसि इस आप सो आप नसाने ॥
सिंह चिन्ह की धुजा चढी बालाहिसार पर ।
जय देवी विजयिनी सोर भो काबुल घर घर ॥
पुनि परतिज्ञा चेति सत्य सों बदन न मोड्यो ।
खल दल बल दल मलि ठन सम अफगानहि छोड्यो ॥
नृप अबदुल रहमान कियो आदेश सुनाई ।
शुद्ध सत्य अरु दान वीरता उतय दिखाई ॥
तजि कुदेश निज सेन सहित सब सेनापति गन ।
भारत में फिर आइ बसे जय कहत मुदित मन ॥
ताही को उत्साह बढ्यो यह चहु दिसि भारी ।
जय जय बोलत मुदित फिरत इत उत नर नारी ॥

नहि नहि यह कारन नहीं , अहै और ही बात ।
जो भारत बासी सबै , प्रमुदित अतिहि लखात ॥
काबुल सों इन को कहा , हिये हरख को आस ।
ये तो निज धन नास सों , रन सों और उदास ॥
ये तो समुझत व्यर्थ सब , यह खोटो उतपात ।
भारत कोष विनाश सों , हिय अति ही अकुलात ॥
इति भीति दुष्काल सों , पीडित कर को सोग ।
ताहू पै धन नास को , यह बिनु काज कुयोग ॥
ऐंचो डिजरैली लिटन , वितय नीति के जाल ।

फसि भारत जरजर भयो , काबुल युद्ध अकाल ॥
सबहि भांति नृप भक्त जे , भारत वासी लोक ।
शस्त्र और मुद्रन विषय , करो तिनहु को रोक ॥
सुजस मिले अङ्गरेज कों , छोड़ रूस को रोक ।
बढै वृटिश वाणिज्य पै , हम कों केवल सोक ॥
भारत राज सम्भार जों , कछु काबुल मिलि जाइ ।
जज्ज कलक्टर होइहैं , हिन्दू नहिं लित धाइ ॥
ये तो केवल मरम हित , द्रव्य देन हित होन ।
तासों काबुल युद्ध सों , ये जिय सदा मलीन ॥
इन के जिय के हरख को , और हि कारन कोय ।
जो ये सब दुख भूलि कैं , रहे अनन्दित होय ॥

अब जानी हम बात जौन अति आनद कारी ।
जासों प्रमुदित भए सबै भारत नर नारी ॥
नृप रहमान अयूब दोऊ मिलि कलह मचाई ।
अन्त प्रबल ह्वै लिय अयूब गन्धार छुड़ाइ ॥
आदि वश नव वश दोऊ काबुल अधिकारी ।
जाहि जाति मन चहैं करै निज नृप बलधारी ॥
यामें हमरो कहा कउन उन सों मम भाता ।
आर पड़ें मिलि लड़ें भिड़ें झगड़ें सब भ्राता ॥
दृढ़ करि भारत सीम बसै अंगरेज सुखारे ।
भारत अस्तबस्त हरित करहिं सब आर्य दुखारे ॥
शत्रु, मित्र, लड़वाइ दूर रहि लखिय तमासा ।
प्रबल देखिए जाहि ताहि मिलि दीजै आसा ॥
लिबरल दल बुधि भौन शान्तिप्रिय अति उदार चित ।
पिछली चूक सुधारि अबै करिहैं भारत हित ॥
खुलिहै "लोन" न युद्ध बिना लगिहै नहिं टिक्कस ।
रहिहै प्रजा अनन्द सहित बढ़िहै मन्त्री जस ॥
यहै सोचि आनन्द भरे भारत बासी जन ।
प्रमुदित इत उत फिरहि आज रच्छित लखि निज धन ॥

मुंहदिखावनी।

राजकुमार श्रीड्यूक अफ एडिनबरा की नवबधू को।

आजु अतिहि आनंद भयो बाढ्यौ परम उछाह।
राजदुलारी सों सुनत राज कुवर को व्याह ॥ १ ॥
राज घर बसैं सुख भयो मिटे सकल दुखदुन्द।
मेरी बहू सुलच्छनी प्रगन दियो आनन्द ॥ २ ॥
द्वार बधाई तोरनै मनि गन मुकता माल।
धाई धाई फिरत हैं कहत बधाई बाल ॥ ३ ॥
विद्या लक्ष्मी भूमि अरु तुव प्यारी तरवारि।
राज कुवर। ये सौत लखि मोंही हारि निहारि ॥ ४ ॥
"देह दुलहिया को बढ़ै ज्यौं ज्यौं जोबन जोति।
त्यौं त्यौं लखि सौतैं सबै बदन मलिन दुति होति ॥ ५ ॥
मानौ मुख दिखरावनी दुलहिन करि अनुराग।
सास सदन मन ललन हू सौतिन दियो सुहाग" ॥ ६ ॥
महारानी विकटोरिया। धन धन तुमरो भाग।
लख्यौ बधू मुखचन्द तुम पूर्यो भाग सुहाग ॥ ७ ॥
रुस रुस सब के हिये भय अति ही हो जौन।
बधू। तुम्हारे व्याह सों उड्यौ फूस सो तौन ॥ ८ ॥
धन यह सबत मास पख धन तिथि धन यह वार।
धन्य घरी छिन लगन जेहि व्याहे राज कुमार ॥ ९ ॥
आए मिलि सब प्रजा गन नजर देन तुव धाम।
ठाढे समसुख देखिये नवत जुहारत नाम ॥ १० ॥
कोउ मनि मानिक मुकुत कोउ कोऊ गज को हार।
कनक रौप्य महि फूल फल लै लै धरत जुहार ॥ ११ ॥
तब हम भारत की प्रजा मिलिकै सहित उछाह।
लाए "आशा" दासिका लीजै एहि नरनाह ॥ १२ ॥
सेवा मैं एहि राखियो नवल बधू के नाथ।

यह भाग निज मानिके छनक न तजि है माथ ॥ १३ ॥
रूस मिले सों रेल के आगम गमन प्रचार ।
धन जन बल व्यवहार ने छोड़ो यह सुकुमार ॥ १४ ॥
तासों तुम्हरे कर कमल सौंपत एहि नर नाह ।
जब लो जीवै कीजियो तब लो कुंवर । निबाह ॥ १५ ॥
यह यालो सब प्रजन अति करि बहु लाड़ उमाइ ।
अति सुकुमारी लाडिलो सौंपत तोहि नर नाह ॥ १६ ॥
यह बाहर कछु नहि भई सही न गरमी सीत ।
आदर दै के राखियो करियो नित चित प्रीत ॥ १७ ॥
जो यासी जिय नहि रमै वा कछु जिय अकुलाय ।
सौंति बधू वा एहि लखै तो हम कहत उपाय ॥ १८ ॥
जब हम सब मिलि एक मत ह्वै तोहि करहि प्रनाम ।
फेरि दीजियो तब हमैं दै कछु और इनाम ॥ १९ ॥
जब लो धरनो सेस सिर जब लौं सूरज चन्द ।
तब लो जननी सह जियो राज कवर सामन्द ॥ २० ॥

इति ।

श्रीरिपनाष्टक ।

जय जय रिपन उदार जयति भारत हितकारी । जयति सत्यपथपथिक जयति जन शोक विदारी ॥ जय मुद्रा स्वाधीन करन सासम दुखनाशन । भृत्यवृत्तिपद जय पीडित जन दया प्रकाशन ॥ जय प्रजा राज्यस्थापन कारण एरन दीन भारतविपद । जय भारत वासिहि देन गव मह्‌ा न्यायपति प्रथम पद ॥ १ ॥

जय जय हिन्दू उन्नति पथ अवरोध मुक्तकर । जय करबन्धन सम्पर थार जय जयति गुणाकर ॥ जय जन मिच्छन हेत समिति मिच्छा सत्थापक । जय जय गैतासित बरन सम समत मापक ॥ जय राज्य धुरंधर धीर जय भारत शिल्पोन्नति करन । जय परम प्रजावत्सल सदा सत्य प्रिय जय श्री रिपन ॥ २ ॥

राजनीति के पण्डित तुम जानत प्रयोग खट । स्तम्भन कीनो राजयाप्य करि घटल भीति खट ॥ जनदुख मारन उच्चाटन हैविष भाव जग । विद्वेषण स्वारथी मिलित दल सह न्यायमग ॥ आकर्षण मन सब जनन को निज उदार गुण प्रगट कर । जय मोहन मन्त्र समान निज वाक्य विमोहित देश बर ॥ ३ ॥

जय भारत नव उदित रिपनचन्द्रमा मनोहर । शुक्ल कृष्ण समतेज तदपि जस अपजस विधि कर ॥ जस चन्द्रिका विकासि प्रकाश्यो उन्नति मारग । वाक्य अमृत बरसाइ किए आल्हादित नर जग ॥ ससन्यक बगविल सों लसत जनमन कुमुद प्रफुल्ल तर । सत्ताइस रैन प्रकास सम सत्ताइस शुभ कर्म कर ॥ ४ ॥

जय तीरथपति रिपन प्रजा अघ शोक विनाशक । गंग जमुन सम मिलित तदपि जान्हवि मरजादक ॥ अक्षयबट सम अचल कीर्ति यापक मन पावन । गुप्त सरस्वति प्रगट कसौटी मिस दरसावन ॥ कलिकलुष प्रजागन भीति कों सब विधि मेटन नाम रट । जय तारन तरन प्रयाग सम जस चहु दिसि भव पै प्रगट ॥ ५ ॥

जदपि बाहुबल क्लाइव जीत्यो सगरो भारत । जदपि और लाटन हू को जग नाम उचारत ॥ जदपि हेसटिंग्‌ आदि साथ धन लै गये भारी ।

जदपि लिटन दरबार कियो सजि बड़ो तयारी ॥ पै हम हिन्दुन के हीय की भक्ति न काहू संग गई। सो केवल तुमरे संग रिपन छाया सी साथिन भई ॥ ६ ॥

शिवि दधीच हरिचन्द कर्ण बलि नृपति युधिष्ठिर । जिमि हम इन के नाम प्रात उठि सुमिरत हैं चिर ॥ तिमि तुम हू काह नितहि सुमिरि हैं तुव गुन गाई । यासों बढ़ो अनुराग कहो का सकत दिखाई ॥ हम राज-भक्ति को बीज जो अब लौं उर अन्तर धर्यो । निज न्यायनीर सों सींचि कै तुम यामैं अंकुर कर्यो ॥ ७ ॥

निज सुनाम के बरन किए तुम सफल सबहि बिधि । रिप सब किए उदास दई हिय राजभक्ति सिधि ॥ महरानी को पन राख्यो निज नवल रीतिबल । परि मध न्याव तुला के नप राख्यौ सम दुहु दल ॥ सब प्रजा पुजसिर आप को रिन रहि है यह सर्व छन । तुम नाम देवसम नित जपत रहि हैं हम है श्रीरिपन ॥ ८ ॥



श्रीरिपनाष्टक।



जय जय रिपन उदार जयति भारत हितकारी। जयति सत्यपथपथिक जयति जन शोक विदारी॥ जय मुद्रा स्वाधीन करन सालस दुखनाशन। भृत्यवृत्तिप्रद जय पीड़ित जन दया प्रकाशन॥ जय प्रजा राज्यथापन करन हरन दीन भारतविपद। जय भारत वासिहि देन नव महा न्यायपति प्रथम पद॥ १॥

जय जय हिन्दू उन्नति पथ अवरोध सुलाकर। जय कारबन्धन मन्थर कार जय जयति गुणाकर॥ जय जन सिच्छन हेत समिति सिच्छा संस्थापक। जय जय सेतासेत बरन सम उन्नत मापक॥ जय राज्य धुरधर धीर जय भारत शिल्पोन्नति करन। जय परम प्रजावत्सल सदा सत्य प्रिय जय श्री रिपन॥ २॥

राजतन्त्र के पण्डित तुम जानत प्रयोग खट। स्तम्भन कीनो राजवाक्य करि भटलनीति पट॥ जनदुख मारन उच्चाटन इँविद्व भाव जग। विद्वे-षण स्वारथी मिलित दल मह न्यायमग॥ आकर्षण मन सब जनन कौं निज उदार गुण प्रगट कर। जय मोहन मन्त्र समान निज वाक्य विमोहित देश-वर॥ ३॥

जय भारत नव उदित रिपनचन्द्रमा मनोहर। शुक्ल क्षणा समतेज तदपि जस अपजस विधि कर॥ जस चन्द्रिका विकासि प्रकास्यो उन्नति-मारग। वाक्य अमृत वरसाइ किए आह्लादित नर जग॥ सतपक्ष अग-विल सो लसत जनमन कुमुद प्रफुल्ल तर। सत्ताइस रैन प्रकास सम सत्ता-इस शुभ कर्म कर॥ ४॥

जय तीरथपति रिपन प्रजा अघ शोक विनाशक। गंग जमुन सम मिलित तदपि जान्हवि मरजादक॥ अच्छयवट सम अचल कीर्ति थापक मन पावन। गुप्त सरस्वति प्रगट कमीशन मिस दरसावन॥ कलिकलुष प्रजागन भीति कौं सब बिधि मेटन नाम रट। जय तारन तरन प्रयाग सम जस चहु दिस सब पै प्रगट॥ ५॥

जदपि बाहुबल क्लाइव जीत्यो सगरो भारत। जदपि और लाटन हू को जन नाम उचारत॥ जदपि ईसटिंग आदि साथ धन लै गये भारी।

जदपि लिटन दरबार कियो सजि बडी तयारी ॥ पै हम हिन्दुन के हीय को भक्ति न काहू सग गई। सो केवल तुमरे सग रिपन छाया सी साथिन भई ॥ ६ ॥

शिवि दधीच हरिचन्द कर्ण वलि नृपति युधिष्ठिर। जिमि हम इन के नाम प्रात उठि सुमिरत हैं चिर ॥ तिमि तुम हू कहं नितिहि सुमिरिहैं तुव गुन गाई। यासों बढ़ि अनुराग कहो का सकत दिखाई ॥ हम राज भक्ति को बीज जो अब लौं उर अन्तर धर्यौ। निज न्यायनीर सों सींचि कै तुम वामें अंकुर कर्यौ ॥ ७ ॥

निज सुनाम के बरन किए तुम सफल सबहि विधि। रिपु सब किए उदास दई हिय राजभक्ति सिधि ॥ महरानी को पन राख्यो निज नवम रीतिबल। परि सब न्याय तुला मे नय राख्यो सम दुहु दल ॥ सब प्रजा पुंजसिर आप को रिन रहि है यह सर्व छन। तुम नाम देवसम नित जपत रहिहैं हम हे श्रीरिपन ॥ ८ ॥

श्रीराजकुमार सुस्वागत पत्र ।

जाके दरसन हित सदा नैना मरत पियास ।
सो सुख चंद विलोकि हैं पूरी सब मन आस ॥
नैन बिछाए आपु हित आवहु या मग होय ।
कामल पावडे से किये अति कोमल पग जोय ॥

हे हे लेखनी आज तुझे मानतो बनना उचित नहीं है। क्योंकि इस भूमि की नायक ने चिर समय पीछे अपने प्यारी की सुधि ली है ।

आज तू भी आगत पतिका बन और सोरहो शृंगार करके इस पत्र रूपी रंगशाला में ऐसी मनोहर और मदमाती गत से चल के सब देखनेवाले मो हित हो हो के मतवाले से झूमने लगें और ऐसी फूलो की झड़ीलगा जिससे महाराज कुमार के कोमल चरनों को यह पत्रिका एक फूलके पावडे सी बन जाय ।

आज क्या कारण है कि उपबनों में कोकिलने धूम सी मचारक्खी है और भ्रमरे मदमाते होकर इधर से उधर दौडे दौडे फिरते हैं, वृक्षों को ऐसा कौन सा सुख हुआ है कि मतवालों की भांति झुक झुक के भूमि चूमि रहे हैं और लता सब ऐसी क्यों प्रमुदित हैं कि कुलटा नायका की भांति लाज छोड छोड के अपने नायक से लिपट रही है और फलों ने ऐसा क्या सुख पाया है कि अपना स्थान छोड छोड के उमगे हुए पृथ्वी पर टपके पडते हैं और फूलोंने किस के आने का समाचार सुन लिया है कि फूले नहीं समाते हैं, मालिनें शृंगार करके किस के हेतु यह कोमल और अनेक रंगके फूलों की माला गूथरही हैं और यह ठंढी पौन किस के अंग को छूके आती है कि सब के मन की कली सी खिली जाती है, नदियों और सरोवरों के पानी क्यों उछल उछल के अपना आनंद प्रकाश कर रहे हैं और उन में कमल की कलिया किस की स्तुति के हेतु हाथ बांधे खडी है हंस और चकोर ऐसी कुलेल क्यों करते हैं और बरषा बिना मोर क्यों नाच रहे हैं, पक्षी लोग बडे उत्साह से किसके आने की बधैया गाते हैं और हिरन लोग अपनी बडे बडे नेत्रों से किसके दर्शन को

भाग। में तृण छोड छोड के खड़े हो रहे हैं, खिडकियों में स्त्री लोग किसके हेतु पुतली सी एकाग्र चित्त हो रही हैं और सगक्त का सब साज किसके हेतु सजा है सुना है कि हमलोगों के महाराज कुमार आज इधर आनेवाले हैं फिर क्यों न हम भारतवर्ष के उद्यान में ऐसा आनन्द सागर उमगै ॥

भारतवर्ष के निवासी लोगों को अब इससे विशेष और कौन आनन्द का दिन होगा और इससे बढ के अपने चित्तका उत्साह और अधीनता प्रगट करने का और कौन सा समय मिलैगा। कई सौ बरस से हमलोग चातिक की भांति आसा लगाए थे कि वह भी कोई दिन ईश्वर दिखावैगा जिस दिन हम अपने पालनेवाले को इन नेत्रों से देखेंगे और अपना उत्साह और प्रीति प्रगट करेंगे। धन्य उस जगदीश्वर को जिसने आज हमारे मनोर्थ पूर्ण करके हम को उस अपूर्व निधि का दर्शन कराया जिस्का दर्शन स्वप्न में भी दुर्लभ था। धन्य आज का दिन और धन्य यह घडी जिस्में हमारे मनोर्थ के वृक्ष में फल लगा और अपना राजकुंवर को हमलोगों ने अपने नेत्रों से देखा, इस समै हमलोग तन मन धन जो कुछ न्योछावर करें थोडा है और जो आनन्द करें सो बहुत नहीं है। ईश्वर करै जबतक फूलों में सुगन्धि और चन्द्रमा में प्रकाश है और पद्मिनी नायक सूर्य्य जब तक उदयाचल पर उगता है और गंगा जमना जबतक अमृतधारा बहती है तबतक इनके रूप बल तेज औ राज्य की वृद्धि होय जिसमें हमलोग इनके कर कल्पवृक्ष की छाया में सब मनोर्थ से पूर्ण होकर सुख पूर्वक निवास करैं ।

कवित्त ।

जनम लियो है महारानी कोख सागर तें जामे तो कलंक कौन लेसहु लखायो है। सुभट समूह साथ सोहत हैं तारागन कुमुदहि तू न हिए हरख बढायो है ॥ चाहि रहे चाह सौं चकोर ह्वै प्रजा के पुंज बैरी तम निकर प्रकास तें नसायो है आनद असेस देवे हेत हिंद बीच आज कुंवर प्रतापी नखतेस बनि आयो है ॥ १ ॥

कोकिल समान बोलि उठे हैं सुकवि सबै कामदार भौर से बधाई लै लै धाए हैं। लागि उठो लाय बिरहीन कैसी बैरिन कौं बौरि उठे हाकिम रसाल से सुहाए हैं। फूलि के सफल से मनोरथ सबाही के नाचि उठे मोर से प्रजा के मन भाए हैं। साजि के समाज महारानी के कुंवर आजु देवें सुख साज रितुराज बनि आए हैं ॥ २ ॥

दोहा ।

घरो आज सम्भ्रम कहा, जान परत कछु नाहि ।
बौरे से दौरे फिरत, फूले अंग न माहि ॥ १ ॥
धावत इत उत प्रेम सो, गावत हरख बढाय ।
आवत राजकुमार यह, कहत सुनाय सुनाय ॥ २ ॥
करत मनोरथ की लहर, सागर मन समुदाय ।
राजकुंवर सुखचन्द लखि, उमगि चल्यो अकुलाय ॥ ३ ॥

अथ षट् ऋतुरूपक—बसन्त ।

आनद सो बौरो प्रजा, धाये मधुप समाज ।
मन मयूर हरखित भए, राजकुंवर रितुराज ॥ ४ ॥

ग्रीष्म ।

तपत तरनि लिमि तेज अति, सोखत बैरि अपार ।
जीवन में जीवन करत, ग्रीषम राजकुमार ॥ ५ ॥

वर्षा ।

प्रजा कृषिक हरषित करत, बरसत सुख जलधार ।
उमगाव मन नदिन को, पावस राजकुमार ॥ ६ ॥

शरद ।

फूले सब जन मन कमल, नभ सम निरमल देस ।
विकसित जस की कौरवी, आयो शरद नरेस ॥ ७ ॥

हेमन्त ।

मुरझावत रिपु बनज बन, अरिन कपावत गात ।
राजकुंवर हेमन्त बनि, आवत आज लखात ॥ ८ ॥

सिशिर ।

पीरे सुख बैरी परै, पिकन बधाई दीन ।
सोरे घर सब जन भये, सिसिर कुमार नवीन ॥ ९ ॥

विनय ।

विनवत जुग प्रफुल्लित जलज, करि कलि कौक समान ।
धुजा भुजा की छांह मे, देहु अभयपद दान ॥ १ ॥



मनोमुकुलमाला ।

अर्थात्

राजराजेश्वरी आर्य्येश्वरी भारताधीश्वरी श्री १०८ विजयिनी
देवी के चरणतामरस में हरिश्चन्द्रसमर्पित
वाक्यपुष्पोहार ।

अथ इङ्गलेडी पारसीक वर्ण चिन्हिता *
राजराजेश्वरी आर्य्या. ।

Gवहु Eस अCस बल हरहु प्रजन को Pर ।
सरU जमुना गग मैं जब लौ थिर जग नीर ॥ १ ॥
J Kवल तुव दास हैं नासहु तिन की R ।
बढे सY तेज नित Tको अचल लिलार ॥ २ ॥
भारत के Aकव सब V'र सदा बलPन ।
Bसहु बिखा ते रहैं तुमरे नितहि अधीन ॥ ३ ॥
ع ر ث ح ر सबै ب ر बिना काJ ।
गलै د नहि सत्रु को तुव सनमुख गुन धाम ॥ ४ ॥
अ,ई कीरति छई रहै अحहराज ।
بर بर बरनत सबै ے कवि याते आज ॥ ५ ॥
थाب थिर करि राज गन अपने अपने ठौर ।
तासौं तुमبहि भई महरानी जग और ॥ ६ ॥

---

* जीवहु ईस अतीस बल हरहु प्रजन की पीर। सरयू जमुना गगमैं जबलौं थिर जग नीर ॥ जे केवल तुव दास हैं नासहु तिनको आर। बढ़े सवाई तेज नित टीको अचल लिलार ॥ भारत के एकत्र सब वीर सदा बलपीन। बेसहु बिखा ते रहैं तुमरै नितहि अधीन ॥ घेरे है ऐरे सबै तेरै बिना कयाम। गलै दाल नहि सत्रु को तुव सन्मुख गुनधाम ॥ अमीनई कीरति छई रहै अभो महराज। बेर बेर बरनत सबै यै कवि याते आज ॥ थापे थिर करि राजगन अपने अपने ठौर। ताथौं तुमको नहि भई महरानी जग और।

अथ अङ्कमयी *

राजराजेश्वरी स्तुति।



करि बि४ देख्यो बहुत जग बिनु २स न १ ।
तुम बिनु हे बिकटोरिये नित ६०० पथ टेक ॥ १ ॥
६३ तुम परसैन लै ८० कहत करि १००६ ।
पै बिन७ प्रताप बल सत्रु मरोरे भौंह ॥ २ ॥
सो१३ती लोग सब बिल१७त सचैन ।
अ११ती जागती पै सब ६न दिन रैन ॥ ३ ॥
लखि तुव सुख २६मि सबै कै१८त अनन्द ।
निहचै २७ को तुम मैं परम अमन्द ॥ ४ ॥
जिमि ५२ के पद तरें १४ लोक लखात ।
तिमि भुव तुव अधिकार मोहि बिस्वै २० जनात ॥ ५ ॥
६१ खल नहिं राज मैं २५बन की बाय ।
तासों गायो सुजस तुव कवि ६ पद दरसाय ॥ ६ ॥
किये १००००००००००० बल १००००००००० के तनिकहि भौंह मरोर ।
४० को नहिं अरिन की सैन सैन लखि तोर ॥ ७ ॥
तुव पद १००००००००००००००० प्रताप को करत सुकवि पि१००००००० ।
करत १०००००००० बहु १००००० करि हीन तक अति थोर ॥ ८ ॥
तुम ३१ब मैं बड़ो तातें बिरच्यो छन्द ।
तुव जस परिमल ३ लहि अंक चित हरिचन्द ॥ ९ ॥

---

*करि बिचार देख्यो बहुत जग बिनु दोस न एक। तुम बिनु हे बिकटोरिये नित नव सौ पथ टेक॥
छतीस तुम पर सैन लै असी कहत करि सोह। पै बिनसात प्रताप बल सत्रु मरोरैं भौंह॥
सोते रहते लोग सब बिलसत रहत सचैन। अग्या रहतो जागतो पै सब छन दिन रैन॥
लखि तुव सुख छबि सोंह सबै कैसो रहत अनंद। निहचै सत्ता ईस को तुम में परम अमंद॥
जिमि बावन के पद तर चौदह लोक लखात। तिमि भुव तुव अधिकार मोहि बिस्वै बीस जनात॥
इकसठ खल नहिं राज में पवौ सघन की बाय। तासों गायो सुजस तुव कवि षटपद दरसाय॥
किये खरब बल अरब के तनिकहि भौंह मरोर। चालिस को नहिं अरिन की सैन सैन लखि तोर॥
तुव पद पद्म प्रताप को करत सुकवि पिकरोर। करत कोटि बहु लाख करि हीन तक अति थोर॥
तुम इक्तीसब में बड़ो तातें बिरच्यो छंद। तुव जस परिमल तीन लहि अंक चित हरिचंद॥

भाषा सहज।



कविता।

धन्य धन्य दिन आजु को धन धन भारत भाग ।
अतिहि बढ़ायो सहज जिन दोऊ दिसि अनुराग ॥ १ ॥
आजु मान अतिही लह्यो आरज भारत देस ।
भारत को राजेसरी भए अनन्द बिसेस ॥ २ ॥
प्रथम असीरामा * भई दूजी भई न और ।
सो पूजी तुम बिजयिनी महरानी बनि ठौर ॥ ३ ॥
विजयमित्र जयविजयपति अजय क्रृष्ण भगवान ।
तारहि विजयिनी विजय नित दिन दिन सह सम्मान ॥ ४ ॥
नारी दुर्गा रूप सब † राजा क्रृष्ण समान ‡ ।
शक्ति शक्तिमत तुम दोऊ यासों अतिहि प्रधान ॥ ५ ॥
और देस के नृप सबै कहवावत महराज ।
सो मेटी जिय सत्य तुम ह्वैके राजधिराज ॥ ६ ॥
होइ भारताधीसरी आरजस्वामिनि ! आज ।
तुम हैं ¶ आरज जाति काह मिलयो धन यह राज ॥ ७ ॥

रंगचित्र ९

—लित —मुख ससि नाय ।
पौरजन सित— हि रत पठवाय ॥ १ ॥

---

* पद्मपुराण में भारत की ओतनी वाली असीरामा नामक देवी का विजयदशमी के दिन असी रूप में पूजन का विधान है जिस को इतिहास में Queen Semiremis कहते हैं।

† स्त्रियः समस्ता सकला जगत्सु, दुर्गापाठ।

‡ नराणां च नराधिप, श्री गीता।

¶ हिन्दू और अंगरेज।

(कारे) मुख ससिनाय ।
(हरे) पौर जन (सि) सित (लाल हि रत पठवाय ॥

श्रीगणराजेश्वरी स्तुति।

मरहठ छन्द में।

श्रीमत्सर्वगुणाम्बुधेर्जनमनोयाणोभिरुद्राजते
नित्यानन्दघनस्य पूर्णफलणाऽऽमारेर्जनाम् मिन्नम ।
यस्मि श्रीपरमेश्वरस्य जनताभाग्यैरवाप्तोदया
साम्राज्यैकनिकेतन विजयिनी देवी परोहृष्यते ॥ १ ॥
नानादीपनिवासिनो नृपतय स्वै रत्नमाद्वैर्नतै
रादेशाधरमानिका यदुदितां मालामिवाविभ्रति ।
यत्कीर्ति शरदिन्दुसुन्दरविर्भ्याप्नोति कृत्स्ना मही
सेय सर्वजनातिगत्वविभवा कामा गिरा गोचर ॥ २ ॥
एषा यद्यपि सार्वभौमपदवीं प्राप्ता प्रतापैर्निजै-
र्विख्यातमहीधराग्निसमैर्भूपालमेकव्रते ।
आर्यावर्तजमत्यभाग्यनिवहैर्भूयोऽधुनोदित्वरे
सौहृत्याजनयन्मुद मनसि न साऽऽर्येश्वरीति प्रथाम् ॥ ३ ॥
कर्णाकर्णिकया गते श्रुतिपथ वार्तास्मृतेऽस्मिन्वय
विन्दामो यममन्दमात्तपुलका आनन्दमु सततम् ।
अप्राप्यातितनो तनावसर तेनैव सचोदिता
श्रीमत्या परमेश्वराच्चिरतर सम्प्रार्थयाम शिवम् ॥ ४ ॥
दीनानाथजनावनोद्यतमना मानादिनानाविध-
श्रीमत्सर्वगुणावनिर्नयघना समोदयित्री बुधान् ।
जीयादुज्ज्वलकीर्तिरातिशमिनो सूर्ति परस्य शितु
पुत्रैरात्मसमै सम विजयिनी देवी सहस्र समा ॥ ५ ॥

غزل بابو ہریشچندر صاحب

رسا تخلص

مادهٔ تاریخ

ورود بادشاہ شاہان ہندوستان

سنہ ۱۸۷۶

—o—

۱ اوسکو شاہنشاہی دربار مبارک ہووے *
قیصر ہند کا دربار مبارک ہووے *
۲ بعد مدت کے ہیں دہلی کے پھرے دن یارو *
تخت طاؤس طلاکار مبارک ہووے *
۳ باغباں پھولوں سے آباد رہے صحن چمن *
بلبلو گلشن بے خار مبارک ہووے *
۴ اہل اسلام و ہنود ہیں شیخ و برہمن دونوں *
سبحہ انکو اونہیں زنار مبارک ہووے *
۵ مژدہ اہل کہ پھر آئی ہے گلستاں میں بہار *
میکشو خانۂ خمار مبارک ہووے *
۶ دوستوں کے لیئے شادی ہو عدو کو غم ہو *
خار اونکو انہیں گلزار مبارک ہووے *
۷ رمز موں نے بہت بس کریئے اب تو رسا *
یہ مبارک بڑی گفتار مبارک ہووے *

स्वर्गवासी।

कुमार श्री अनवरत वर्णन ।

अन्तर्लापिका ।

छप्पय ।

धस हित सानुस्वार देव बाणी मधि का है ? ।
अवहि भाषा माहि कहा सब भाखन चाहै ? ।
को तुव हाथो सदा ? दान तुम नितहि करत किमि ? ।
का तुव मीठे सुनत ? कहा सोहत नागिन जिमि । ।
महरानी तुम कह का कहत ? अरि सिर पैं तुम का धरत ।
का जल की सोभा ? कौन तुव सैन सदा निज भुज करत ? ॥ १ ॥
तुम समरि मैं कहा ? कौन रच्छा तुव करई ? ।
का करि कै तुव सेस सत्रु को बल परिहरई ? ।
कैसो तुव जन हियो ? ततो बाचक का भाखा ? ।
तुव अरि सिर नित कहा ? कौन जल बरसत खासा ? ।
तुव पग समर में का करत ? कौन प्रथम पाताल कहि ? ।
आमोदित कासों तुव बमन ? का ह्वै परदल परत महि ? ॥ २ ॥
तुव धन कासों है बढ़ि ? को पुनि देय जवन को ? ।
कौन सुस्वर ? तुम करत कहा अरि देखि भवन को ? ।
नर को सोभा कहा ? होत रन से कह तुव घरि ? ।
पर सों कायर कहा न ? तुम किमि चलत सैन दरि ? ।
तोहि बान चलावन को सदा कहा परी पर फौज लखि ? ।
कह बाजि उठत घन गाजि जिमि साजत तोहि रन लखि हरखि ॥ ३ ॥
कह सितार को सार ? मत्रु के किमि मन तेरे ? ।
काको मार प्रहार सीस अरि हने घनेरे ? ।
का तुम सनहि देत सदा उनतिसए ह्वो दिन ? ।
कहा कहत स्वीकार समय कछु अवसर के छिन ? ।
को महरानी को पति परम सोभित स्वर्गहि ह्वै रह्यो ? ।
अनवरत एक छत्तीस इन प्रश्नन को उत्तर कह्यो ? ॥ ४ ॥

(यथा—अन, अव, अर, अत इत्यादि क्रम से छत्तीसो प्रश्न के उत्तर केवल अनवरत इन चारही अक्षरों में से निकलते हैं)

श्रीराजकुमार शुभागमन वर्णन

—○॰○—

स्वागत स्वागत धन्य तुम भावी राजधिराज ।
भई सनाथा भूमि यह परसि चरन तुव आज ॥
"राजकुअर आओ इतै दरसाओ मुखचन्द ।
बरसाओ हम पै सुधा बाढ्यो परम अनन्द ॥
नैन बिछाए आपु हित आवहु या मग होय ।
कमल पावड़े ये किए अति कोमल पग जोय" ॥
साचहु भारत मै बढ्यो अचरज सहित अनन्द ।
निरखत पच्छिम सों उदित आजु अपूरब चन्द ॥
दुष्ट नृपति बल दल दल्यो दीना भारत भूमि ।
लहिहै आजु अनन्द अति तुव पद पङ्कज चूमि ॥
बिकसित कीरति कैरवो रिपु बिरही अति छीन ।
उडुगन सम नृप और सब लखियत तेज बिहीन ॥
स्रवत सुधा सम बचन मधु पोखत औषधिराज ।
त्रासत चोर कुमित्र खल नन्दत प्रजा समाज ॥
चित चकोर हरखित भए सेवक कुमुद अनन्द ।
मिट्यो दीनता तम सबै लखि भूपति मुखचन्द * ॥
मन मयूर हरखित भए गए दुरित दव दूरि ।
राजकुअर नव घन सरस भारत जीवन मूरि ॥
हृदय कमल प्रफुलित भए दुरे दुखद खल चोर ।
प्रगट्यो तेज जहान रवि भूपति आगम भोर ॥
नन्दनपति प्यारो सचो दड बज्र गज जान ।
मलोवर सुर सह लसत नृपसुत इन्द्र समान ॥

---

* तिमि कुचक्र ।

भये लहलहे नर सबै उलह्यो प्रजा समाज ।
बन्दी पिक गावत सुजस राजकुअर रितुराज ॥
विदलित रिपु गज सीस नित नख बल बुद्धि प्रभाव ।
जन बन पथि मम अति प्रबल हरि भावी नरराव ॥
मेलाहू सों बढि सबै सज्यो नगर को साज ।
बुढवामंगल तुच्छ कहं लखि नव मंगल आज ॥
ललित प्रकासो धुज सजे परकासी आनन्द ।
राका सी कासी पुरी लखि भूपति सुखचन्द ॥
नौबत धुनि मजीर सजि चचल धुज फहराय ।
कासी तुमहिं मिनार मिस टेरति हाथ उठाय ॥
मरवट मथिए बसन धुज मौरी तोरन लाय ।
दुलही सी कासी पुरी उलही नव बर पाय ॥
जिमि रघुबर आए अवध जिमि रजनी लहि चन्द ।
तिमि आगमन कुमार के कासी लह्यो अनन्द ॥
मधुबन तजि फिर आइ हरि ब्रज निवसे मनु आज ।
ऐसो अनुपम सुख लह्यो तुम कहं निरखि समाज ॥
घरघर में मनु सुत भयो घरघर मैं मनु व्याह ।
घरघर बाटो सम्पदा तुव आगम नरनाह ॥
जैसे आतप तपित कों छाया सुखद गुनात ।
जवनराज के अन्त तुव आगम तिमि दरसात ॥
मसजिद लखि बिसुनाथ ढिग परे हिए जो घाव ।
ता कहं मरहम सरिस यह तुव दरसन नरराव ॥
कुअर कहा हम लेहिं तोहि ठौर न कहू लखाय ।
दृग मग ह्वै हमरे हिए बैठहु प्रिय तुम आय ॥
कुअर कहा आदर करें देहिं कहा उपहार ।
तुव मुख ससि आगे लसत तृन सम सब ससार ॥

पै क्षेवल अति सुद्ध जिय करि यह देहि असीस ।
सानुज माता सहित तुम जीवो कोटि बरीस ॥
जबलौ वानी वेद को जबलौं जग को जाल ।
जबलौं नभ ससि सूर अरु तारागन को माल ॥
जबलौ गङ्गा जमुन जल जबलौ भयौ नदीस ।
जबलौं कवि कविता सुथिर जबलौ भुव अहि सीस ॥
जबलौं सुमन सुबास पर मत्त भवर सचार ।
जबलौ कामिनि नयन पर होहि रसिक बलिहार ॥
जबलौ तत्व सबै मिले गठे सबै परमानु ।
जबलौ इस्वर अस्तिता तबलौ तुम नरभानु ॥
जिओ अचल लहि राजसुख नीरुज बिना बिवाद ।
उदय अस्त लौं मेदिनी पालहु लहि सुख स्वाद ॥
पहरू कोउ न लखि परै होय अदालत बन्द ।
ऐसो निरुपद्रव करौ राज कुंवर सुखकन्द ॥
लोहा ग्रह के काम मैं कलह दम्पती माहि ।
बाद बुधनहीं मैं सदा तुव राजत रहि आहि ॥
जाति एक सब नरन को जदपि बिबिध ब्योहार ।
तुमरे राजन लखि परै नेहो सब ससार ॥
रसना इक भासा अमित कहलौ देहि असीस ।
रहौ सदा तुम छत्र से होइ हमारे सीस ॥
भ्रात मात सह सुतन जुत प्रिया सहित जुवराज ।
जिओ जिओ जुग जुग जिओ भोगौ सब सुखसाज ॥

——

अग्रजोपम स्नेह पूजास्पद प्रिय कुमार

जब आप से कुछ भी कहने की इच्छा करते हैं तो चित्त में कैसे विविध भाव उत्पन्न होते हैं। कभी भारतवर्ष के पुरावृत्त के प्रारम्भ काल से आज तक जो बड़े २ दृश्य यहां बीते हैं और जो महा युद्ध महा शोभा और महा दुर्दशा भारतवर्ष की हुई है उन के चित्र नेत्र के सामने खिंच जाते हैं, कभी हिन्दुओं की दीन दशा पर करुणा उत्पन्न होती है। कभी स्नेह कहता है कि हां यही अवसर है खूब जी खोल कर जो कुछ हृदय में बहुत काल से भाव और उद्गार संचित हैं उन को प्रकाश करो पर साथ ही राजभक्ति और आप का प्रताप कहता है कि खबरदार हद से आगे न बढ़ना जो कुछ बिनती करना बड़ी नम्रता और प्रमाण के साथ। इधर नई रोशनी के शीचित युवक कहते हैं "दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा" सुनते सुनते जी थक गया कोई मस्तिष्क की बात कहो। उधर प्राचीन लोग कहते हैं हमारे यहां तो सर्व्व देव मयोनृप लिखा ही है जितना बन सके इनका आदर करो। कितने यहां के निवासी ऐसे मूढ़ हैं कि इन बातों को अब तक जानते ही नहीं। जाने कहां से हजारों बरस से राज सुख से वंचित हैं। आजतक ऐसा शुभ संयोग आया ही न था कि आप सा सुखद स्वामी हमको नेत्र गोचर हो। इसी से तो आप के आगमन से हम लोगों को क्या आनन्द हुआ है वह कौन जान सकता है। प्रिय! हम सब स्वभाव सिद्ध राजभक्त हैं। बिचारे छोटे पद के अंगरेजों को हमारे चित्त की क्या खबर है वे अपनी ही तीन छटांक पकाने जानते हैं। अतएव तो दोनों प्रजा एक रस नहीं हो जाती, आप दूर बसे, हमारा जी कोई देखने वाला नहीं बस छुट्टी हुई। आप के आगमन के केवल स्मरण से हृदय गद्‌गद और नेत्र अश्रु पूर्ण हमी लोगों के हो जाते हैं और सहज में आप पर प्राण न्योछावर करने वाले हमी लोग हैं क्योंकि राजभक्ति भरतखंड की मिट्टी का सहज गुण और कर्त्तव्य धर्म है पर कोई कलेजा खोल कर देखने वाला नहीं। जाने दो इन पचड़ों से क्या काम। जब आप का आगमन सुना तभी से आप के यश रूपी कीर्त्तिस्तम्भ को आप के शुभागमन के स्मरणार्थ स्थापन करने की इच्छा थी पर आधि व्याधि से वह सुयोग तब न बना। यद्यपि कविता कलाप तो उसी समय समाचार पत्रों में सूचना दे कर एकत्र किया था परन्तु उन का प्रकाश न भया था सो अब जब कि हम दोनों की अवलम्ब अम्ब श्रीमती महारानी ने

भारतराजराजेश्वरी का पद ग्रहण किया और इस महत् मान से भारतवर्ष को अपनी अपार कृपा से सहज कृतकृत्य किया तो इसी शुभ मंगल अवसर पर यह पुस्तक प्रकाश करके हम भी आप के कोमल चरणों में समर्पित करते हैं कृपा पूर्वक स्वीकार कीजिये और इस को कविता नहीं वरंच अपनी प्रजा के चित्त का पूर्ण उद्गार और समुच्छ्वास समझिए। जिस तरह आप और अनेक कौतुक देखते हैं कृपा पूर्वक इस प्रजा के चित्त रूपी शातश्री ग्रीष्म से (क्योंकि वह आप के वियोग और अपनी दुर्दशा से संतप्त हो रहा है) बनी हुई सैरबीन को भी सैर कीजिये और इस परिश्रम को क्षमा कीजिए जो इस के पढ़ने में हो क्योंकि हमने तो चाहा कि थोड़ा ही लिखें और यह बहुत थोड़ा ही है पर आप को श्रम देने को बहुत है।

१ जनवरी १८७७ ई० } हरिश्चन्द्र

मानसोपायन ।

हिन्दी भाषा ।

श्रीमन्महाराजाधिराज परमप्रतापी श्रीयुत महाराजकुमार प्रिन्सआफ वेल्स शुभागमन सम्बन्धी कविता श्री बद्रीनारायण द्वारा ।

दोहा ।

राज कुमारा गमन सुनि , बाढ्यो चित मैं चाह ।
कीरति यश बरणन करत , तासु सहित उछाह ॥ १ ॥
इक मुख सौं क्यों कहि सकू , कीरति अगम अपार ।
सेस सकै नहि गाय करि , सीस हजार हजार ॥ २ ॥
तदपि यथा मति कहत हौं , श्री गुरु चरणहि ध्याय ।
जिमि पिपील जलजलधिकहु , श्रम करि चाहत थ्याय ॥ ३ ॥
महरानी विक्टोरिया , लण्डन जासु निवासु ।
रिपु चखचौंधी देत रण , युद्धि प्रभाकर जासु ॥ ४ ॥
जासु राजसी साज लखि , सुरपतिहू सरमात ।
धर्म राज से जात ठगि , देखि अदालत बात ॥ ५ ॥
पीनलकोडरु पुलिस पुनि , मैजिसट्रेटी देखि ।
निज करतब गुनि वृथा यम , सम अमलन अवरेखि ॥ ६ ॥
धूम्राकस तोपैं घडी , रेल तार सुविसेखि ।
विसुकर्मो बौरे भये , किलन पुलन अवरेखि ॥ ७ ॥
शोक व्याधि से ग्रसित भे , धन्वन्तर ऋषि राज ।
लखि महौषधालयन मह , डाकतरन के काज ॥ ८ ॥
शारद शुक गजाननहु , सेवहु सभय विसेखि ।
कालिज युनीवरसिटिन , इस्कूलन अवरेखि ॥ ९ ॥
नोट करेन्सी अमिसरी , टिकट स्टाम्प ढेर ।
पेखि चरित्र देख यह , सोचत खरे कुवेर ॥ १० ॥
अत्यागमन जहाज को , सिन्धु माह लखि नित्त ।
त्याग भवन भजिनी चहत , बरुण सशंकित चित्त ॥ ११ ॥

सोरठा ।

देवन को यह हाल , औ उपमन को को गने ।
रानी परम कृपाल , श्री कुइन विक्टोरिया ॥ १२ ॥

सवैया ।

जाकी प्रजा सदा निर्भय सोवती काटती चोर सदा मन मानो ।
बद्रो नारायन न्याय प्रबन्ध सों कोऊ न काहू सों बैर सनानो ॥
तो सम कोऊ न राज लख्यो थक्यो ढूंढि मिलै नहि दुष्ट निसानो ।
श्री टक्टोरिया या जग में चिरजीव रहो विक्टोरिया रानी ॥ १३ ॥

दोहा ।

जिन मारो सब दुष्ट जन , भली भांति दै दण्ड ।
जयति कुइन विक्टोरिया , परम प्रताप प्रचण्ड ॥ १४ ॥
न्याय चन्द्र पङ्कज यवन , नासि ग्रस्त हिम पाहि ।
भारत कुमुद विकासि निज , राज यामिनी माहि ॥ १५ ॥
जासु राज में सब प्रजा , सोवत नर्भय होय ।
जासु राज में दुष्ट जन , काटत चोर न रोय ॥ १६ ॥
जासु राज में यवन सब , बोलत सोधो बैन ।
जे नित छूरी टेवती , अब ग्रीवा उसरैन ॥ १७ ॥
जे नित लाखन जीव को , हतत हती बिन काज ।
सीधी भूपण धारिती , निसदिनपटत निवाज । १८ ॥
जे छा को सुनती नखत , लेत चेठ वार मूछ ।
ते अब नजर बचावती , जात दबाये पूछ ॥ १९ ॥
देवालय विच घुसि करत , जौन विविध उतपात ।
ते उत तनिक विलोकतहि , कोउन धक्के खात ॥ २० ॥
अग्नि मांहि जरि नाइवी , इ जइ हती निवाह ॥
तह बिधवा युवतीन के , होते पुनर विवाह ॥ २१॥
जहि भय वस भारत सुता , जन्मत तुरत मरात ।
ते निमक अब पढ़ा हित , इस्कूलन में जात ॥ २२ ॥
वाह गन वरणन कोजिये , कोरति अमित अपार ।
शवतई यकिहैं गुरु , पै नहि पैहैं पार ॥ २३ ॥

तासु पुत्र आगमन मैं, मगन मै घहु ओर।
करत सभै सत्कार बहु, दे दै आहि अघोर॥ २४॥
अब छा तो धन रह्यो नहि, तसो आशिष कोर।
है प्रसन्न स्वीकृत करो, यह बिनऊ कर जोर॥ २५॥

सवैया।

लहि नीति भले प्रजा पालिकै आछे वर्षी सदा भारत प्रानपियारे।
जीयो हजार बरीस त्यों तीस हजार, बरीस समान जे भारे॥
बद्रीनारायन होय प्रताप अखंड, महा महराज हमारे।
यो चिरजीवो सदाब रहो सुख सों विक्टोरिया के जु दुलारे॥ २६॥

श्री रामराज सुख प्रिन्स आफ वेल्स।

दोहा।

राजा महराजा महत, जे स्वाधीन प्रधान।
दर्शन अभिलाषी सकल, प्रिन्सवेल्स सम्मान॥ १॥

सोरठा।

धन्य धन्य प्रिय देश, धन्य महो धनि महिपती।
सुन्दर सुखद सदेश, रामानद हर्षित सुनत॥ २॥

चौपाई।

काशी परम प्रकाशित ऐसो। जपत प्रिन्स जस मिलि सब जैसो॥ ३।
रामराज जिमि अवध तयारी। काशी तस निज पुरी सवारी॥ ४॥
आगम महजादा सुख माचो। काशिराज ऐसो शुचि साचो॥ ५॥
रामनगर शोभा सुख रासो। राजभवन को शोभा खासी॥ ६॥
बाट घाट मन्दिर फुलवारी। रचि रचि काशीराज सवारी॥ ७॥
दीप दान शुभ देखि तयारी। उज्वित होय दिवारी हारी॥ ८॥
दर्शन हेतु सुखी नर नारी। उज्जल करि करि भवन अटारी॥ ९॥
श्री काशी काशीपति राजा। प्रिन्स वेल्स दर्शन के काजा॥ १०॥
साजे गई सुन्दर सब साजा। आगम महित जगत महराजा॥ ११॥
को बरनै शोभित सुख सारी। काशिराज निज भवन तयारी॥ १२॥

आनन्दित सब पुर नर नारी । बाल बृद्ध सुनि देखि सुखारी ॥ १३ ॥
जो सब गंगा निकट दिवालय । जग मग मन्दिर घाट दिवालय ॥ १४ ॥

दोहा।

प्रिन्स अफ वेल्स प्रताप तें, जगमग जगमग जोति ।
परत चरन जेहि नगर में, सब सपति शुभ होति ॥ १५ ॥

सोरठा।

सुर नर देत असीश, राजा महराजा सकल ।
अजर अमर जगदीश, रामानन्द सहाय शुभ ॥ १६ ॥

चौपाई।

जागी भाग जगत के नीके । पूजी सकल मनोरथ जीके ॥ १७ ॥
उपजे सुख सब के मन पाहीं । शुभ चर्चा माची जन माहीं ॥ १८ ॥
रानी विक्टोरिया प्रवीना । ताके सुत युवराज नवीना ॥ १९ ॥
श्रेष्ट सुपूत सुसील गभीरा । तेजवान विज्ञान सुधीरा ॥ २० ॥
कोमल शोभनीय सब भांती । माननीय सज्ञान सुजाती ॥ २१ ॥
सुधा बचन परमारथ साधू । रामानन्दित प्रेम अगाधू ॥ २२ ॥
जग जन के सुद मगल दाता । धन्यसराहिय पितुगुरुमाता ॥ २३ ॥
धन्यभागजन निसदिनलेखत । अष्टपहर लोचन भरि देखत ॥ २४ ॥

राग बहार ताल तिताला।

धन प्रिन्स वेल्स आये काशी धाम । सब के मन भाये पूर काम ॥ २५ ॥
मगल तिथि नौमी शुक्ल साभ । उन्निस सौ बत्तिस पूस माभ ॥ २६ ॥
अठरह छिहतर ईसवी साल । जनवरी चौथ तारीख हाल ॥ २७ ॥
मिले राज घाट सब विविध भूप । दर्शन सुन्दर शोभा अनूप ॥ २८ ॥
सब दीप दीप के बादशाह । तामध शोभित इगलडनाह ॥ २९ ॥
बाजत बाजे बहु विधि प्रकार । रामानन्दित मगलाचार ॥ ३० ॥
श्री विश्वनाथ आनन्द रूप । निजधाम देखि इगलड भूप ॥ ३१ ॥

चौपाई।

रामानन्द विनय कर जोरे । आशिष देत बहोर बहोरे ॥ ३२ ॥

रामानन्दराय

साबिक सब डिपटी इन्स्पेक्टर मिरजापुर और बांदा तथा मुनशी गदर बनारस।

सोरठा ।

जय जय जय जुवराज , सहित महित जननी जियहु ।
राज काज के काज , सह समाज राजत रहहु ॥ १ ॥
जब तें तुमरो राज , आरज भूमी में भयो ।
तब तें दरसन आज , पायो धन धन भाग मम ॥ २ ॥

दोहा ।

मुकुट ब्रिटिस को प्रथम सिर , जब धरिहो युवराज ।
सुमिरेहु हमरे प्रेम को , श्रीयुत सहित समाज ॥ ३ ॥
बदन इन्दु सुन्दर रदन , कुन्द कली की पाति ।
देखि आख साखी भरत , सील न कहो सिराति ॥ ४ ॥

सोरठा ।

तरनि बरनि नहि जात , आनन मानन जोग जो ।
पेखि प्रजा बन जात , बिकसत इत उत मन मुदित ॥ ५ ॥
भूमि चूमि कै नाथ , हाथ बाधि बिनती करीं ।
यहि समाज के साथ , पहुचत जननी ढिग कहेउ ॥ ६ ॥

दोहा ।

भाभी भारत बरस की , जस दरसति सति भाय ।
शुभ चिन्तकता चिन्तिवर , उचित कहेउ समझाय ॥ ७ ॥
अब सब की अनमन परी , पूरे पूर प्रतीत ।
राजदरस मानस सरस , बिकसे बनज बिनीत ॥ ८ ॥
राजमुकुट को अटल ह्वै , सिर धरि हौ युवराज ।
घट घट व्यापी सों रटत , रहत रावरे काज ॥ ९ ॥
तुमरी श्री जननी सती , हैं स्वामिनी हमार ।
तासु तनय नयनन निरखि , हरखत हृदय अपार ॥ १० ॥
राज हंस सम राज गुन , राजत गात गभीर ।
नीरक्षीर मिश्रित बिषय , बिलगावत धरि धीर ॥ ११ ॥
दरस पियासे आप के , सरस प्रेम अनुराग ।
बरसत नयनामृत सुखद , जागि उठे जनु भाग ॥ १२ ॥
राजसिंहासन मह जबहि , राजौगे युवराज ।

इन दीनन की दीनता , भूल्यौ मत महराज ॥ १३ ॥
बिन देखेहु इगलैंड मैं , सुत मो लेखेहु मोहि ।
इन नयनन ते निरखि कै , फिरि कस दया न होहि ॥ १४ ॥
भरतखंड इगलेंड दोउ , हैं भुज दंड प्रचंड ।
दच्छिन को दच्छिन भयो , पाइ पच्छ बरिबंड ॥ १५ ॥
आनन्द बन को बनत नहि , बरनत अति आनन्द ।
शुभागमन ते सौगुनो , बढ़ौ आज स्वच्छन्द ॥ १६ ॥

सोरठा ।

बहुत दिनन में जात इन नयनन कह निधि जु मिल ।
निरखत नहीं अघात , कासी बासी जन सकल ॥ १७ ॥

दोहा ।

फिर कबहू अवसर मिले , दरस दीजियो नाथ ।
यह बिनवत कर जोरि कै , धारि चरन पर माथ ॥ १८ ॥
धन्य धन्य वे धन्य हैं , रहत रावरे साथ ।
दयायुक्त दाता निरखि , को न पसारत हाथ ॥ १९ ॥

कालू जी हलवाई की कविता ।

दोहा ।

सकल प्रजा आसीस यह , राज कुंवर को देत ।
बढ़ै राज यस धर्म बुधि , ईश्वर भक्ति समेत ॥
बहुत काल तक जीवहू , करहु अमित सुख भोग ।
कबहु न कोउ कह रिपु रहै , मित्र होय सब लोग ॥
उचित युक्ति अरु न्याव तें , देवहु प्रजहि अनन्द ।
अति उज्जल निसि को करै , ज्यों पूनो कै चन्द ॥

पंडित लालबिहारी शुक्ल की कविता ।

कवित्त ।

जैसी सुरराज चतुरंगिनी समाज करि जीति सब राज दिकपालन सों

साज्यौ है। साज के समाज महाराज सब राजन के जीत्यौ छितिपाल छवि छोनिहू में छाज्यौ है॥ पाल्यौ प्रजा पूर्वहू परीच्छित सुधर्म कर्म वैसही पुनीत रीत शास्त्रमों विराज्यौ है। ऐसो महाराज अधिराज प्रिन्स आफ वेल्स राजन के राज युवराज आज राज्यो है॥ १॥

महि में मरजाद महासागर सम राज नित्य राखत महाराज महारानी मनभाया है। आनन सम इन्दुकांत रंजित जस बिम्ब बस उद्भव गौरखण्ड खण्ड पृथ्वी सब पाया है॥ साजित दल चार तामे राजित सुकुमार प्रिन्स- आफवेल्स राज राजकाज हू में छाया है। ऐसो धराधीर धर्म कर्म हू में वीर सर्व सपत की बीर वेद वर्ण हू में गाया है॥ २॥

श्रीनारायण कवि कृत।

दोहा।

महारानि विकटोरिया , ताको सुत समरथ्थ ।
मनु मुलुक देखन चल्यो , करि करतूत अकथ्थ ॥ १ ॥
परम प्रसंसित जासु गुन , परि गसित रणधीर ।
धन धरे मनु हस की , प्रिन्स बहादुर धीर ॥ २ ॥

सोरठा।

देखत देस अनेक , मिलत नरेसन सों चल्यो ।
धरे हीय में टेक , पुरी काशिका में अयो ॥ ३ ॥
परम प्रताप पसार , प्रजा पुञ्ज पालन करत ।
महा मोद मन धार , करि काशी आगमन सो ॥ ४ ॥

दोहा।

जगमगात चहु ओर तें , जोतिमइ भई आज ।
आवन सुनि जुवराज को , काशीपुरी दराज ॥ ५ ॥
खासी कासी गुनभरी , रासी सुख की होय ।
अभिलासी भासी सुनत , प्रिंस आगमन जोय ॥ ६ ॥
निपुन नीति निरखत नयो , नरपति को ले संग ।
नैन निवाहत में दियो , कर काशी ॥ रंग ॥ ७ ॥

कवित्त ।

लाट रजिडट जरनेल करनेल कप्तान सुबेदार सूबा सब साहब सोहायो है। तुपक तमचे तोप आदि तरवार चार कैयक सवार मेगजीन मन भायो है॥ छायो है सुवेस देस देस के नरायन जू अजब नरेस सोभा सान सरसायो है। प्रिंस जुवराज रणरंगी सेन जंगी लिये भंगी सो फिरंगी संग काशी बीच आयो है॥ ८॥

कुण्डलिया ।

छायो है कीरति कलित होनहार येसाह। मिन्ना बहादुर बीरवर नर नाहन को नाह॥ नरनाहन को नाह देस अवगाहन हारे। मारे प्रभु अनेक मित्र मन मान सवारे॥ नारायन सजि साज गाज काशी मह आयो। सुंदर सुप्रि सुकुमार मार से अति छबि छायो॥ ९॥

चतुर्वेद्युपाह्व श्रीलोकनाथ शर्म्मा॥
॥ अथ युवराज शुभागमन वर्णन॥

दोहा ।

जयति जयति अति शांति बिमल , श्रीमति सुत युवराज ।
प्रजा बिपति कापति सदै , नरपति पति सिरताज ॥ १ ॥
तव शुभ आगमनै सुनत , गमन अशुभ पुर पुंज ।
भारत खंड अखंड तें , ह्वै रहै भारत कुंज ॥ २ ॥
सकल प्रजा गन सुमन तें , सुमन वृष्टि भरलाय ।
करत गान चौगान बिच , अति अरमान जगाय ॥ ३ ॥
अस बुधि मन्त हिमन्त को , दियो बसन्त बनाय ।
सन्तत सन्त सबै सुदित , खग मृग जन्तु जनाय ॥ ४ ॥
कुंज पुंज पुर पुर सकल , मंजु प्रजा गन कीन ।
कंज खंज अलि गज सम , नर नारी बन भीन ॥ ५ ॥
देवारी वारी सुकवि , सुघर सवारी लोग ।
वारो तन मन धन सबै , नर नारी जेहि योग ॥ ६ ॥
यह कलि काल कराल बिच , लखि अधियार अपार ।

दीपावलि भलि भांत सजि , कुंवर कीन्ह उजियार ॥ ७ ॥
जब प्रभु भारतखंड के , होहु अखंड नरेश ।
तबहु कृपा ऐसिहि रखेहु , गुनि शुभ चिन्तक देश ॥ ८ ॥
शुभचिन्तकता मित्रता , सहित नृपति जे होंहि ।
तासों गुरुता सुहितता , कीजो निज पद जोहि ॥ ९ ॥
परम भक्ति अनुरक्ति युत , प्रजा अशक्ति सुदीन ।
नाथ कृपाऽऽकर सपाकार , दया मया रस भीन ॥ १० ॥

———०:०———

मुनशी कामताप्रसाद कृत ।

जाहिर जहान ऐसी कोऊ न सुन्योरी जौन नाम इङ्गलण्ड जग विदित करायो है। चारो ओर समुद्र सुखाई सी बनी है तैसी तट वप्र अक्षय सु दुर्ग छवि छायो है॥ रच्छा धारै लाखन जहाज जासु सजि बजि शत्रु को विनाश करि भय कों नसायो है। तेज को प्रताप लखि सूरहु ने जा थल पै होइ मन्द दीधित सुरथ कों थमायो है ॥ १ ॥

सवैया ।

बालक सोच को त्यागि भई तिन की जननी वस जन्म निदानी ।
पालन पोषन तें परजान की जान परी सोइ मातु समानी ॥
दुःख कलेस को शब्द बच्यो इक पास्तव में कछु नाहि लखानी ।
भाखैं कहा कछु नाहि बनै जग ऐसी हमारी अहै महरानी ॥ २ ॥

कवित्त ।

दुष्ट जन दापी तिमि कीरति सुयश थापी करत प्रतापी अभिलाख मन भरि रह्यौ । पाइ कै रजायसु त्यों मातु महरानीहू तें भारत बिलोकन की इच्छा दृढ करि रह्यौ ॥ बडेबडे पद युत लार्ड और ड्यूकन लै दल की तयारी करि साज बाज धरि रह्यौ । ऊंच नीच लघु बड सब ही सभा जन तें धन्य धन ऐसो चहुदिसि तें उचरि रह्यौ ॥ ३ ॥

दोहा ।

धन्य धाम धन भूमि सोइ , धन नगरी धन देस ।
बिचरि जहां सुख देइहैं , जनु रोहिणि नखतेस ॥ ४ ॥

कवित्त ।

होइ रही सुंदर सफाई देस देसन में अति ही आनन्द प्रीति प्रजा मन पाई है । गूंजि रही स्वागत सुधुनि जाइ नभहू लौं नगर नगर मांझ बाजति बधाई है ॥ फूले फूले डोले फिरैं इत उत राजा राउ आनद की सरिता चहू घा उमडाई है । बिजै की निसानी महारानी के कुंवर जू की भारत में देखो अब हाल ही अवाई है ॥ ५ ॥

गृह न पुतावो तिमि महल सजाओ चारु स्वच्छ करवावो अरु बीथिन सिंगारोरी । तोरन टंगावो कुंभ मंगल धरावो तैसे केतु फहरावो दीप चौ सुख उजारोरी ॥ दूब दधि अच्छत औ रोचना सुधादिक लै द्रव्य सब थारन में सुन्दर सवारोरी । प्रान रखवारे प्यारे भारे महराज हेत तन मन धन सब वार फेर डारोरी ॥ ६ ॥

छप्पै ।

मिटै दिवाकर भले जो सब ब्रह्मण्ड प्रकासक ।
घटै निसाकर कला सबै जो जग दुख नासक ॥
जुग जुग तें चलि भये यहै जग नियम उलट्टैं ।
गंग जमुनहू सोखि अमृत जल यहै बिघट्टैं ॥
तिमि टूटिपरैं तारा नखत भूमि बढ़ै सागर घटै ।
पै राजरीति मरजाद सों इनको दृढ़पगनहिंहटै ॥ ७ ॥
सन्तति सम्पति सुखी भये पाले नित सोई ।
प्रीति प्रजा की अधिक सदा राजा में होई ॥
ईत भीत आदिक रुज कबहू नहीं सतावै ।
ह्वै सुतन्त्र निरआलस सब उन्नति जिय लावै ॥
तजिस्वै तें अपयससयसबै राजकरी दिगदिनअचर ।
कमलाकर इम मागत यहै सदा ईस सों जोरि कर ॥ ८ ॥

राजस्तोत्र छप्पय छन्द ।

बुध जन कर मध्यस्थ भाव तज पच्छपात छिन ।
प्रतिबिंब वो सत्य रूप मन सत्य गये बिन ॥

कवियन गूथित ग्रन्थ बहुत हो दृग गत आये ।
पराचीन परिमाण नृपन के यश जेह गाये ॥
तुम कविजनवचन बिलासको रसिक आसनहिउरधरो ।
लख चरित सबमें सुभ असुभ नीति रूपनिरणय करो ॥ १ ॥
निज कुल धन निज काज धर्म निज निकट बर्तिजन ।
किन तिन को नहि पक्ष कियो सुभनीति छाडमन ॥
किन परहित परदृष्टि करी निज अर्थ गौण कर ।
किन लीनो संकोच राज कर सों अघाय कर ॥
इम जो देखा सो आप का धन व्यय का लेखा करै ।
नहि तनक प्रजा को ओर भी हान लाभ देखा करै ॥ २ ॥
औरन को यह कही कछू अब वर्तमान की ।
श्रीमतमहारानी प्रसिद्ध यश गुण निधान की ॥
विक्टरियाप्रशंस नाम सुभ असुभ नसानी ।
योरूपी इंगलेंड देश लंदन रजधानी ॥
जो सतति कर बहु काल सों सतापित आसितहुतो ।
सोभारत हू जिस के भई इग शसि सों अमृतवती ॥ ३ ॥
जिस को इष्ट तुला के हैं दोऊ समपक्षे ।
निज उच्च में तदुलाभ पासग नहि भाखे ॥
अपनो सो दुख करै हिये लखि पीर पराई ।
सुनै बिन सों अधिक नेह धर दीन दुहाई ॥
मनु प्रजा वात्सल्य अग को सघसुघ इक मूरत ठई ।
धरमिनदया लताहित निमितसोचतहै नितविध नई ॥ ४ ॥
भारत की सब प्रजा अविद्या रोग ग्रसित लख ।
वैद्यराज समताइ निमित उपचार कियो लख ॥
इह रूप उपचार दृष्टि आवत प्रति अहनिस ।
तोभी केवल अरुज भयो नहि यह अभाग तिस ॥
नितलखइचति जुगराज को बर्ततहै आनदुजिसो ।
सो देखहु हित रैयत तनी परिफुल्लितमनहैतिसो ॥ ५ ॥
क्यों न होय दोनों पर सम सतुष्ट सुभावी ।
दोनों का हित जान परस्पर अविना भावी ॥

मोहन मंत्र समान प्रजामन मोहन काजा ॥
लोकोत्तम गुण राश तोष प्रिय यह युवराजा ।
हैतक्षणप्रताप सुतरुणयवशरुणारुणप्रातन कला ॥
सब रिपुगणकर भरहगनपर देखवक्रभुवजलजला ॥ ६ ॥
भारत भुवतिय भाग जगो इस निर्यं आयो ।
प्राणनाथ वर इंगलैण्ड सों संगम पायो ॥
यह दंपति संयोग सखी सुरबानी लख कर ।
सो सो सगुन मनावत मंगलरूप विघन हर ॥
इस कामनिके मन उमगकोलाहलहैसबरीत यह ।
इम सो पावै निज योषना मानदान सदैव चाह ॥ ७ ॥
राजकुमर श्रीमान मैंसपफवेल्स सदा ही ।
रहो जदपि इङ्गलैंड बसो भारत मन माही ॥
शुभ विचार चित रहो रहो सज्जन चितवल्लभ ।
दुरजन जन को छिद्र हेरना हो अति दुर्लभ ॥
तुमसुनतआर शुभआगमन रोमांचित जनहिदके ।
हैं रकराय सब मधुपगण लुब्धित पद अरबिंद के ॥ ८ ॥
घाति कर्म क्षयकार परम भट्टारक जिनवर ।
वीतराग सर्वज्ञ वीर अंतिम तिर्थं कर ॥
करो राज निर्विघ्न हरो रिपु गण दुख कारा ।
बर्द्धमान ऐश्वर्य भोग संपति परिवारा ॥
कहे सतलाल निरपक्षहो सत्यरूप अनुभव किया ।
सुनसतपुरुषनके चरितको पावत हैं आनन्दजिया ॥ ९ ॥

श्री राज कुमार चन्द्रोदय ।

व्रजचन्द कृत ।

सोरठा ।

राज कुमर सुखचन्द , जगमगात काशी पुरी ।
पुलकित लहि सुदधन्द , चकित चकोर सुजान जन ॥ १ ॥
चिरजीव सुकुमार , रंजित नित नव राजश्री ।

जीवा वेल्स अधार , बह सुखभवसुकविनसघन ॥ २ ॥
तुग तरंग उमंग , निरखि बढ्यो अतिसुदसमुद ।
चहकित तट बहुरंग , देत रत्न दीपावली ॥ ३ ॥

पूर्ण प्रकाश ।

सोरठा ।

षोरह कला निधान , श्रीकाशी राका शशी ।
राज कवर सुख जान , जान शिरोमणि राव कोउ ॥ १ ॥
पाये मान प्रजान , अमृता[१] कला प्रभाव तैं ।
श्री काशी पति मान , राख्यो कला सु मानदा[२] ॥ २ ॥
तुष्ट भये सब दासु , तुष्टि[३] कला अवलोकि कै ।
भई पुष्टता आसु , पुष्टिकला[४] जिन जिन लखी ॥ ३ ॥
बैरिहु चित अति प्रीति , प्रीतिकला[५] निरखत नयन ।
मैमन हिय रस रीति , जगमगाति लखि रतिकला[६] ॥ ४ ॥
लजे सर्व छवि धाम , चितकत चित लज्जा[७] कला ।
छाई श्री सब ठाम , उमत सुहावनि श्रीकला[८] ॥ ५ ॥
तृप्ति पितर लखि नैन , स्वधाकला[९] सुमरीचिका ।
विश्रामी सुद दैन , राति[१०] कला कर विमल वर ॥ ६ ॥
हरनि सकल परिताप , निरखहु जोतिस्नाकला[११] ।
मिटत सदा तम ताप , हसवती[१२] कर परसतै ॥ ७ ॥
गे कविता हरियाय , पाइ कछुक छायाकला[१३] ।
पूरन सुद दरसाय , कला पूरनी[१४] सो सदा ॥ ८ ॥
सहजहि सुपद सुभाय , नामा अभिरामा[१५] कला ।
निरखहु अति चितचाय , आजु हुद निर्भर निकर ॥ ९ ॥

१६
सब कहँ जीवन दात , अमा कला परिमान गत ।
जानहु अति अवदात , यह चन्द्रोदय उदित नित ॥ १० ॥

श्रीहरिश्चन्द्र कृत ।

आओ आओ हे जुवराज ।

धन धन भाग हमारे जागे पूरे सब मन काज ॥
कहँ हम कहँ तुम कहँ यह धन दिन कहँ यह सुभ संयोग ।
कहँ हत भाग भूमि भारत की कहँ तुम से नृप लोग ॥
बहुत दिनन की सूखी दाढ़ी दीना भारत भूमि ।
लहि है अमृत वृष्टि सी आनन्द तुव पद पंकज चूमि ॥
जेहि दलमल्यो प्रबल दल लै कै बहु विधि जवन नरेस ।
नास्यो धरम करम सबहिन के मारि उजार्‌यो देस ॥
पृथीराज के मरे लख्यो नहिं सो सुख कबहूँ नैन ।
तरसत प्रजा सुनन को नित ही निज स्वामी के बैन ।
जदपि जवन गन राज कियो इतही बसि कै सह साज ॥
पै तिन को निज करि नहिं जान्यो कबहूँ हिन्दु समाज ।
अकबर करि कै बुद्धिमता कछु सो मेट्यो सन्देह ॥
सोउ दारासिकोह लौं निबह्यो औरंग डारी खेह ।
औरहु औरंगजेब दियो दुख सब विधि धरम नसाय ॥
निज कुल की मरजाद मान बल बुधिहू साथ घटाय ।
ता दिन सों दुरलभ राजा सुख इन हि इकन्त निवास ॥
राज भक्ति उत्साहादिक को इन कहँ नहि अभ्यास ।
जदपि राज तुव कुल को इत बहु दिन सों बरसत छेम ॥
तदपि राज दरसन बिनु नहिं नृप प्रजा माहिं कछु प्रेम ।
सो अभाव अब तुव आवन सों मिट्यो आज महराज ।
पूर्‌यो प्रेम देस देसन में प्रमुदित प्रजा समाज ॥
आवहु प्रिय नैनन मग बैठो हिय में लेहु छिपाय ।
जाहु न फिरि तजि भारत कौं तुम हम सों नेह लगाय ॥

मानसोपायन ।

पंजाबी भाषा ।

दोहा ।

चारे पासे सुणीदा , अज्ज मंगलाचार ।
सब नाले दिल खिड़पए , खिड़ दीजिवे बहार ॥ १ ॥
लाल तुसी दे पूरिया , सारा हिन्दुस्तान ।
दूणी छबि हो निकली , जिऊ सुड हो आजु थान ॥ २ ॥
होया चानण जगत विच , नाले वडा अनंद ।
जिउ चमका असमान विच , सो सूरज ते चंद ॥ ३ ॥
सरवर दे जल निर्म्मले , खडीया सब गुलजार ।
बोलण नाल उमंगदे , पे छीवन्ही डार ॥ ४ ॥
होया आण अमाणचक , सब नानू उतसाह ।
वगिया दरिया खुशीदा , जिसदा पवैन थाह ॥ ५ ॥
कोडो दे घर आप जो , आवे चलन रेण ।
क्यों ना मन्ने आपणी , धन्न भाग धन नैण ॥ ६ ॥
जिहर नजर कर आइया , जिसदा शाहनशाह ।
परजा भारत खंड दी , किऊ न करे उतसाह ॥ ७ ॥
नाल सफाइ देस जी , केहे सभ्भी देस ।
गम उड गया जहा न थी , कर पें छीदा भेस ॥ ८ ॥
धन्न लच्छमी रूप है , उह मलिका जग मात ।
जग सबाइया खावदा , जिस दी दित्ती दात । ९ ॥
जिस देकु खौजर मियां , केहो चंगी रुत्तु ।
होया टिक्का जगत विच , इडु मल कादा पुत्तु ॥ १० ॥
नैणादा फल मिलूगा , साडे वडे नसीब ।
दरसन देण जु आइया , साडु नाथ गरीब ॥ ११ ॥
सारी परजा चाहुदी , एहो कर इक चित्त ।

किरपा चाहे तेकरी, दरसन देवी नित्त ॥ १२ ॥
राजे हिंदुस्तान दे, छोटे बडे निहाल ।
चले अग्गों लैण नू, लशकर फौजा नाल ॥ १३ ॥
पहिला सजधज चलिया, महराजा कशमीर ।
बडा सिंह जो सूरमा, आखीदा रणबीर ॥ १४ ॥
धन्न महिंदर सिंह जी, पटियाला महराज ।
शहजादे दे मिलण नू, चले कर के साज ॥ १५ ॥
धन्न जगत विच जाणिये, उपकारी दा जन्म ।
इक शहजादे दे सबब, होए किन्ने कम्म ॥ १६ ॥
असपतालहन बण गए, कई नवेंहुण होर ।
जित्थे होसी दुखीदा, दारू भावें चोर ॥ १७ ॥
कई बणे इस्कूलहन, शहजादे इकबाल ।
जित्थे होसी इलमदी, चरचा बडी कमाल ॥ १८ ॥
छापे खाणे बण गए, कई नवेंहुण, होर ।
वेखो दूणा हो गया, अखबारादा जोर ॥ १९ ॥
मुहताजादे वास्ते, बहुते बणे मकान ।
जित्थे होविगी सदा, रोटी दी गुजरान ॥ २० ॥
कई मदरसे हुनर दे, बण दे रगारग ।
कुडीयां सिख्या वास्ते, हुंदा किते उमग ॥ २१ ॥
शहजादे दा आवणा, होया सुखादा मूल ।
वरतो ठंढ सुमुल्क विच, मिट गए सभे सूल ॥ २२ ॥

कबित्त ।

होए धन्न भाग मिल गावनी सुहाग अज्ज सुख पए जाग सुण शाहजादे आवणा । हुंदीया तियारी किते दीप माला दीया भारी माल्लीया नेवागानू यो खूब है सजावणा ॥ गावदीयां गोरीया पजाब दीया घर घर वेखो केहा देस सब्बो होया है सुहावणा । राजे कशमीर जालियावणा हैं अग्गों धसा धन्नता जरूर फलु अखिया दा पावणा ॥ २३ ॥

धन्न महारानी विकटोरिया सुलखणी है लच्छमी दा रूप जिनू वड्डे लोग गावदे । जिसदी दुहाई अज्ज फिरदी है जग्ग सारे राजे रक दोवें जोनू इको जेहे भावदे ॥ प्रेस आफ वेलस ढोदा आखीदाए टिक्का पुत्त एहो

पातशाह हिन्दवाली छोदे शावदे। राजे देसा देसा दे ला स्वावदे नी भग्गों छोनू वड्डीया बहारा नाल सैलानी करावदे॥ २४॥

एसते मिहर अज्ज आय करतार दीयें मोला कला सपूरन सभ्भे गुण ला एदा। सैउदा धरम सदा प्यार है इसभ नाल नदन दी सीणीयादा माण पूरे हागदा। प्रिन्स आफ वेल्स विच इको गुण लख्ख जेहा आपणी परेमी यांदे प्रेम नू पछाणदा॥ आऐ वडा निका एदा तुरे जग सिका कीवे मलका दा टिका जग सौजा चिर माणदा॥ २५॥

कवित्त। प्रेम विच भिज्ञे चक्के फौजां नू भजा के राजे वज्जदे नी वाजे भग्गो केहे मन भावदे। चलदीया तोपा भारी कारन सलामी खुश भातो भात दीया सभ्भे नजरां चढावदे। होया उतसाह साडा एडो पातशाह भव प्रिन्स आफ वेल्स अज्ज सेलनू जो आवदे। पावदे परम प्रेम परजा दे लोग सारे दिलदे उमग नाल नित गुण गावदे॥ २६॥

अडिल्ल।

निर्घिर रहिसी धरति जलवगन उदासे।
इन असमानी चंद सुरज बीनासे॥
आखे सुकेव निहग प्रेमि मतवाला।
हो सचा सतगुर तेरा रखवाला॥ २७॥

दोहा।

उन्नीसौ बत्ती, वर्ष्या, गिरकत्ते दा माह।
प्रिन्स वेल्स दी इन्दुरची, कविता काव उतसाह॥ २८॥
मित्र असाडा आखियो, कवियांदा सरदार।
आखे, श्री हरिचन्द दे, इह कुन कीती कार॥ २९॥

इति श्री महारानी विक्टोरिया राजकुमार श्रीयुक्त प्रिन्स आफ वेल्स समागमोत्साह वर्णन पंडित संतोषसिंहशर्मारचित समाप्तम्।

———०:०———

किरपा चाडे तेकरी , दरसन देवी नित्त ॥ १२ ॥
राजे हिंदुस्तान दे , होही बडे निहाल ।
चले अग्गों लैण नू , लशकर फौजा नाल ॥ १३ ॥
पहिला सजधज चलिया , महराजा कशमीर ।
वडा सिंह जो सूरमा , आखीदा रणधीर ॥ १४ ॥
धन्न महिंदर सिंह जी , पटियाला महराज ।
शहजादे दे मिलण नू , चल्ले कर के साज ॥ १५ ॥
धन्न जगत विच जाणिये , उपकारी दा जन्म ।
इक शहजादे दे सबब , होए किन्ने कम्म ॥ १६ ॥
असपतालइन बण गए , कई नवेंकुण होर ।
जित्थे होसी दुखीदा , दारू भावें चोर ॥ १७ ॥
कई बणे इस्कूलइन , शहजादे इकबाल ।
जित्थे होसी इलमदी , चरचा बडी कमाल ॥ १८ ॥
छापे खाणे बण गए , कई नवेंकुण होर ।
वेखो दूणा हो गया , अखबारादा जोर ॥ १९ ॥
सुहताजादे वास्ते , बहुते बणे मकान ।
जित्थे होवेगी सदा , रोटी दी गुजरान ॥ २० ॥
कइ मदरसे हुनर दे , बण दे रंगारंग ।
कुडीयां धियां वास्ते , हुदा किते कमग ॥ २१ ॥
शहजादे दा आवणा , होया सुखादा मूल ।
वरतो टट्ठ सुल्क विच , मिट गए सभे सूल ॥ २२ ॥

कवित्त ।

होए धन्न भाग मिल गावनी सुहाग अज्ज सुत्त पए जाग सुण शाहजादे आवणा । हुदीया तियारी किते होए मात्ता दीया भारी गालीयां नेवागानू भी खुब ऐ सजावणा ॥ गावदीयां गोरीया पंजाब दीया घर घर वेखो केहा देस सब्बो होया है सुहावणा । राजे कशमीर जालियावणा ऐ अग्गों धसा चशता लफर फलु चलिया दा पावणा ॥ २३ ॥

धन महारानी विकटोरिया सुलक्खणी है लच्छमी दा रूप जिनु वड्डे भाग गावंदे । जिसदी दुहाई अज्ज फिरदी है जग्ग सारे राजे रस्स दीये ओहू दया जेहे भांवदे ।। प्रेम भाफ वैन्न ओदा आखीदाए टिका पुत्त एहो

पातशाह हिन्दवाली डोदे ग्रांवदे। राजे देसा देसा दे जा ख्यावदे नी भग्गी ओनु वड्डीयां वहारा नाम सैलांनी करावदे ॥ २४ ॥

एसते मिहर अज्ज भाय करतार दोयें सोला कन्ना सपूरन सभ्भे गुण जा पदा। सेउदा धरम सदा प्यार है इसम नाम नदा दी सोणीयांदा माथ पूरे हापदा। प्रिन्स आफ वेलस विच इको गुण लखुव जेहा आपणी परेसी यांदे प्रेम नू पछाणदा॥ भारी वडा निक्का एदा तुरे जग सिफा कीवे गमधा दा टिक्का जग मौला चिर माणदा॥ २५ ॥

कवित्त। प्रेम विच भिजे अक्ले फौजा नू भजा के राजे वल्लदे नो याजे भग्गों केहे मन भांवदे। चल्दीया तोपा भारी करन सलामी खुश भांती भांत दीया सभ्भे नजरां चढावदे। होया उतसाह साडा एही पातशाह धन प्रिन्स आफ वेल्स अज्ज सैलनु जो आवदे। पावदे परम प्रेम परजा दे लोग सारे दिलदे उमग नाम नित गुण गावदे॥ २६ ॥

अड़िल्ल ।

निर्गुघिर रहिसो धरति जलथगन उदाले ।
हन असमानो चद सुरज दीनाले ॥
आखे सुकव निहग प्रेमि सतवाला ।
हो सदा सतगुर तेरा रखवाला ॥ २७ ॥

दोहा ।

छत्तीसो सत्तो, वरहा, गिरकत्ते दा माह ।
प्रिम वेल्स दी इहरची, कविता कव उतसाह ॥ २८ ॥
मिव असाडा जाणियो, कवियांदा सरदार ।
आखे श्री हरिचन्द दे, इह कुझ कीती कार ॥ २९ ॥

इति श्री महारानी विकटोरिया राजकुमार श्रीयुक्त प्रिन्स आफ वेल्स समागमोत्साह वर्णन पण्डित सतोषसिंहशर्म्मारचित समाप्तम्।

मानसोपायन ।

गुजराती भाषा ।

गरबो हरिश्चन्द्र कृत ।

आवो आवो भारत राज , भारत जोवाने ।
दई दरसन दुख एनू , जगत जनमनो खोवाने ॥
ज्यम चन्द्रोदय जोईं , चकोर जिय राचे रे ।
ज्यम नव घन आता लखी मोर वन नाचे रे ॥
तेहू भारत वासी जनो , तवागम चाहे जी ।
लखि मुख ससि राज कुमार , मुदित मन माहे जी ।
आवोआवोप्याराराजकुमार , नई दऊ जावा ने ।
वाला भारत मां सुख वसो , सनेह वधावा ने ॥
नई भियू प्रानप्रिय आजे , अरज करू बोलीने ।
टेक आज लखाडी तमने , हिरदो खोली ने ॥
म्हारा भारत वासी अनाथ , नाथ बने नाथे जी ।
तेथी कोवर बिराजो अहल , अल्लारे साथे जी ॥
ज्यारे जवन जलधि जले , पृथीराज रवि नाख्यो रे ।
आजे त्यार थकी नहीं भारत , तेज प्रकाश्यो रे ॥
ते तुव पद नख ससि किरिणे , वाणी मायो जी ।
फरी फल्या भाग्य भारत ना , आनन्द छायो जी ॥
वाला दीठ्यो नव मुखचन्द , कामणगारा नैणावे ।
धारी श्रवण पद्मा श्रवणे , तव अमृत वैणा वे ॥
आजे उमग्यो आनन्द रस सुख , चारे पासे छायो छे ।
तेथी तव जय परम पवित्र , कवियें गायो छे ॥

मानसोपायन ।

महाराष्ट्री कविता ।

पण्डित दामोदर शास्त्री कृत केका छन्द ।

आशिर्वाद ।

असो प्रभुवरा भरा तव यशा यशा सर्वदा ।
असो न कधिही अधी तव प्रजा निजा सर्वदा ॥
असो न अरिही करी तव नया जया पाहुनी ।
असो न खल दुर्गलग्रहि महीस्थले राहुनी ॥ १ ॥

प्रार्थना (श्लोक)

आनन्द या दिवस धन्य या सर्व आम्हा जनासी ।
स्वामिनभार्ये उदित जहाला सर्व दु:खा विनाशी ॥
विद्या सपद दिधलि, हरिसे आणि मागाधनासी ।
होती हेची म्हणुनि सतत दु:ख याको मनासी ॥ २ ॥

देशदशा (श्लोक)

दैन्ये भारतवर्ष हे विभुवरा प्राणात्यजीतेपहा ।
घेडनी गिरिशीतपर्वतमहा सिधु बुडे की अहा ॥
आले सर्वकडून पाणिह्मणुनी आलेनिकोपाकृती ।
पाहीराजपती धरीहतिप्रतादासी तुम्ही सत्कृती ॥ ३ ॥

घनाक्षरी ।

घेडनी गिरी हीम पर्वता । असहुनी महा दैन्यकर्वता ॥
बुडते महा'हिदि सागरी । यासि तूतरी शीघ्र उद्धरी ॥ ४ ॥

ओवी ।

एशिया खड महान् करि । गुडा हिदुस्थान वरी ॥
पजाब गडस्थले साजरी । पुष्कर सिद्दम पैल्याचे ॥ ५ ॥

आर्या ।

नमउनिगुडाटडादैवमूकहावदेतुनाहस्ती ।
घस्तीनेअवलोकुनिमाभिदगाहीधरीमनाहस्ती ॥ ६ ॥

साक्षी ।

पुष्करमाभिछेदुनिकेलेमजलाहीपकल्प ।
भूपाधिपाकरिमजहीपाभाँलोक्षीमहुम॰प ॥ ७ ॥

मानसोपायनम् ।

श्रीपण्डितवरबापूदेवशास्त्री ।

भूगोलपृष्ठेऽङ्गलदेशकेन्द्रे वृत्तात् कृतात् खाङ्कलवैर्दले ये ।
गोलस्य तत्रोर्ध्वदले समग्र प्राय स्थलाशोऽस्त्यधरेजलांश ॥ १ ॥
एव समस्तस्थलभागकेन्द्रेऽधिष्ठाय देवी जयिनी नयेन ।
धर्मेण चान्यानपि भारतादीन् देशानवन्ती नितरा विभाति ॥ २ ॥
यो भूमिगोलाश्रयवानशेषास्तत्केन्द्रनिभान् कृतवान् परेश ।
सोऽर कुपृष्ठेऽप्यखिलस्थलानि करोतु तत्केन्द्रपतेर्वशानि ॥ ३ ॥
यद्भारतेऽत्राङ्गलदेशराजो नाद्यापि कोपि स्वपद दधान ।
तदद्य तस्यागसमागमोऽय जानेऽस्मदीयाभ्युदयाय नूनम् ॥ ४ ॥
सोऽय जयिन्या शमशर्मवत्या ज्येष्ठस्तनूजो युवराजवर्य ।
सार्धं जनन्यानुभवन् स्वराज्यारोग्यादिसौख्य सुचिराय जीयात् ॥ ५ ॥
इति भारतवर्षीयजनकल्याणलोलुप ।
अह विश्वेश्वर काश्या बापूदेवाभिधोऽर्थये ॥ ६ ॥

पण्डित सखाराम भट्ट ।

श्रीमद्राजाधिराजस्समधरणितले राजते राजसङ्घैर्नानाधर्म्मप्रचारो विबुधगण-
निभे राम एव द्वितीय । पारावारान्तपृथ्वीतलगतवसुधापालकाना किरीटैर्नित्य
देदीप्यमान प्रपदगतनखो रम्यसेनापरीत ॥ १ ॥ षट्शास्त्राभ्यासजन्यानुभव-
तरणिभिर्नष्टहृद्ध्वान्तकश्च सङ्ख्यावद्ग्रासमानानवरतकृपया सश्रुतो भूतलेस्मिन् ।
सर्वाभिश्चप्रजाभिर्निजनिजलग्ना पुत्रदासीयुताभि सम्यक् प्रस्तूयमानस् सुललित
चरित स्वीय भक्ताभिगम्य ॥ २ ॥

वेङ्कटेशशास्त्री ।

श्रियायुक्ता भूमि परमयुवति सततमिमा वृणान सद्वद्गु प्रथममुपगच्छन्निह वर ।
सव्रागोसौ जीयात् परमयुवराज सुकृतिनो हरेरश श्रीमान् सकलनिभवैर्न दनपति ॥१॥

गूढप्रथमपादचित्रम्।

वेङ्कटेशविबुधादिराकुले शर्मदादिनिबुधातिमङ्कटे ।
वाग्विवेकसहितातिहर्षत स्तौतिनिशङ्कलतयाविशे पदे ॥ २ ॥

पण्डित विष्णुदत्त।

जलस्थलचलद्बलाललितनीतिलीलाऽमला स्वकीयमुयश श्रिया जयति कापि विक्टोरिया।
यया स्वतनयाग्रज सदभिसभ्यमूचे वच प्रयाहि सह सेनया सलिलयानमारोहित ॥१॥
स एषनरवेषभृद्भरतभूपभूमीमिमा विभूषयति भूतिभि शुमदशुद्धपद्भ्या स्पृशन।
शचीपतिमचीकरच्चकितचारुचक्षु श्रिय श्रिया जितमय ह्रिया विदितमद्य पृथ्वीगत:॥२॥
सोम व्योम्नि चिर चकोरशिशवोऽर्क चक्रवाकार्भका
हर्ष यादृशमाविशन्ति जलद दृष्ट्वा मयूरात्मजा ।
सद्यस्तादृशमद्य मादृशजनो भूजानिमाज मत
प्रिन्स प्रेक्ष्य समक्षमेति यमय भूयोपि त पश्यतु ॥ ३ ॥
कापि क्वापि कवे कदापि कविता नैतादृशी विश्रुता
या मिथ्या न पर परन्तु न पुन प्रिन्सप्रशसाश्रिता।
यस्या भास्कर एष तस्कर इव प्राप्योदय प्रश्रया
त्सन्धौ वद्धकरोऽपि मुञ्चति महाराज्ये न कारागृहम् ॥ ४ ॥
पायादपायात्सदुपासितो ऽय श्रीश स्वय श्रेयसि दत्तचित्त ।
श्रीप्रिन्समुत्प्रेक्षति य पुरोगमरोगमेन पथि विष्णुदत्त ॥ ५ ॥

पण्डित गौरेश्वरोपनामकराजारामशर्मा।

श्रीमद्भूपतिवृन्दवन्दितपदद्वन्द्वा जनाह्लादिका
युद्धे राजकजित्वरी विजयिनी राज्ञी सुसेव्या जनै ।
तत्पुत्रोयुवराजशुभ्रकिरण काश्या प्रविष्ट सुग्र
सेयो वेश्मजनप्रभुर्हि विमलोविद्वच्चकोरै सदा ॥ १ ॥
य कामिनीभिर्मदनो हि जज्ञे पश्यन्ति काल रिपवो ऽभिय य ।
सर्वश्च जानन्ति सरोरुहाणि राजानमारक्षतु मामय स ॥ २ ॥

कालिकापाठशालाया न्यायशास्त्राध्यापक श्रीकैलासचन्द्रशिरोमणि ।
श्रीदुर्गा पुरभित्प्रिया सुरभिदो लक्ष्मीर्भिदा स्वय ।

वीक्ष्यानन्यसदृक्षवैभवमसौ शङ्क्येति या भूतले ॥
सर्वे सा जयति श्रिया विजयिनी देवी तदङ्गप्रभो ।
यस्मिन्नास्ति वितर्कणा तनुभृता मार कुमारो ऽथवा ॥ १ ॥
अरातितमसि प्रभाकर इवाल 'य प्रोदगात् ।
प्रजाहृदयकैरवे ऽखिलकलाभिपूर्णं शशी ॥
नृपालनिवहोत्तमाङ्गमुकुटाङ्घ्रिपीठो महान् ।
प्रभुर्विजयतेतरामनिशमालवर्ट श्रिया ॥ २ ॥

पण्डित बालकृष्णभट्ट प्रयाग।

प्रत्याथक्षितिपालमौलिमणिभानीराजिताङ्घ्रिद्वय ।
श्रीप्रिन्सो जगता हिताय सुहृदामायाति सम्प्रेक्षक ॥
सद्वृत्तान्निजधर्म्मपालनरतान् सम्वर्द्धयन् सम्पदा ।
भूत्वा राजधुरन्धर सुमरल सम्राट् चिर नन्दतु ॥ १ ॥

पण्डित मालवीयगदाधरशर्म्मा प्रधानाध्यापक मिर्जापुरस्कूल।

समुष्णन् प्रभया विपक्षधरणाजानान्द्रतारावली
राज्येंदीवरमण्डल विकासित कुर्व्वन्श्रियो भाजनम् ।
क्षुद्रोद्वृत्तमदेद्धदुर्ज्जनतमास्युत्पाटयन्श्रीमती-
स्वान्तानन्दकराश्चिर विजयता प्रिन्साभिधानो रवि ॥ १ ॥
श्रीमद्भारतमण्डलीयजनतादु स्वान्धकारावली
निर्म्मोकनतदाक्षितो विजयते विक्टोरियानन्दन ॥
यस्यात्रागमनोत्सवप्रमुदिता आर्य्यास्समस्ता वय ।
स्वलोद्वाक्षणजन्मन. सफलता, सोल्लासमामन्महे ॥ २ ॥

छब्बदोकरोपनामक बाबाशास्त्री।

धर्मार्थकामैमिलित्वै परस्पर कृतावतार किमु मङ्गलश्री ।
अनर्घ्यविद्यानयभूतितेजा आल्बर्टभूपालमणिश्चकास्ति ॥ १ ॥
विद्यावारिधिचन्द्रमा नयसुधासागरो धीरधी
लीलानिर्जितदुर्जयारिनिवहो दाक्षिण्यदीक्षागुरु ।
क्षमाभृत्कोटिकदम्बमानससरोरुह प्रमादो मुच

श्रीराज्ञीतनयो जयत्यनुदिनं त्रैलोक्यभूषामणिः ॥ १ ॥
किं साक्षात्सविता न शीतलरुचिश्चन्द्रो न पूर्णः सदा
प्रद्युम्नो न च मूर्तिमान्वररुचिर्नैवाश्विनेयोऽद्वयः ।
निम्बा लोकचमत्कृतिं विदधता तत्सारभूता श्रियः
हृत्वा निर्मित एव पद्मजनुषा राज्ञीसुतो राजते ॥ २ ॥
यत्कीर्तिव्रजवर्णने क्षपितधी शेषो ऽतलं सेवते
यत्सम्पत्परिदर्शनाक्षमतया शक्रोपि नाकं गतः ।
यत्कान्त्या परिनिर्जितौ रविशशी पर्यटतो द्योतले
यत्काव्यं गुरुकाव्यविस्मयकरं स्फारं समातन्यते ॥ ३ ॥
भूमिं चङ्क्रमणेन राजनिवहं स्नेहेन विद्वज्जनान्
मानैरर्थिकुलानि दानानिकरैर्लोकान् कृपालोकनैः ।
नेतुं सत्कृतकृत्यतां विजयिनीराज्ञीजनुर्ज्योतिभू
र्जम्बूद्वीपतले ऽभियाति तनुभृद्भाग्यं प्रजानां परम् ॥ ४ ॥
राज्यसम्पत्कल्पवल्लीवेष्टितः कल्पभूरुहः ।
जयिनीभाग्यदुग्धाब्धिसमुद्भूतो विराजते ॥ ५ ॥

चतुर्वेदोपाह्व श्रीपण्डितविद्याविशर्मणः ।

अपथगामिनृणां परमाहितं सुपथि साधु यतां तु सखेऽमितं ।
स्वसमये नुगतेन्दुहरिप्रभ ! विजयसे धरणीनरवल्लभ ॥ १ ॥
सखीक्षणे दीवरवृन्दमण्टिनीविपक्षवक्त्राम्बुजकान्तिखण्डिनी ।
त्वदाननेन्दुद्युतिकौमुदी सदा दृशां प्रजानां भवतात् सुखप्रदा ॥ २ ॥
धृत्वानरं कीर्तिसमृद्धवल्लीमनन्तया सार्द्धमनन्तमेतत् ।
विभाति रूढार्थकला दधानं नाचेतनस्येदमयुक्तमस्ति ॥ ३ ॥
नापिया स्थितिधरावलिनाम्नि यानसन्तिसुरावेष्टपनाम्नि ।
तां श्रियं स्थिरयितुप्रभविन्त्री त्वामियपतिमुपेत्यधरित्री ॥ ४ ॥
प्रतापभानौ स्फुरति त्वदीये दिवानिशं भूमितले ऽखिलेपि ।
द्विरावमानेपि जनो विभाशा दिनेशितुर्नस्मरतीह्काले ॥ ५ ॥

पण्डित गोपालशर्मा जयनारायण पाठशालाध्यापक ।

श्रीमन्त्रीमद्गुणराजिमुकुटामर्केन्द्रनीराशिभि

पाथोजायितसुन्दराङ्घ्रियुगलः श्रीराजराजोपम ।
यस्मिञ्छ्रीश्च सरस्वती च नियतं भिन्नास्पदे तिष्ठत
एकस्थे जयतात् प्रकाशचरितो देव्याः कुमारो ह्ययम् ॥ १ ॥
यल्लोकपालाङ्गभवत्वमस्तीतरेषु भूपेषु तदस्तु नाम ।
अत्रोह्यते तद्विपरीतमेष यल्लोकपालान् स्वयमेव शास्ति ॥ २ ॥
किं वर्णयेयमहमस्य महाप्रभावं लोकातिगं सदुदयं ह्यपि कोमलांशुं ।
यद्देशगास्तपति नो तपनः स जीयान्नीराजिताङ्घ्रिरमलैर्नृपमौलिरत्नैः ॥ ३ ॥
देशे देशे भ्रमन्ती पतिमसुसदृशं नाप्नुवाना त्यजन्ती
स्थानेस्थाने सुरूपान् कुलबलधनिनोयातिचक्राम भूपान् ।
सा कीर्त्त्यं वरं श्रीसकलगुणगणैः पूरितं प्राप्य हृष्टा
श्रीप्रिन्साफ्वेल्सकाख्यं नृपनृपमचलाभूदहं तं समीडे ॥ ४ ॥

पण्डित लक्ष्मीनाथशास्त्री द्रविड ।

कीर्तिं कन्दलयन् नयन् धवलतां काष्ठा दिवो दूषयन्
शोभां भारतभूमिमीक्षणरसैः सिञ्चन् ययौ काशिकाम् ।
आरुह्यायमतः समस्तवसुधासाम्राज्यसिंहासने
सम्राज्ञीतनयो निरामयतनुर्जीव्याच्छतं वत्सरान् ॥ १ ॥
देव त्वत्परिपन्थिमार्थितरणीहृद्दीप्तशोकानले
माञ्जिव्य वहति त्वदागमरविश्चन्द्रे च नीरोचिषम् ।
अस्माकं तु धराधिराज भवतो भद्रागमस्सर्मणि-
श्चेतोम्भोरुहहर्षणैकपदवीं नूनं समारोहति ॥ २ ॥
पुरा सदृशवल्लभं चिरतरादनाप्यावनि-
र्नियुक्तपतिकेव या मलिनिताङ्गया ऽखिद्यत ।
अवाप्य पतिमीदृशं गुणवरेण्यरत्नाकरम्
भवन्तमिह शोभते नृप पतिव्रतेवाधुना ॥ ३ ॥

पण्डित रामचद्रशास्त्री ।

वर्षेऽस्मिन् खलु भारते ऽखिलजनानामानन्ददात्री सदा
स्वीयैः सद्गुणमौक्तिकैः सुरचिता कान्तिमज निभ्रती ।
न्यायान्यायविचारशालिमचिवैर्व्यासा सभाधिष्ठिता

सा देवी जयतात्सदा विजयिनीत्याख्या परं प्राप या ॥ १ ॥

ख्यातः श्रीयुवराजराजतिलकः प्रिन्साफवेल्साभिधो
भास्वान् भारतभूषणो ऽतुलयशा प्राप्तो ऽस्ति वाराणसीम् ।
ज्ञात्वैव क्रियते ह्यमुं प्रभुवरं सर्वे समेत्यार्प्यते
शब्दानां स्फुरदर्थरत्नखचितस्तूल्कोचरूपो मया ॥ २ ॥
पौराणिकेत्युपाह्वेन रामचन्द्रेण शास्त्रिणा
याच्यते सुचिरं राजजीवितं शरदाशतम् ।

स्तवपञ्चकं ।

महोदार सर्वेश्वरो धीरशान्त गुणोपेतसाधुर्भवान् लोककान्त ।
नरेशाधिनाथ प्रजादुःखहारी सदा सद्विचारी दरिद्रोपकारी ॥ १ ॥
महाराज राजेन्द्र भूम्यम्बुधीश खलु त्वं नियन्ता गरीयान् सुधीश ।
भवानेव भूभृद्गणापीडहीर समीड्यो हि सङ्ग्रामसिंहस्सुवीर ॥ २ ॥
खलु त्व प्रपूज्य प्रजाशान्तिदाता व्यवस्थाधिकर्त्ता प्रजावर्गपाता ।
वराश्च प्रजानाथ वृन्दो विनीत भयात्ते यथैणस्तु सिंहेन भीत ॥ ३ ॥
प्रजावर्गकल्याणदाता त्वमेको नृप त्वं प्रजानां शुभाम्भोधिरेका ।
प्रतापाच्च सौदामिनी कम्पिता ते इहागच्छ राजन्यथैनश्वभा ते ॥ ४ ॥
विलोक्य स्वकानां महीनाथ दीःख्य प्रदेहि प्रजानाञ्च सर्वस्य सौख्य ।
समागच्छते भारते प्रार्थ्यमानं भुजङ्गप्रयातं गमेदं गृहाण ॥ ५ ॥

विनीतस्य

श्री, ज, च्च, स, चौ, देव धानि धान्चनशेखरस्य ।
बोयालिया राजशाही बेङ्गाल ॥

त्रिपाठी पण्डित रामशरण

चञ्चच्चन्द्रमरीचिचारुचमरैः ससक्तदेहैर्मुहु-
रश्वैस्मादियुतैर्वृतस्सुगतिभिर्वातातिपातक्षमैः ।
श्रीमद्राजसमाजमौलिमुकुटे ससेवित पादयोः
लोकैर्लोचनगोचरा वसुधिप कुर्वन् कृतार्था प्रजा ॥ १ ॥
क्षोणीमम्बुदभिर्भीभिरभरैः कुर्वन् नभोजङ्गम

सैन्योत्थै खुररेणुभिर्विघटयन् पृथ्वीं नभो वाजिनाम् ।
एष श्रीक्षितिराजराजतनयो निर्मापयन्दीनता
भास्वान् गाढमिव प्रकृष्टतिमिर देदीप्यमाने करै ॥ २ ॥

षड्धा सैन्यविभूषण प्रभुवरो भातीव भामण्डलै-
र्जेतु वज्रधर प्रतापनिचयैरेवाधुना निर्गत ।
शौर्य्यौदार्य्यदयापर रविमिम तापैर्विना य नु वा
तारेश ह्यथवा कलङ्करहित सन्तर्कयन्ते बुधा ॥ ३ ॥

रामचन्द्रस्य श्लोक ।

महान्विजयिनीसुत सकलविद्विषा शासक
स्वधर्मनिरत सदा विमलपण्डिताना प्रिय ।
कलासु निपुणो ऽन्वह निखिलशास्त्रविद्भिर्बुधै-
रलङ्कृतयशोगुणो विजयते हिमांशुर्यथा ॥ १ ॥

अनन्तराम भट्टभट्टस्य ।

राज्ञया कुमारो युवराजकार्य आशाङ्कनासंचितनैजसग्य ।
आत्मीयभूलोकविलोकनोत्क कान्त्या मृगाङ्कोपम एधता स ॥ १ ॥

मै विश्वचित्रधरस्यायमाशीर्व्याहार ।

तुषारे चाग्नेय्या समुदयमवाप्याखिलजगन्मन क्लेशस्तोमप्रबलतिमिर जाड्यमपिच ।
अशम्य दूरेण प्रसभमतिनिश्शेषमधुनासक्कद्भूमी गत्वा य इह समयस्तुष्णकिरण ॥१॥
अपा पत्युर्जाड्य शमयितुमिवास्येन हरित गमिष्यत्सोजस्वी प्रभुविजयिनीपुत्रकपटात् ।
सदा सर्वोशाना स भवतु जयीशान इति मे शुभाशीर्व्याहार शिव शिव दिशत्वाशुरसना ।२।

त्रिवाडीत्युपनामकस्य गोविन्दशर्मणो ऽय श्लोक ।

गोविन्द खलु याचते परविभु विश्वेश्वर शूलिन
ह्येन सर्वगुणैर्युत विजयिन श्रीसयुत धार्मिकम् ।
रक्ष त्व गिरिजापते सुनन्दन राज्ञीसुत सर्वदा
नो चेद्धर्मविचारशून्यहृदया नष्टा भवामो वयम् ॥ १ ॥

पण्डित माधवराम जिला मिर्जापुर।

उद्दण्डोद्दण्डतेजा निगमवनकलाक्रान्तबुद्धिप्रबुद्ध
शुद्ध शुद्धाभियुक्त समभिभयुतः प्राप्तसिद्धिप्रसिद्ध ।
युद्धे धीरातिधीरो विजयफलयुत सर्वराजोपरिष्टान्
यायात् भूमाधिराज प्रभुकुलननन श्रीजयिन्या कुमार ॥ १ ॥

भवानीप्रसादशर्मा ।

नतोन्नताशान् परमान् समश्च विलोक्य राज्ञीतनयस्य साधो ।
गुणेष्वपूर्वान् गणितादलभ्यान् बुधा शमिच्छन्ति च तस्य शम्भो ॥ १ ॥
श्री वेल्सदेशाधिपते सहर्षा दृष्टिप्रसादाद्गणकेन्द्रपूज्या ।
आनन्दयन् सा जननी जनान् स ईशादितीच्छन्ति शत सुजीव्यात् ॥ २ ॥

रामप्रसाद मिश्र ।

दयामयनिजाशया भवदया महीपावले श्रिया परमया युता विजयिनी सदा राजते।
यदीयभटमण्डलीकरविनूतखड्गाहतिक्षणक्षुभितवैरिणाभवनतामगात वनम् ॥ १ ॥
यदीयतनुजो भुजोर्जितपराक्रमोत्तापितद्विपन्नृपतिमण्डलो विजयते धराखण्डल ।
स एप सुचिर महीमवतु पालयन् सज्जनान् प्रसादचरमाभिधो वदति राम एव गिरम् २॥

मिश्रोपाह्वरामगोविन्दशर्मण ।

येनेय वसुधाचराचरधरारत्नानि दोदुह्यते
जित्वानेकनृपाश्च सयति बलात् कृत्वा तु वत्सान् प्रजा ।
वैनश्चैव यथा प्रकल्प्य विबुधान् वत्सान् पुरादुदुहत्
स श्रीमान् युवराजसाहबवरस्सद्वर्त्मना वर्त्तताम् ॥ १ ॥
शोकान् सशमयन् प्रजाभिरधिक हर्षान् समुद्वर्द्धयन्
सर्वाधर्म्मपरग्रहान् कुधिषणान् सताडयन् धर्म्मत ।
यस्येहागमन करोति सतत विद्योतमान जगत्
स श्रीमान् युवराजसाहबवर सवर्द्धता सर्व्वदा ॥ २ ॥

पण्डितश्रीधर मैथिलस्य ।

प्रोद्यच्छ्रीभूपवृन्दप्रणुतपद धराधीशमौलिस्थहीर-
ज्योत्स्नानीराजिताग्रे वरणिधव तव प्रश्रितौ धीरवीर ।

नृत्यद्भिर्गाजिसंघे खरखुरनिवहैर्द्धूतधूलीसमूहे ।
सम्प्राप्ता मृन्मयास्ते जलनिधिनिचयाश्चित्रमेतन्ममहाल्किम् ॥ १ ॥

पण्डित शालिग्राम ।

यस्या शौर्यनिधे प्रतापमहिमा जागर्ति भूमीतले
यत्कीर्त्याऽमलया दिशो धवलिता नीचै कृता शत्रव ।
सा प्रासूत सुत युत वहुगुणैर्निश्शेषयन्त रिपू-
निन्द्राणी जय तमात्मसुहृदामानन्दद नित्यश ॥ १ ॥
तीर्थीचिकीर्षुर्भुवन समग्र सुगोत्रजो गाधिभिदादिशस ।
मन्ये प्रतस्थे निजराजधानीं कर्त्तुं कृतार्था सकला कृपालु ॥ २ ॥
वीक्ष्यैन जयशालिन कृतधियो ऽमन्यन्त जात रघु
दातृत्व समवेक्ष्य सजगदिरे कानीनमेन बुधा ।
दृष्ट्वा चास्य दयालुता शिबिरिति प्राज्ञा परे मेनिरे
मन्ये पाटवमीक्ष्य चास्य कतिचिद्धर्मीयमूचु स्वयम् ॥ ३ ॥
रघ्वादयोनृपाश्चास्यासत्येयगुणवत्तया ।
शालिग्रामसुधीर्ब्रूते कला नार्हन्ति षोडशीम् ॥ ४ ॥

श्रीहरिनाथशर्म्मा द्विवेद ।

श्रीमद्विजयिनी देवी वर्द्धताद् सूनुभिश्चिरम् ।
यत्कुक्ष्याब्धिजनुश्चन्द्रोहार्दिरा काशतेतराम् ॥ १ ॥
सङ्कोचयन्वैरिमुखाम्बुजानि प्रकाशयन् कौमुदमाममुद्रम् ।
सपीडयन्दुर्नयसैंहिकेय नवो विवस्वान् भुवि यत्प्रताप ॥ २ ॥
अत्युत्सुक मस्कृतवाग्भवाय स्वयुत्सहृद्दर्शनता प्रजाराट् ।
यद्विष्णुकामो निजत शुभाय टङ्को द्विपा देशत एनसा माई ॥ ३ ॥

गोस्वामिरामगोपालशर्म्मा ।

ाजेश्वरीसुततपान्त नितान्तताान्त तापान्त कामितचञ्चपलाम्बरान्त ।
नन्ताब्धिसिन्धुरपयोधरराजिराजौ सृज्यात् प्रजासुशिशिरसुख भवदागमोयम् ॥ १ ॥
मिद द्विपाधिपमदम्बकदम्बयाात पाात क्षिति क्षितिपराजिविराजितान्तम् ।
त्वा गौरीनाभरपतिम्बितनिरेण्य ल्ला ऽमरुत् शुभावी भवनीति युक्तम् ॥ २ ॥

रूपे स्मर तेजसि भानुमन्त नये गुरुं लोकार्जने क्षमायाम् ।
आरोहणे ऽश्वस्य नलं भवन्तमाहुर्न के नाम जना अवन्त्याम् ॥ ३ ॥
निराश्रयत्वेन चरन्नितस्ततः आशाहतोऽन्यत्र वियासया स्थितः ।
भवन्तमुत्पाद्य दयावतामतो धात्रा ध्रुवं वीररसो ऽनुकम्पितः ॥ ४ ॥
त्वया भाति मही नाथ मह्या भाति भवानपि ।
भास्वता नलिनी भाति नलिन्या भाति भास्करः ॥ ५ ॥
त्वदागमनवीजाभिरीहाभिरतिभासिता ।
काशी श्रयति राजेन्द्र साम्प्रतं पर्वतामियम् ॥ ६ ॥

ईश्वरदत्तशर्म्मणः इत्तम् ।

श्रीमन् सम्राट्विनेक्रिस्तव सुभुजं नल्पप्राप्य सर्वापि पथ्वा
वारिद्वयन्ता मशैला बहु वसुनिचयं सूयते शश्वदद्य ।
श्रीकृष्णस्येव सत्याहितव्रतजनुषोमह्यमारातिवृन्दे-
र्नानाधर्मप्रचारैस् सकलजनहितस्यात्र लोके समस्ते ॥ १ ॥
विद्यानाञ्चापि सद्यो भुवनपरिमितानां ग्रहीतुस् सलील
राजन्यानां समूहैर्निजकुलनिरतानां परीतस्य पातु ।
नित्यं सर्वप्रजानामवनसुकरस्याद्य भीमादिगोष्ठे-
ईस्माध्याश्चर्यकर्म्मप्रतिदिनकरणैर्लोकवित्तस्य भर्तुः ॥ २ ॥

पण्डितदामोदरशास्त्रिकृता कविता युवराजवेल्समाधिपस्याशीर्वादः ।

आगमे रमया निशामपुरे नागधराकारकः
स्वाराजादिसुरासुरद्विजवरैराराध्यमानो विभुः ।
आगम सुन्दरायुतं परतरं कुर्वन्नराणां परं
पूरं पूर्णकृपारसस्य कुरुतान्नीमन्दुरिते सुखम् ॥ १ ॥

यशोवर्णन ।

चन्द्रोयं शिशिरा व्ययाथि यदयं भ्राम्यत्रमा जोनयेत्
गर्भाणम्य यत्र मार्गेभुवनस्थाश्रापि गोकान् सदा ।
एतत्कार्यहृत विभु प्रवितथा गयामिनश्चाभिन
पदे भेदमतीतो सुविहितैर्नगण्डायविनाशितः ॥ २ ॥

देशोक्तिः ।

युक्त्या निर्लोकय जन प्रभुधूर्वहाय आराद्विमोचय महाव्यसनाग्निगर्भम् ।
आवेदने कुरु मनस्त्यज चालसादीन् राजाधिराज शृणु पाल पले पलेऽपि ॥ ३ ॥

अद्यानन्ददिने समस्तजगतस्तत्रापि नो भो प्रभो
किं कुर्मस्तव चादरं स्मरणकृत्कर्मेति न ज्ञायते ।
सत्यं प्रतिरोधकानि बहुलान्यत्रैकमेका त्रपा
दारिद्र्यस्य सुता विलायतगता हिंदुस्नुषा यातुना ॥ ४ ॥

प्रार्थयामहे विभो सुशिक्षयेति तां त्रपां यातु चार्यदेशमत्र वासकारिणा भवेन् ।
सपदेव मातृवद्यया वयं सुपालिता कृता च या सुवन्दिना स्वदेश एव ते विभो ॥५॥

प्रजाया सुखदुःखाभ्यां यद्राजा सम्प्रभाव्यते
अतस्त्वां प्रार्थयामो भो पाहि दीनान् जनानिमान् ॥ ६ ॥

रामकृष्णशास्त्रिणः पट्टवर्धनस्यैते श्लोकाः ।

सा मानिना विनयिना जननी जनानां सम्मेलिनीजनिजुषा जयति प्रजानाम् ।
राजन्वतीं विदधता वसुधां मयि या ममाशिष्ट वैरिवनितानयनाञ्जनानि ॥ १ ॥

भट्टोपाह्वकान्तानाथभट्टः ।

श्रीमद्विपुरविजया प्रिन्साफ्वेल्साख्ययुवराज ।
दयया भारतवर्षं य स्वागमनात् कृतार्थयति ॥ १ ॥

शोभोपाह्वशिवनारायणशर्मणः ।

आशिञ्जद्वलगुरमनागनिचया विस्तीर्णकर्णज्वरम्
स्थानि स्थानमशेषपन्दुभिनदैरास्यातमुद्घोषयन् ।
नैन्द्रीमगनै कृष्णुनि करैदशूरानिपुष्पन्महीम्
सायंकाल कठोरचक्रनिचयस्यापीड्यमानामिव ॥ १ ॥

यस्येहातुलमञ्जसा जगति सञ्जात प्रभुत्वं परम्
वैरिव्रातविनाशने पटुतरं विभ्राजमाणं भृशम् ।
स्वर्गे देवगणैस्सुरेन्द्रमहितैस्सङ्गीयते सान्प्रतम्
तस्मै श्रीयुवराजमोहनवरायेशेन च दीयताम् ॥ २ ॥

श्रीमन्मोहनवर्या चायाश्चिवाम्बारमाति ।
धीमान प्रिंसआफवेल्सो विजयत आल्बर्ट एन्वर्डः ॥ १ ॥

श्रीमद्राजाऽधिराजप्रकरमणिकराक्रान्तपीठाधिरूढाया
श्रीमद्विक्टोरिआख्या बुधवरनिकरश्लोकसुश्लोकिताया ।
पुत्रो जीव्यात्पवित्रश्चिरमितिजयतुप्रिन्सआल्बर्ट्मनामा
पाण्डित्यौन्नत्यमौर्यादयखिलगुणगणाऽलङ्कृतोऽलङ्कृतोच्चैः ॥ २ ॥

रिसाल्नोपनामककाशीविश्वनाथशर्मा ।

दिङ्मण्डलान्निस्तृतकीर्त्तिरासससस्तप्रतापानलदीप्तहेतौ ।
पतन्तु सर्वे शलभायमानाः भूयाश्चिरायु क्षितिपालदेव ॥ १ ॥
दर प्रेम्णो निधाने गतवति हि जने धूतनिःशेषभूषा
योषाऽशोभेव मारुवी समजनि जगती या पुरा त्वां विना सा ॥
धन्यीभूतेयमूर्वी तवचरणरजोमञ्जुसिन्दूररागै
सरक्तस्सीयसीमाभिनवपरिणयेनाद्य भूपालमौले ॥ २ ॥

भरद्वाजोपनामकगोविन्दशास्त्री ।

शौर्यादिगुणतुरङ्गा प्रोत्तुङ्गा सिन्धुलङ्घने यस्या ।
जयति विजयिना जयिनी जगतीतलमध्यगा देवी ॥ १ ॥
गाम्भीर्यैकनिकेतनो रिपुकुलभ्रान्तैकविभ्रामिन
शान्तेश्चाकर एष दान्तिनिचयो दाक्षिण्यवाराांनिधि ।
श्रान्तिभ्रान्तनिवारणे दिनमणि सौख्यप्रदो देहिना
वाणी यस्य सुधासमा विजयते श्रीराजचूडामणि ॥ २ ॥
हर्षं सवर्धयन्नो निखिलरिपुकुल खण्डयन् शस्त्रसघै
राज्ञो राज्येनियुञ्जन् सकलगुणगणागारराजाधिराज ।
सप्राप्तश्चक्रवर्ती विविधरथवरैरभ्युपेतोश्वसघै
कर्तुं चक्षु कृतार्थं स जयतु विजयी यौवराज्येभिषिक्त ॥ ३ ॥

रामब्रह्मशास्त्री ।

रामन्यायविनीतराडति महारामोपि सल्लक्षण
कर्तासौ समलोचनव्यतिमहान् वैषम्यहीनान्कृत् ।
जेता मित्रजिदोजसापि सतत जेतास्यमित्राणि य
स्सम्पायात्परमेश्वरो विनयिनीन्दिरासुत सर्वदा ॥ १ ॥

श्रासावभामातनयस्य तस्य प्रभूतसम्पद्विततातरम्ये ।
श्रीभारते रत्ननिधानखण्डे शुभागमस्सर्वजनप्रियोभूत् ॥ २ ॥

टगिडभट्टोपनामक विश्वनाथशास्त्रिण श्लोक ।

सम्राट्सुन्दरवक्तृकान्तिविजये वध्यादर सर्वदा
सरघान सरसीजले यमकराहारम्मनोहारि तत् ।
त्वीव्र तत्तप आचरत्परिभवम्प्राप्तन्तत सेवते
श्वेत छत्रमिषेणतन्मुखमहो रम्यम्प्रसादोज्ज्वलम् ॥ १ ॥

श्रीपरमेश्वरमैथिल ।

आशास्यास्ते नृपेन्द्रास्समुचित फलदा देवता सन्तु सेन्द्रा
स्त्वामात्या धा वितन्द्रा निखिलखलहरास्सद्गुदेवास्मचन्द्रा ।
पूर्णाशास्त्वदरिद्रा प्रबलरिपुगणा कुम्भकर्णासनिद्रा
सेनास्तेपाममन्द्राइव जगति यशोराशय सन्तु सान्द्रा ॥ १ ॥
क्षोणीपालघटेभसोत्कटसटक्ष्मापालमौलिस्थलो
द्दासिप्रोच्छलदच्छरत्ननिकरैर्नीराजिताङ्घ्रे प्रभो ।
त्वन्वह्लोकचकोरलोचनचलञ्ज्ञोकाचले चन्द्रमो
नाम्ना श्रीपरमेश्वर स्पृहयतीलेव मुदा मैथिल ॥ २ ॥
त्वय्युदिते गुणसिन्धौ निजजनचेत कुमुद्वतीबन्धौ ।
जगति कदारितमिस्त्र नाम्नापि श्रूयते क्वापि ॥ ३ ॥
माद्यद्दन्तिघटाविशिष्ट मणियुग्घण्टाटणत्कारत-
स्तच्चीत्कारमयाच्च दिक्षु सतत दिग्दन्तिनो यान्ति के ।
किंचान्ये प्रतिपक्षिण क्षितिभुजो यस्य प्रतापानल
प्रोद्यज्ज्वलभाव भान्ति स पुन किम्वर्ण्यते मादृशै ॥ ४ ॥

नारायणविरचितम् ।

यस्या कीर्तिगभस्तिभाभिरखिल प्रोद्भासित भूतल
ध्येया या सदसद्विवेकममये शास्त्राब्धिपार गते ।
यामामाद्य स्वतोयजन्म्यनिलभूगोत्रान्वश चक्रिरे
सा श्रीनन्दनग्रामिनी विजयते [illegible] ॥ १ ॥

श्रीमत्यास्तनयाजिताखिलगुणस्सामन्तराजान्वित
स्सानूलोकानतिहर्षयञ्छुभवरो राजीवसद्वाग्निव ।
प्रिन्साफ्वेल्समिति यस्य नाम ललित शार्दूलविक्रीडित
किं कुर्व्वन्निव यो ऽखिला स्वयमिला द्रष्टु समाक्रामति ॥ २ ॥
श्रुत्वा तस्य समागम नयमिहात्यन्त सहर्षा यत
श्रीराजागमनेन सर्व्वजगता सन्मङ्गल वर्द्धते ।
सिध्यन्त्याश्रयिणान्नृणामविरत सर्व्वेभिलाषा यथा
ध्यानेनाखिलदेवसर्वपुषो नारायणस्येति शम् ॥ ३ ॥

विजयनाथशर्म्मा ।

श्रीमच्छ्रीविकटोरिया विजयनी राजाधिराजेश्वरा
प्रिन्साफ्वेल्ससमाह्वय सुसुषुवे पुत्र सुरेशोपमम् ।
धन्या सा नृपराजिराजितपदा यस्या प्रसादात्प्रजा
खेलन्त्यो निनरा चरन्ति विपिने देशे विदेशेप्यलम् ॥ १ ॥
कामारे भारतेस्मिन् स्वबलदलचयैर्भूपपद्मप्रकाशा
भीमोपान्त्ये विपक्षक्षितिपतिभशभृद्देवता मुद्रितास्ते ।
गेहेगेहे द्विजाद्याम् स्वनिभयविनये स्थितायष्टुकामा
प्रिन्साफ्वेल्से हिमर्त्तौ समुदयति रवौ चित्रमेतत्समस्तम् ॥ २ ॥
यस्मात्कोपि न तादृशा भुवि भुव सपालने भूमिपा-
स्तस्मान्निलमल करोतु नितरा राज्य महीमण्डले ।
श्रीराजेन्द्रकिशोरसिंहसुमहाराजाज्ञया वर्णन
तत्सेवी जयनाथशर्म्महमित् क्लेश्वर प्रार्थये ॥ ३ ॥

रुहेलखण्डरामपुरतप्यान्तर्गत खातो नगरग्रामवासिनो
नन्दकुमारशर्म्मण प्रार्थनेयम ।

धर्म्मोदय कर्त्तुमधर्म्ममर्म्म च्छेत्तु च यो भूमितले ऽवतीर्ण ।
श्रीमान् समस्तक्षितिप म भूयात् प्रिन्साफ्वेल्जीवितर सुखी च ॥ १ ॥
बरेलीनगरप्रान्ते राज्येयवनसात्कृते यवनैर्द्धपतो धर्म्मो द्विजाना परिलोपिता ॥२॥
यत्नामीत्तद्वन्द्राज्य तदा मे मे सुखामिन अधुना क्लेशजाले बद्धामने ऽतो दया कुरु ३

मिश्रोपाह्वसोहनशर्मवैद्यस्य।

व्याधिग्रस्तसमस्तनिर्जरगणान् नीरोगयन्नौषधै-
र्दिव्यैर्भव्यसुधाढ्यकुम्भरचिमद्वाहुर्महेन्द्रस्तुत ।
नित्य मर्त्यकुलप्रपालनपर सन्तापयन्त परान्
श्रीमन् वेल्सवसुन्धरानरपते त्वा पातु धन्वन्तरि ॥ १ ॥
स्तुत्वा या वार्धिनेयी त्रिदशपरिवृढाद्या सुपर्वौघमुख्या
सिद्धि विन्दन्ति देवी सरपरिचरणी रूपराशी सुवेषी ।
वेल्सक्षोणीश गुण्य द्विपदनलजल ख्यातकीर्तेऽधिकर्द्धे
त्रायिता त्वा मितान्त भणति भिषगिमामाशिष शोभनाय ॥ २ ॥

भट्ट शास्त्री बटपुत्रोपाह्व ।

या पुर्णशीलास्ति दयाप्रधानै र्गुणै समस्तै स्वकुलोचितैश्च ।
सापालन लोकहिताय राज्ञी करोति मातेव सुतस्य नित्यम् ॥ १ ॥
शान्त्यादिभि सर्वगुणैर्विभूषितो ज्येष्ठोस्ति तस्या स्तनय सदा भृश ।
काशीपुरीं द्रष्टुमिहागतोस्ति वै भूत्यैस्समेतो युवराजशब्दभाक् ॥ २ ॥
श्रीमन्मातृकुलोचितैर्गुणगणै शौर्यादिभिर्भूषितो ।
नानानीतिविशारदोतिमतिमान् पूर्णप्रतापोज्वल ।
येनेद परमण्डल तु सकल हस्तेन नम्रीकृत
तेनासीन्नृपमण्डलेषु यशसा चन्द्रोपम शोभते ॥ ३ ॥

इन्द्रप्रस्थनिवासिपण्डितविश्वेश्वरनाथनवलगोस्वामिन कृतिरियम।

युवराज चिरजीव रक्षतु त्वा स ईश्वर। भवदागमनेनेह प्रहृष्टा सर्वजन्तव ॥१॥
हे लण्डनाधीश्वर ते चरित्र वक्तु विचित्र भुवि क समर्थ ।
स्वतेजसा शत्रुगणा जितास्ते त्रिविष्टपेशेन तु शस्त्रसघै ॥ २ ॥
हे लण्डनाधीश्वरि ते प्रतापादिट्लण्डदेशप्रभवा मनुष्या ।
विद्यान्वितास् सर्वगुणोपपन्ना शूरा प्रजाना हितकारकाश्च ॥ ३ ॥
हे लण्डनाधीश्वर पूर्वभूपा न केपि जग्मुस्समता त्वदीयाम् ।
ते धूमयान न च तारयन्त्र समैप्यपश्यन् सुखद प्रजानाम् ॥ ४ ॥
देवस्यागमन श्रुत्वा जाता भारतभूरियम् अपूर्वा नूतना देवी भुक्ता यद्यपि राजभि ॥५

उदयानन्द शर्मा ।

यस्योच्चलज्जलधिलङ्घनविक्रमस्य राज्ञीसुतस्य यदि सङ्गमतो धरित्री ।
युक्त सुमङ्गलवती भवति प्रपूर्णा हर्षेण सोऽस्ति विदितो दयितो यतोऽस्या ॥१॥
यद्वक्त्रकान्तिजितरोचिरय सुधांशु सलज्जितो ऽह्नि न दर्शयते स्वदेहम् ।
स च्छारदाभ्रमिषतो ऽम्बरतो निजास्य सञ्छाद्य कैरवपतिर्भ्रमति क्षपायाम् ॥ २ ॥
कीर्त्या सुधांशुसितया विशदीकृतस्य क्षोणीवरेन्द्रतनयास्तनभूषकस्य ।
हारस्य सम्प्रति धिया गलपन्नगेश त्यक्त्वा शिवो मृगयते शिरसि तमेव ॥ ३ ॥
जीवतात् सज्जनानां सकलाना तोषयन्निजगुणैस्सकलानाम् ।
आश्रयो जगति सन्मतिमान्य प्राणिनामधिपतिर्मतिमान्य ॥ ४ ॥

समस्यापूरण ।

त्यक्त्वा प्रियामाङ्गलदेशजाता यदार्यभूमे प्रणयाभिलाषी ।
भवानहो तद्धि महत्कुतूहल गौरीमुख चुम्बति वासुदेव ॥ १ ॥
शृणोम्यह भारतदेशराज समागमिष्यत्यधुना दयालु ।
अहो भवित्री सधवा धरित्री सिन्दूर बिन्दुर्विधवा ललाटे ॥ २ ॥
क वा वय हीनतमा दरिद्रा क वा भवान् भूपनिषेविताङ्घ्रि ।
अत्यद्भुतस्सङ्गम आवयोर्यत् पिपीलिकाचुम्बति चन्द्रबिम्बम् ॥ ३ ॥

राजेश्वरशास्त्री द्राविड ।

श्रीमद्वीरमहीपवृन्दमुकुटस्रस्तसुमुक्ताफलै ।
पूर्णा राजसभा यदागमरणा माकाङ्क्षते सादरम् ॥
सम्यक्प्राप्तनयस्तदीयतनयो विश्वातिशायी गुणै ।
शौर्यौदार्यदयादिभिर्विजयता माहेति राजेश्वर ॥ १ ॥
असौ सकलसज्जनान्सुखयुजो वितन्वश्चिर
निरन्तरमिमाम्महीमुदधिमेखला पालयन् ।
दयासमुदयोदयाद्विकलदु खिदीनाननन्
समा अनुपमा शतम्भवतु राजराजाधिप ॥ २ ॥

केशवशास्त्रिण पर्वतीयस्य ।

जम्बूद्वीपमहाधिराजविलसन्माणिक्यमौलिस्थला-
सद्धद्दामनराजमानचरणद्वन्द्वाभिनम्राम्बुजा ॥

निःश्रेयोदयदैवभोगाविजये मन्निर्मिता ब्रह्मणा ।
देवी सर्वहितैषिणी विजयिनी वर्वात्त सम्राट्पदे ॥ १ ॥
एतस्यास्तनुजस्समस्तनगाति श्रीप्रिन्सआफ्वेल्समाने ।
नाम्नाक्ष्मापतिसर्वमौलिमणिभाप्रोद्भासिपादाम्बुज ॥
सम्वद्वैक्रमके भुजाग्निनवभूयुक्ते सुकाशीपुरी ।
मभ्यागमनेन केशवक्षोनि प्रेम्णा दरीदृश्यताम् ॥ २ ॥

वासिकरोपनामकाशीनाथभट्टस्य ।

श्रीश्रीश्रीयुतराजवन्दितपदद्वन्द्वो जनाह्लादको ।
विद्वत्कञ्जमय सदा विकचयन्देवोसुत मादरम् ॥
श्रीदानेन सदा जनान् प्रमदयन् कान्त्या युतोनायकः ।
पूर्णाचन्द्र इवोजमा विजयता श्रामार्वभौम प्रभु ॥ १ ॥
धाराधीतनय सुरे स्तुतगुणो युद्धेषु नात्यायुधै
श्रीत्वातप्रतिरोपिताक्षितिपता राजन्यमान्य पर ।
लोके श्रीश्वपल्यकीर्तिरखिला सत्कर्मणा नाशिता ।
सद्विद्या प्रलय गता प्रकटिता येनेश्वर पातु तम् ॥ २ ॥

गम्भवस्युपाद्धवापूर्वमंण ।

उद्यन्त व्योम्नि कृत्स्न क्षितितलममलैरंशुभिर्भासयत ।
कीर्त्तीन्दु ते जिगीषन्ननुदिनमयते वृद्धिमाद्ये दलेयम् ॥
पश्यन् पर्वण्यनूने निजवपुषि विधुर्लभ्य मापत्प मत् ।
पक्षेऽन्त्ये याति कार्श्यं युवनृप महता किं पर मानहाने ॥ १ ॥
स्थानेऽय युवभूपतेऽभ्युदयत स्वातप्रमादो नृणा ।
धन्याऽसूत सुतं नतारनिभृत राज्ञा भवन्त यत ॥
भास्वद्भानुकरैस्तम शमकरैरम्भोरुहाणा तते ।
स्त्यायोपमि सत्समुन्नतिविधौ प्राचीनिदान स्फुटम् ॥ २ ॥

श्रीपण्डितगीतमापमादगर्माण ।

श्रीमद्राज्ञीतनय भवतो दर्शनानुग्रहेण जाताह्लादा वयमिह जगदीश्वर प्रार्थयाम ॥

यावत् कूर्म्मा धराते धरणी तावदाह्लादयन् स्वा- ।
म्म्रामस्मान्नवतु सतत वेल्सदेशाधिनाथः ॥ १ ॥

प० गणेशदत्तशर्म्मा ।

विक्टोरिया या विदिता पृथिव्या सा सत्कवाना वितनोतु मानम ।
कुर्य्याच्चरक्षा बहुधा प्रजाना यतो नृपेन्द्रस्य हि धर्म एष ॥ १ ॥
प्रिंसफ्वेल्साभिधो नित्य विश्वेशस्य प्रसादत ।
दोर्घायुर्भवतु प्राज्ञ सर्वभूपालवन्दित ॥ २ ॥

द्विवेदपण्डितबस्तीरामशर्मण ।

फुल्लचम्पकरागिघोटकचयप्रोत्तुङ्गहेमासनासीनैरक्मयार्द्धचन्द्रनिकसत्तारागणैते फलै
श्चञ्चचारताडिल्लतातिविचलन्निस्त्रिशभाभिर्भृश मैशङ्कालमिवातपरणवरैस्सन्दर्शयद्भिर्भटै
युक्तश्श्यामलयारिदीर्घसदृशे मत्तैमनृन्दैर्मुहु कुर्वन्भूतलमेव पुष्करमिवायो पत्वलाल्ड्कृत
एष श्रीयुवराजराजतिलकस्सशुद्धपार्ष्णिश्शरद्भूप्यत्तामरमाननो निजयते काम शुभयु कृता

भारद्वाजदामोदरशास्त्रिण ।

यत्कीर्तिविमला प्रयाति तरसा स्वर्गौकसा मालिनी ।
हन्तु सज्वलति प्रतापदहन शत्रून् समूल सदा ॥
सा राज्ञीमिपतस्मतीविजयिनी चिन्छक्तिराद्या स्वय ।
दण्ड्यान् दण्डयितु सतत्सुखयितु वर्वातिभूमीतले ॥ १ ॥
तस्या वरिष्ठो युवराजसिंह । क्षान्त्या युतो दान्ततर प्रशान्त ॥
सुत समालोकयितु प्रयातो । वाराणसीं शम्भुपुरीं दयालु ॥ २ ॥

काशीस्थपाठशालाया शब्दशास्त्राध्यापक शिवकुमारमिश्र ।

कान्तिङ्कामाप कामकामितल्वामाविभ्रदात्माधिप- ।
प्रेन्म प्रेक्षितुमेव नूनमनिश क्षोणी तपस्यत्यसौ ॥
इन्दुङ्कञ्जमिनञ्च दीपममलान्नक्षत्ररूपाक्षतान् ।
दत्त्वेशाय हिमाद्रिहाटकगिरी हस्तौ विधायोन्मुखौ ॥ १ ॥
श्रीमन्तयुवराजबालतपन प्रोद्यन्तमैन्द्र्या दिशि ।
भ्राजद्वास्तभूतडागजनताबालाम्बुजमुज्जीवितम् ॥

दृष्ट्वा खेदतमो विनष्टमखिलञ्चेदमञ्चत्यलम् ।
विश्वश्रीमरितोजलेननयने रत्नैरशेषजगत् ॥ २ ॥

इदन्तु न विचित्रित क्षितिपते यदीयद्रवत्कटाक्षचलनाद्भुव सकलमीहित मिच्यते ।
भवादृशरमापते कृतिरियम्मही श्रूयते श्रुतावितिं दृढा मतिरिशवकुमारमिश्रस्य मे ॥३॥

विक्टोरीलतिकाऽतिकीर्त्तिसुमनस्सौरम्यसम्भावित-
क्षोणीमण्डलपण्डितादृतयश पुष्पोत्मवाऽऽमोदवान् ।
श्रीमद्रौविलियम्महाऽमरतरोस्सन्तानदेवद्रुमो
भूयाद्भारतभूमिभूरिविभवाऽऽनिर्माणभूरिश्रवा ॥ १ ॥
जीव्याद्दुन्मिपदक्षरक्षितानिजप्राज्यप्रजामानस-
ध्वान्तध्वंसदिदृक्षुमज्जनमनोमायचकोरोत्मव ।
आनन्दाऽम्बुधिपूरवर्द्धनसुहृद्वाराणसीवासिना-
ञ्चक्षुस्तर्पणनिराकरिष्णुकिरणश्च्योततसुधो राजराट् ॥ २ ॥
राज्ञा सन्ततिनिर्विशेषममुया पालिष्यमाणा प्रजा
प्रागेव प्रभुणा विमृश्य जगताञ्चक्रे न भेदस्तयो ।
स्थाने सस्कृतवागतो विभजते ताभ्यान्न नून च ते
सन्तत्या प्रजया सहाऽस्ति न भिदा सा सैव सा सैवयत् ॥ ३ ॥

पुरातत्त्वप्राज्ञाऽस्तमनसमयाऽनन्तरनिशा नृपैरक्ष प्राये परिणत निशीथान्धतमसाम् ।
प्रगाढव्यामूढा चिरमधिशयाना ऽय तपने प्रतापे विक्टोर्य्या उदित इव जागर्त्ति जगती ४॥

धन्ये भारतभूमि दृष्य गजनीभूपैश्च नोपप्लुता
शेते सम्प्रति सूर्य्यसूनुसदने चङ्गेजखान खल ।
लीन क्वाऽपि कलङ्कपङ्ककलुषस्साहिबुकिरा गूरका
चित्ते न स्मर कैकुवादरुकुनुद्दीनालगानामपि ॥ ५ ॥
काफरो मलिकः प्रसह्य भवतीं क्लीबोऽपि सम्भुक्तवान्
इत्येषैव कथा मृधा ननु कथङ्क्लीबो हि भोक्ता भवेत् ।
चिन्तामुञ्झ मुबारकागमनजा खिल्जीकुलन्नाऽधुना
दीने दुष्टमना पुनर्नहि अलाउद्दीन उत्पत्स्यते ॥ ६ ॥

गङ्गाधरशास्त्री तैलङ्ग ।

यश शशिशतायते सुरनगायते याचक कृपाणलतिका *[illegible]* ।

मतिश्च धिषणायते मधुरमायते यस्य नागमी विजयिनामुनो मम दृशो सुधीधायते ॥१॥

गन्धर्वौघपुरक्षतिभुभितया धृत्याऽम्बुधौ योऽर्पयन् ।
गाधत्व हमतीन सेतुकरणप्राप्तश्रम राघवम् ॥
धर्म्यं कर्म दिवानिश विपुलयन् विद्वज्जनान्मोदयन् ।
रक्षाङ्गीयुवराज एष जगतामब्दाञ्छत जीवतात् ॥ २ ॥

रामकृष्णशास्त्रिण पट्टवर्धनस्यैते श्लोका ।

सूनुस्तस्या भारतीं मेदिनीं यो यातो यातोऽञ्चयुगराजपुञ्ज ।
द्रष्टु राज्य यौवराज्ये विराजन् जेजन्याया नातिविद्याप्रगल्भ ॥ १ ॥
मोय सदा विजयता जयता वरिष्ठो यो नेत्रयुग्मगमताक्तामिवातनोति ।
राजवर्ती विरचयन् भुवमित्यजस्र काशीपते समभिलष्यति रामकृष्ण ॥२॥

पण्डित राजारामशास्त्री महोदलोपन्न ।

यदा प्रिंसाफ्वेल्स सुरधुनिपरम्पारमभज-
स्तदस्यातिथ्यर्थं स्वजनसहिता काशिकपुरी ।
ज्वलद्दीपच्छ्रोज्वलकनकमूर्ति धृतवती
तदस्मै भव्या सा वितरति पुरोप्रोक्तवपुषा ॥ १ ॥

राममिश्रशास्त्री साङ्ख्यशास्त्राध्यापक ।

कुर्वन् कामपि कौमुदीं सुमनसा सम्मोददानव्रता
सान्द्रानन्दविपक्षभूपरमणामन्तापचिन्तामणि ।
शृङ्गारागमदेशिकस्त्रिजगतामानन्दनाडिन्धमो
रुन्द्वा सार्वदिकीं निरन्तरतमस्तन्द्राल्लुता पार्थिव ॥ १ ॥
तापोन्मुक्तन्दिवसमखिल शर्वरी नाति शीता
स्थाने स्थाने स्वयमिह जनास्सर्वविद्या पठन्ति ।
सिंहैस्सार्द्धं विहरति गणः मैन्युर शान्तवैर-
स्तत्ते वीर्य्यैरिह परिणत भारत वर्षमेतत् ॥ २ ॥
चिरायुस्त्वञ्चिर पाहि निखिला मेदिनीमिमाम् ।
चिरञ्च सकलान् शाधि कायाशास्त्रयि युज्यताम् ॥ ३ ॥

द्व्यक्षरानुप्रासीयम् ।

दुरोदरदरी दारा दर्दुरादरदुर्दरी । ददारोदारदोद्दूरादादरादरदाददा ॥ १ ॥

दुरोदरेति दुरोदरस्य दरी दारा अतिशयेन दारकः सयन्तु दर्दुरात्तन्नामकपर्वताददरमन्यून यथास्यात्तथा दुर्दरः दुष्प्रकम्प एतादृशोभगवान् आदरात् अर अत्यन्त दाद दान ददातीति अरदादा आदरपूर्वकातिशयदानकर्त्ता सन् उदारद महादानेन दूरात् ददार व्यजयत इत्यर्थ ॥

चिरतैरत्नौघै सवलिनिलयोन्मीलनविधौ ।
विधातावैदग्ध्यो व्यदधत न किं वाथ निकलाम् ॥
इमा कीर्ति कीर्त्या कविसमुचित रत्ननिचय
नचेय तद्वर्त्ते ऽप्यथ च खलु नीचैर्विरचनम् ॥ २ ॥

अस्यार्थ विधात्राहि प्रथमतो वलिनिलय सृष्ट्वा कविसमुचितेन रत्नेनन्नपूरणीय पूरितचेन्नीचैर्नस्थापनीयमेव भवत्कीर्त्या । धवलीकरणाभावप्रसङ्गात् नहि भवत्कीर्तिरधोध प्रविशति महात्मना कीर्त्ते स्वभावतएवोद्धर्वोद्धर्वाक्रमणस्य सिद्धत्वादिति ॥ २ ॥

सरयूप्रसादस्याशिषस्तुपन्तुतराम् ।

स्वस्तिश्रीमानुदन्वत्परिखवसुमतीमण्डलाऽऽखण्डलश्री-
रदण्डाऽखण्ड्यदण्डो भुवनजनशिरोमण्डनद्धुण्डनश्री ।
विद्वद्वृन्दप्रवन्ध प्रविदितसुयशोराशिरिंग्लेण्डसम्राट्
सूनुर्विक्टोरियाया जगति विजयता प्रेंसआफ्वेल्सवीर ॥ १ ॥

आदिरसस्तत्रप्रजात्वचिक्रूपा हीनोजहांगीरगा-
हौरङ्गजेवपिकीतिवृत्तिविमुख शाहोवहादुर्तथा ।
फर्रुख्सीयरनादिरावहमदोऽब्दालीमुहम्मद्महा-
राष्ट्रीयाश्चगुलामकादिर इमे भूपा विलोपङ्गता ॥ ८ ॥
एते ऽन्ये च भवद्भुजो निजभुजप्राज्यप्रतापोदयाद्
दुर्दर्शाननकान्तयोऽपि मलिना लीलानना पातकै ।
ये त्वाम्प्रावितवन्त उष्णरुधिरैस्त्वात्प्रजानाञ्च तान
खादन्त्यद्य तवोदरात्त सतीहत क्रिमीणाङ्गणा ॥ ९ ॥

त्वामत्यन्तमुपप्लुतामशरणान्निर्द्धार्य्यविश्वम्भरो
रक्षाकर्मणि ते न्ययोजयदये विश्वम्भरेऽनुग्रहात् ।
विक्टोरीममृतायमानचरिता श्रोतु श्रुतौ श्रीमतीम्
देवैश्चाद्यविगीयमानयशसम्पातालआशीविषै ॥ १० ॥

पण्डितश्रीतन्नप्रसादचिपाठिन ।

श्रीमद्विजयिनीनाम देवी विजयतेतराम् ।
बिभर्त्ति भारत वर्षं या दूरस्थापि मातृवत् ॥ १ ॥
तदात्मज श्रीयुतनेल्सनाथएट्वर्डआल्बर्टशुभाभिधान ।
दिदृक्षया भारतभूमिमेतामलङ्करोति स्वपदाब्जाभ्याम् ॥ २ ॥
यस्य स्फुरच्चन्द्रकराभिराम यशोविकीर्णं भुवनत्रयेऽपि ।
सुराङ्गना नन्दनकेलिकाले सार्द्धं सकान्तैरुपवीणयन्ति ॥ ३ ॥
यस्य प्रचण्डाशुनिभ प्रतापो निमीलयञ्छात्रवकैरवाणि ।
विकाससमासादयति प्रकाम समस्तसामन्तसरोरुहाणि ॥ ४ ॥
यस्मिन् समाकाङ्क्षति देशमेत निरीक्षितु देनसमंप्रभाते ।
काले ववर्षुर्जलदा जलानि जाता धरित्री च समृद्धमस्या ॥ ५ ॥
यस्य दर्शनदानेच्छानुग्रहेण महात्मन ।
एतस्मिन् भारते वर्षे परा प्रीति प्रतीयते ॥ ६ ॥
हे श्रीमद्युवराज ! राजनिवहे ससेव्यपादाम्बुज
पातु त्वाञ्जगदीश्वरो जगदिद य स्वेच्छया सृष्टवान् ।
यावद्भूमिमिमा बिभर्त्ति भुजगस्तावज्जनन्या हृदि
प्रेमाण परम सृजन्निजजनानस्मान् सदा पालय ॥ ७ ॥

* इन्दोरनिवासिश्रीमकरध्वजसिंहप्रेषितम् ।

हिन्दुस्थानमिदम्सदासुखकर सर्वैर्गुणै सयुत
नानोत्पन्ननिधि महाधनखनि सद्बुद्धिसभूषितम् ।
इङ्लेंडीयनृपेण क्षत्रपतिना सन्मानित सत्कृत
तस्मिन् या निवसन्ति तत्प्रकृतयो वर्तन्तु नार्योचितम् ॥ १ ॥
अस्मिस्तु भारते वर्षे वहवो रघुदेशपा ।
तेषां तु नरदेवाना स्वामिनी सगुणा समा ॥ २ ॥

* एतस्य कवितायां सुखान्, पात, इत्यादानि वहूनि स्खलितानि सति ॥

विक्टोरिया महाराणीलेंडेलॅंदनपालिनी युरोपामेरिकाराज्ञी चैशियाफ्रिकभागपा ३ ॥
आस्ट्रेलियालभूपाला श्रीलदननिवासिनी मनत्रालयुता मान्वी प्रिंसाल्बर्तस्य कामिनी ४
ल्दनराजधानीय द्वीपेग्रेट्ब्रिटने स्थिते एतद्राष्ट्रस्य भूपालस्तृतीयोजार्जउच्यते ॥ ५ ॥
तस्य पुत्रो ऽस्ति चेड्वर्टा ड्यूकआफ्केण्ट उच्यते खनेत्रवसिन्दुमिते सने क्रिस्तक्षमानिधे ६

नष्टो ऽयलदनाधीशस्ततो ज्येष्टोऽस्य नदनः ।
जार्जश्चतुर्थो भूपालस्तद्विलियम् चतुर्थक ॥ ७ ॥
अयजार्जानुजश्चापि नष्टो ऽभूत्तदनन्तरम् ।
तत सिंहासन प्राप चेय विक्टोरिया नृपा ॥ ८ ॥
नवैकाष्टैकसख्याके सनेऽस्या जन्मवर्णितम् ।
तथा सप्तत्रिवसिन्दो सन प्रोक्तोऽभिषिचने ॥ ९ ॥
तत साराजराजेशा शक्तिमाञ्छक्तिरूपिणी ।
जर्मनीसाक्सकोवर्गसस्थानाधिपवशज ॥ १० ॥
प्रिंसाल्बर्त पातिं चक्रे शिव मत्वाशेवाभवत्
पचकन्याश्चतु पुत्राश्चाल्मदैवयोगत ॥ ११ ॥
तेषा ज्येष्ठ श्रेष्ठदाक्षिण्यशीलो विद्याप्रज्ञोवीरतौदार्य्यपात्र ।
नीतिज्ञानी धर्म्मपाल सदा य, सर्वे प्रेय सूनृतागीर्यथैव ॥ १२ ॥
किं वर्णयामि तव राज्यगुणान्नृपाल किं वर्णयामि तव राष्ट्रसुखान्कृपाल ।
किं वर्णयामि नयनीतिगुणप्रकारान् वृत्तान् पुरा नृपतिभिः कविभिश्चप्रोक्तान् १३॥

भो राजन् भवता भवज्जनपदेष्वागम्यते साम्विद
स्थातव्य सुचिरसु भूमिषु सुख सभुज्यता भोजनम् ।
श्रोतव्य शुभगीतकीर्तिपटल सर्वेशनामामृत
भोक्तव्य निखिलोपभोगभुवन सतुष्यता भारतम् ॥ १ ॥

पाण्डेया श्रीकन्हैयालालशर्माण ।
कृचियाकोल: श्रीमद्युवराजप्रशस्ति: ॥

इलण्डस्य शिखामणिर्नृपगुणग्रामस्य धामाद्भुत-
मापन्नार्त्तिहर पराक्रमघन: सौजन्यवारा निधि:
ज्येष्ठोऽय नरराजभूषणमहाराज्ञीकुमार: सुधी-
र्जीयाद्वर्षगत स्ववशतरणि: श्रेष्ठो गुणग्राहिणाम् ॥ १ ॥

मत्तर्पदसमेनाकुलकालितचतुःसीमभूभागमध्ये,
मत्ताहन्यासभामेरसञ्चिरकरैः सादिभिः शोभमानः ।
नेत्रैश्चापीयमानो रजनियतिरिवप्रोत्सुकैर्मानवानाम् ,
भावी भर्त्ता पृथिव्या अधिनगरिवसन् जयतान्नः सुखाय ॥ २ ॥
द्वारे द्वारे पताका नवतरणिलसद्रक्तवासा सुहासा ,
पूर्णैः कुम्भैश्च पीनोन्नतकुचसदृशैराचिताहारिहारा ।
रम्भा स्तम्भोरुकान्तिर्हृतजननयना चारुदापाचतसा,
हृष्टा यत्सङ्गमे च प्रकृतनवबधूभूषणा राजधानी ॥ ३ ॥
दत्ता चेद्भवताऽप्रयत्नसुलभा दृष्टिश्चिरप्रार्थना
राजन् भारतमातर क्षणमिह स्थित्वा कटाक्षीकुरु ।
एषा कोणगता यशःपरिमलै रापूरयन्ती दिशः
हा कष्ट सुतदुःखदर्शनकृशा शोकाग्निनादह्यते ॥ ४ ॥
त्वं चेत्प्रीतिमुराकरोषि नितरामाखेटलीलादिषु
गन्ताकं प्रति शोकदग्धहृदया दुर्नीतिभिः पीडिता ।
श्रीमन् भारतकामिनी त्वदचकसन्तापमावेदयेत्
तेनप्रार्थितदर्शनः सकृदहो किञ्चिद्भवानुच्यते ॥ ५ ॥
दीनानां खलुजीर्णकर्पटभृतां क्षुत्पीडितानां गृहे
गत्वा मा त्वनयारिणा द्विगुणित दुःख त्वदालोकनात् ।
दैवाल्लोचनगोचरो हि शमयेरित्येव सम्प्रार्थ्यसे
किं कार्य्य नु भवेद्विलोक्य धनिनां प्रासादशोभा गते ॥ ६ ॥
यस्मिन् राजगुणोज्ज्वला नृपतयः श्रीरामचन्द्रादयो
वीरा वीर्य्यविभूतिभीरणविधौ क्लृप्तामरीवल्लभाः ।
जाता लण्डनशुक्तिमौक्तिकमणे भीमादयो यत्र च
तस्मिन् राजशिखामणिप्रणयिनी ह्याज्ञा जनन्यास्तव ॥ ७ ॥
तस्यास्त्वं हि सुराजनातिकुशलो यातो ऽसि सत्पुत्रताम्
सा श्रीमन्नृपमौलिभूषणमणी राज्य यथा रक्षति ।
राज्यं प्राप्य तथैव दीनहृदयानन्दो भवान् रक्षतु
वाक्चेतस्तनुभिस्तमेव सततं सर्व्वेश्वरं प्रार्थये ॥ ८ ॥

पण्डितवेचारामत्रिपाठी।

भियमतिरचिरै स्वकर्मजातैर्यशमुर नीतवतोऽतिविक्रमस्य ।
उदयमुपगतस्य यौवराज्ये महति पदे स्पृहणीयदर्शनस्य ॥ १ ॥
जगति विदितमागम निशम्य क्षितिरियमस्ति विशेषहर्षपूर्णा ।
निजपतिमभिलक्ष्य भाग्यलभ्य कृतमतिमात्मनि रागरम्परूपा ॥ २ ॥
यमजीजनन्निखिलभूवलय किल शासनी स्वयशसा धवला
स्पृहणीयशासनमदभ्रगुणं स जयेदुदग्रभुजदण्डवल ॥ ३ ॥
जनता मुदा नयनपद्मचय रचयन्ति सप्रति कृतातिदयम् ।
प्रति य लुलोकयिषयालिलय विक्रमन्तमाजिविहितारिजयम् ॥ ४ ॥
सकलानिमङ्गलमयान्यननानवलोक्य हृष्यति समस्तमन ।
वरराजराजिरचुनाधिकया प्रभया विभाति हितभूषणया ॥ ५ ॥
करिवृन्दवृ हितमजस्त्ररत हरिहेषित हृदयहारि ततम् ।
वणिजा विभाति महता मुदिता प्रतिरथ्यमालिराधिकाद्धाचिता ॥ ६ ॥
सकला गृहा अमितभामहिता महिमावदातयुवराजकृते ।
नगरी प्रसाधनमुपेत्य भृश निजनाथदर्शनमहोत्सवमैत् ॥ ७ ॥
समेषामस्माक समुदयमय वाञ्छितुमना इशा स्वीयान् द्रष्टु कृतमतिरुदाराकृतिगुण ।
दधान कारुण्य स्वयमयति मन्ये क्षितिरिय भवित्री पूर्णाद्धांनजधवसुयोगात्तमहिमा ॥८॥

श्रीमच्छ्री १०८ युवराजार्थं नवपुरस्थ श्री सखीस्वामिचौफ
स्वर्गवासपण्डितराधाक्षणविरचिता श्लोका ।

श्रीलण्डनेशपदवीयदपीहनिश्चैर्दूरस्थितैर्दुरधिगम्यतया दुरापा ।
तावत्तथापि मनसामरमोत्सुकाना सकल्पकल्पलतिकेवमनोर्थदात्री ॥ १ ॥
महाराज्ञी धन्या यदनुमतित: सर्वजगता शुभ जात सर्व विविधसुखसिद्धयैतत्कृपया ।
भवेदीशूखृष्ट परमकरुणायुक्तमनसा सपुत्रा सामात्या निजजनगणैर्मङ्गल्युता ॥३॥
तयेवमानन्दिनमानयेत यतो नतेनन्दनतेनतोय
नयेततयन्नियततयेन चकासतेमध्यमतेसकाच [॥ ४ ॥

एकाक्षर ।

ततास्त तेतुत·तीत ततोतिततितातततम् । तातास्तनतुतातेतुते: तु:ततततु॥ ॥८॥
समायात दृष्ट्वा निजनृपवर लोकनिचया महद्भाग्य मत्वा हृषितमनस॰॰॰ ।

दृष्टा सम्प्रार्थ्यते भवतु चिरजीवि नमतुल यतास्माकनगेभसतुकम्णापाल्नकृते; ॥६॥

सृष्ट्यैगुणानामतिरर्यवृष्ट्यै तुष्ट्यैगणानामुमदोतिपुष्ट्यै ।
दृष्ट्यै प्रभूणा मनरोतिदृष्ट्यै जुष्ट्यैसता गर्थनिरेपदृष्ट्यै ॥ ७ ॥
श्रीलण्डनेशम्य कृपाकटाक्षैर्लब्धप्रतिष्ठा सतत प्रवृत्ता ।
तत्स्नेहयोगाद्वयमत्र मान्या ईशो भवेदत्र सुसिद्धिकर्ता ॥ ८ ॥

लक्ष्मीनिर्वेददक्षैर्बहुतरनिरुतैराश्रयी भाव्यमानो
मानीष्वानम्रमौलिच्युतजलजरजोरञ्जिताद्विविपक्षै ।
पक्षैः मत्का यनक्षैरधारितसकलद्वेषभाजा निता ता
तान्ता यस्माद्विभतिर्भुवि वत युवराट् वर्त्ततात्सोलरर्त ॥ १ ॥

श्यङ्गनायमकोयम् ।

साम्राज्यश्रियमाश्रिता परिपत पृथ्वीन्द्रमौलि युन-
स्तविस्तम्भपरिस्खलत्पदयुगश्रुलत्सूनरामेधसम् ।
हास्यालक्तपरपरेत्रपरितः कीत्तप्रनापद्वयी
सूर्याच द्रममौस्त्रय सुमनसामत्यातुमारोहति ॥ २ ॥
लोकालोकनलोल्लोचनचण प्राणन्तियद्वन्दिनो
वृन्दीभयाभिभावयान्त वदनमन्दादरचान्दरे ।
युक्त युक्तिभिरुक्तिभक्तविजय जेगीयमानयशः
सान्द्र यन्नृपचन्द्रच द्रकचलत्मचामर नामरे ॥ ३ ॥
हस्तालम्बविलम्बलग्नपरैराजोपराजे पुरा-
सौभाग्यातिशयाचयाय धात्री विश्रामितानश्रमम् ।
शेषाशेषविशेषशेमुषिरपि सीयोत्तमाङ्के दध-
द्धस्तेनैत्रममस्तवस्तुसपादि श्रीमानमीमदधे ॥ ४ ॥
भूमुषणेराजकराजधानी निधानकीर्तेः परिकीर्तियतः ।
आधानपुण्णीयमिमादशीर्णाः स मन्त्रिणोमालिविधीयिदध्युः ॥ ५ ॥

काशिकपाठशालाया न्यायशास्त्राध्यापक, कालीप्रसादशिरोमणि ।

पृथ्वीशप्रासरजस्तव वितरणम दर्शनात्कल्पवृक्षो
नैति क्षामम्लेऽस्मिन् विबुरपि भवतः कीर्त्तिदीतीसमीक्ष्य

चिन्ताक्रुष्टः क्रमेण क्षपति मलिनतामेति चेति द्विजोऽहम्
धीरःकालिप्रसादस्तव शिवमनिश प्रार्थयामीदृकाश्याम् ॥ १ ॥
कीर्त्तिकीर्तयितु क्षमो भवति कस्ते भारते साम्प्रत
नैवाभूत्नभविष्यतीहि नभवत्ययापि कश्याप्यहो ।
श्रीविश्वेशसमीपतः प्रतिदिनयाचत्रा ममैषा शुभा
भूयात्माभवताश्चिर शुभकारीदिङ्मण्डलव्यापिनी ॥ २ ॥

श्रीमत्कालिलक्ष्मीनाथविरचितम् वादशार्दूलाष्टकमिदम् ।

वातो वाति भयेन यस्य शशभृत्पुष्णाति सर्वौषधी-
र्मार्त्तण्डस्तपति त्यजत्यनितरा नो स्वावधि वारिधिः ।
हेमाद्रिप्रमुखा धरा गुरुभरा बिभ्रत्यगास्सर्वदा
तत्त्वाम्पातविनाशिकिञ्चनमहः पृथ्वीन्द्रचूडामणे ॥ १ ॥
हेभूपेन्द्र महेन्द्रतोऽपिभवतः श्रीरस्ति दिष्ट्याधिका-
सर्वे भूपतयो ऽर्पयन्तिमनति दिष्ट्या बलिन्ते मुदा ।
श्रीमत्मन्मातिभृङ्गवद्वपुरिद दिष्ट्या समालोकित
दिष्ट्या त्वत्करुणेदृशी समुदिता सम्या प्रजाया प्रभो ॥ २ ॥
शीतांशोरिवकैरवाणि सरसीजन्मानिवाहर्पतेः
क्षुत्क्षामा अमृतोपमातिरुचिरम्वन्नाम्बराशेरिव ।
उद्विग्नाश्च पिपासयेन सरसोनिसूत्वाइवोच्चैनिधे-
र्लोभादेवकृतान्नृपेन्द्र भवतस्तुष्टानि चेतासि नः ॥ ३ ॥
शौर्य्यादार्यगभीरतादिसुगुणग्रामाभिरामः पाति-
र्लब्धोऽस्माभिरयेनया दृग्गुनाश्शावतसोभवान् ।
पूर्वैःपर्वतरैरपीदृम्भुजैः किम्प्रापिनादृक्पति-
र्भ्याभव्यविभागतोहि नियते स्वर्गेस्समप्राप्यते ॥ ४ ॥
पृथ्वीचक्रसमस्तशक्रमुकुटप्रद्योतमानामल
प्राच्यानर्घमणिच्छविराजलसत्पादाब्जसत्पीठिका ।
श्रीराज्ञी नृपदेवता ससमये प्रासूत राजेन्द्रय
सन्नपातुमिहागतोऽसि यदि न श्रेय परकिंतत ॥ ५ ॥
सर्वलाचकशक्रप्रमुदितमनस्ते वय वीक्षणीया
गाम्भीर्यगम्भराया कल्पयतु भवति प्रोष्टमङ्गल्यरागिम ।

प्रत्यर्थितोमदान्प्रशमनचणनेत्यानुयायाश्चिमीमे-
सोमेशाद्या श्रियसामपिच निदधतुल्यरूपास्ततप्रजास् ॥ ६ ॥
स्वस्तिश्रीमद्धरसुप्रथितगुणगणे इशोभिताभूमिरेषा
मुद्गानो मन्दमन्द विकोशितमनसां श्रीमतासञ्चरन्ति ।
मोदन्तेन सुवर्गास्मगिनानिरद श्लाघते भाग्यरत्ता
निद्रासस्मश्रयन्ते प्रमदभरभृतप्राज्यदानादतन्नाम् ॥ ७ ॥
सार्द्धसन्मन्त्रिवर्गैरत्र वहुविधैश्शौर्य्यसर्यनुम्यमं ये
रेतयालोसजानामनुभवमुग्तिस्ससतूरतस्मनभूपे ।
एतामालप्रजानामयचयमभिनो वर्द्धयित्वाऽतुलाधे -
श्रीराज्ञीदक्षरोनप्राक्रमनदनेनतनोऽर्कोभजाशु ॥ ८ ॥
लक्ष्मीनारायणकविविरचितमष्टकमिदयथाधिपणम् ।
सादरमनन्योत्रयपर मुदितोभूयान्नृपप्रवर ॥ ९ ॥
दृगवहूयक्ष्महीमाने वत्सरे वैक्रमेशुभे ।
पौषेमासिसितेपक्षे भौमेऽष्टम्यामिदंकृतम् ॥ १० ॥

पण्डित माधोदास जिला स्कूल सागर।

इङ्गलण्डीयगिरा क्रियेटरडाति प्रस्तयते योर्थद
श्रीशोवर्णचतुष्टयेथ यजनेयोल्लापिमर्थास्सते ।
स्येयात्सो * रमनामने मम तनादेयाजनेमङ्गल-
माधोन्नाममनोविधि दूगणपदाचसर्हतानाऽति ॥ १ ॥
श्रीश्रीश्रीगोष्पदाब्जेद्युनुपमानिभोऽनेन्तनाम् याद्वितीये
प्रार्थ्यैनेत्यधीरैर्नुतिनतिततिभिःराजलक्ष्म्योभवा ये ।
यामाछायातलस्था श्रुतिगतकुनृपप्राणहृश्चीलिजाल
ज्वालामालातिनप्ताः शिशिरतरमन्दमुन्मातापासुस्वपन्ति ॥ २ ॥
स्वस्तिश्रामद्राजराजान्वितस प्रासप्रोद्यत्सन्मणिद्योतिताग्रो
चञ्चद्रश्मिप्रोत्समनुजालमालस्तोमव्योमाग्रीशसोमातपत्रे
शुक्लश्यामाहस्त्रियामागराजन्छ्श्वद्वीजचामरैराज्यमाने
श्रीमद्राज्ञीकीननिकटोरियातेभूयो भूयःस्वस्तिभूयात्प्रतापे ॥ ३ ॥

---

* नित्यम ।

श्रीप्रिंसाफ़नेट्मसूर्यो निजकरनिकरैर्द्योतयन्योदिगतान्
स्वीयानुत्फुल्लकजानपिरथचरणान्मोदयन्योजयन्य ।
प्राज्येराज्येशुभेस्मिन् प्रतपतिजनितानन्दकन्दान्वहन्सन्
* सत्सूर्योप्यस्यराज्ये वितरति किरणान् प्रत्यह नास्तमोते ॥ ४ ॥
यद्दोर्दण्डप्रचण्डडिंडिमडमत्कारप्रतापानल-
ज्वालाजर्जरिताभवन्तिरिपवो येराजनातिप्नका: ।
येचान्येचमहीभृतप्रभृतयो यस्यानुकम्पार्थिनो
प्रत्यर्चन्तिनमन्ति य सुवलिभिर्जीयात्तुक्षितीमण्टन ॥ ५ ॥
श्रीमन्मार्तण्डप्रिन्साफ़्विलसकरचयैरन्मिषन्नेत्रमाल्
श्रीड्यूकेडिन्वरेन्टुप्रमुदितहृदयोनष्टतामिस्त्रजाल
भ्राजत्सेन्तुजोन्स्शालापठितविविधसच्छास्त्रजाल्सुभाल ।
माधोदास प्रणामरचयतिसततशिक्षक सागरस्य ॥ ६ ॥

श्री वै० वा० प० राधाकृष्णकृत वैवाहिक वर्णम् ।

राजाधिराजोयुवराजमुख्य: प्रिंसाल्बयेनेन्स्वनामधारी ।
जीयाच्चिरमातृसुखार्थसिद्धौ लोकोपकारायचपण्डितानां ॥ १ ॥
सन्मित्रबन्धुसुहृद्दामनस प्रसादे सोत्साहसज्जनसुसभ्यसमाजजुष्टे ।
तुष्टेतथानिजगणेविविधोपचारैर्वैवाहिकोनिधिरभूदतिमङ्गलाढ्य ॥ २ ॥
योजागजानेकसुपोतयुक्ता डैन्मार्कदेशाधिपराजकन्या ।
तन्नैतुमुत्कान्नपिलण्डनेशा: प्रत्युद्गमार्थंययुरादिवर्गा: ॥ ३ ॥
कुमारिकापष्टिमिता सितैश्च वस्त्रै सपुष्पैरपिपुष्पपात्रै ।
युक्ता सहर्षा प्रतिमङ्गलार्थमुपस्थितामार्गगताविरेजु: ॥ ४ ॥
तल्लोकसम्भ्रममिलद्वरहस्तिवाजिसघट्टमकुलतरनृपमार्गगामी ।
त्वारद्वयू:समन्तिरहासुवर्गमुख्यैरतुङ्गवाहिदशकटीपुरमापपत्यु: ॥ ५ ॥
सौभाग्यभाग्यादपदेसुमुख्येगता:समाजागिरिजाश्रयेतु ।
वैवाहिककर्मतदाबभूव तद्रीतिविज्ञैरतिमुख्यवर्गैं ॥ ६ ॥
गन्धसारिकृतेनसेचनकर्मणाकृतपांशुक मार्जनीकृतशोधनै सततपथोविमलीकृत ।
गन्धवाहसुगन्धगन्धितगन्धमोदमनोहर वारवारणवारिसिञ्चितमार्गमध्यमुदेशक ॥७॥

---

* चिन्त्यम् ।

वाद्यसंनर्गायकगानशब्दे वन्दीरवैराकसदुक्तिभिश्च ।
यद्न्यत्रयन्त्रादिकृतैस्तथाभूतंहूयानिनादैरतिकौतुकंच ॥ ८ ॥
गजावलीभिश्चहयावलीभिश्चहयावलीभिर्जनावलीभिर्वनितावलीभि ।
दीपावलीपुष्पफलावलीभिः सशोभितरत्नगरावलीभि ॥ ९ ॥
हर्षाढ्यसपन्नसमाजयुग्म योगेतिशोभानिशदातदाभूत् ।
यल्लोककल्लोलविलोललोलालालित्यलीलालल्तेममाजे ॥ १० ॥
काचादिदीपामधुकिट्टवर्त्यो रत्नप्रभाभानुतिविशेषरूपाः ।
वर्णैरनेकैर्वयताभिरामा वैवाहिकेमङ्गलकर्म्ममुख्ये ॥ ११ ॥
वरेवरस्थानगते जनाना प्रसन्नातिभूद्वनितागणाना ।
सुवासिकर्पूरसुगन्धितैले मनोहरसर्म्मभूत्तदानीम् ॥ १२ ॥
नानासुगन्धान्वितपुष्पमाल्यमालापरिव्ययुतमौक्तिकमुख्यनद्धा ।
वधूवावरस्यमुकुटोतुमापरिपाणिपीडेर्व्रीडेवधूवरगतेसुखदेजनानाम् १३॥
रणरणोचितचारुचमत्कृते गतसुरङ्गमभक्तिगणैर्युते ।
वरवराहसुदक्षिणरक्षितेजनरवःशुशुभेसुरसत्पथे ॥ १४ ॥
जज्वल्यमानानलतेनसाक्षात्प्रद्योतिताभूदतिचन्द्रिकेव ।
दृष्टिप्रसादायसुधांशुतुल्या वर्त्याकृतिस्तत्रसुखविचित्र ॥ १५ ॥
इत्थविवाहेविविधोपचारैः शोभाविशेषेणसमप्रमासीत ।
आसीदतीवादरजातिराद्या मुख्येषुयोग्येषुयथायथहि ॥ १६ ॥
आरोग्यतास्याश्चिरजीविताच भूयात्ततोवृद्धिरनेकरूपा ।
प्रीत्यैचकन्यावरयोर्द्वयोर्हिसरक्षणचापिविभोःप्रसादात् ॥ १७ ॥
यद्यप्यहोलण्डनलोकसघे दृष्टसुखनेत्रपथात्तुसाक्षात् ।
आनन्दजातहितथापिचात्र सप्राप्स्यतेतद्वदनेकरूप ॥ १८ ॥
प्राप्तव्यराजेधिगतेस्वमानु करिष्यतेनेकविधासुदृष्टि ।
स्वातन्त्र्यभावेचविशेषबोधे भविष्यतीङ्ग्लण्डजनैस्तुतुल्य ॥ १९ ॥
प्राप्तस्वलोक्यस्यदिदृक्षयोक्त स्वामात्यवर्गौयुवराजमुख्य ।
समीक्ष्यतेभरतवर्षलोकः प्राप्स्यत्यतिहर्षविविधार्थवृद्धम् ॥ २० ॥
विवाहेलण्डनेशस्य त्रिषट्ष्टैकवत्सरे ।
मार्चमासेदशार्येहि गृहसत्र सरेभवत् ॥ २१ ॥
खयुग्मनन्दैकमितेतुवर्षे तथात्रिषट्तारभुव प्रसिद्धे ।
सपादितसत्कवनीयमुख्ये वैवाहिकवर्णनमङ्गलहि ॥ २२ ॥
राधाकृष्णश्चसारेद्वर्णनमाङ्गिवाटक कवय मजनाश्चावमुद्रिनाम्युम्भावन ।

गोमूत्रिका ।

पा	या	ति	श्री	म	ती	मू	नु	स्व	ज	ना	न	न्द	दा	य	क
पा	या	त्त	श्री	म	ती	मू	नु	विं	ज	या	न	न्द	दा	य	क

अश्वगति ।

पा १	या १८	ति ३	श्री २०	म ५	ती २२	मू ७	नु २४
स्व ९	ज २६	ना ११	न २८	न्द १३	दा ३०	य १५	क ३२
पा १७	या २	त्त १९	श्री ४	म २१	ती ६	मू २३	नु ८
विं २५	ज १०	या २७	न १२	न्द २९	दा १४	य ३१	क १६

कपाटक ।

पा	या	पा
ति	श्री	त्त
म	ती	म
मू	नु	मू
स्व	ज	विं
ना	न	या
न्द	दा	न्द
य	क	य

पायातिश्रीमतीसूनु स्वजनानन्ददायक ।
पायात् स श्रीसतीमूनुर्विजयानन्ददायक ॥

प० मालवीय गदाधरशर्मा
प्रधानाध्यापक मिर्जापूर स्कूल

حلق و صفا و مہر و مروت میں کیا کلام
واقف ہی مردمہ سے بہی ہر ایک خاص و عام

کافی نہ ہو اگر ہو جواہر حزانے میں
ایسا رئیس کوئی نہیں اب زمانے میں ●

قطعہ تاریخ بنیاد شفاخانہ من تصنیف میرزا محمد
برکت اللہ بیگ متخلص بہ ضیا ●

تہہ کس کیے زرشپی ہر سو عیاں ہی
مشہور ان دنوں ہندوستان ہی ●
جہاں دی ہی شفاخانہ کی بنیاد
تصدق ارض زمیں بر آسمان ہی ●
ضیا کو فکر تاریخ اور سو جہد
پرنس آف ویلس کا کیا خوش نشاں ہی ●
سنہ ۱۸۷۶ عیسوی ●

قطعہ تاریخ دیگر بنیاد شفاخانہ ●
دار الشفاے عام مدارس میں ایک بنا
دی اپنے دست خاص سے شہزادہ نے بنا ●
تاریخ صاف صاف یہہ بے ساختہ ہوئی
اب کیا نشان خوش ہی پرنس آف ویلس کا ●

سنہ ۱۸۷۶ عیسوی ●

قطعہ تاریخ بزبان فارسی ●
بہند آمدہ چوں پرنس آف ویلس
جہاں را بآمدن دل شاد کرد ●
دوائے مریضان چو شد چارہ جو
دلالت چہا شرر و مرتاد کرد ●
شکستہ پئے سال شد ہاے دایٔ
شفاخانۂ خوب بنیاد کرد ●
سنہ ۱۸۷۶ عیسوی ●

ہمت سے بھربھری مس و نوجوان میں رہی
سکہ اسي کے ضرب کا ہندوستان میں ہی *

بنگالہ علاقہ سے جو عروس ظفر نشان
سرکش کو راہ راست دکھاؤے ہر ایک آن *
چمکي ہی معرکہ میں جو اکبر یہ برق سان
چھپ جاتا گئي ہی کاپکے جلي بس سحاب *

دریا کا دل دہل گیا ہی اس کے آب سے
موجوں کے پانوں تکنے نہیں اضطراب سے *

رستم کا دل لرزتا ہی فوج ایسي زرق رق
اک اک جوان رہي دست مردانگي میں عرق *
ہاتہوں میں تیغ لمعہ زر مار زبر درق
جن کي بہادري کا ہی عل تا یہ عرش و شرق *

دشمن تغیر جنگ و جدل ہیں مرے ہوئے
سرکش جہاں کے پانوں پہ ہیں سر دہرے ہوئے *

بس روک بے عناں کمیت قلم امیر
شمہ بھی وصف کا کیا ہونا رقم امیر *
حاتق سے ہاتھ اوٹھا کے یہہ کہ دمبدم امیر
بانی رہے سوارۂ جاہ و حشم امیر *

مالک یہہ تخت و تاج کے تا عمر و شان رہیں
جب تک کہ مہر و ماہ و زمین آسمان رہیں *

لاکہوں میں سنکڑوں میں ہزاروں میں انتخاب
جتا تھیں ہیں مہاہو مرشچندر کا جواب *
روشن ہی فیض ان کا دنیٰ مانند آفتاب
اہل کمال ان کے بدولت ہیں کامیاب *

منکار ہی سخن جو کوئي مشتہری بہو *
ہدیے کي قدر کیا ہو اگر جوہري نہو *

جن کے سبب ہوا یہہ مسدس کا انتظام
ہوتا ہی درج صفحۂ آخر میں ان کا نام *

لاتے ہیں خلق کے روسا ہمیشہ خراج
ہے کوں اور مالک اقلیم و تخت و تاج •
بے رنج و غم ہر اک رعیتش جہاں میں ہے
عدل ان کا بس محیط زمین آسمان میں ہے •
آرام سے ہے خلق خدا ان کے عہد میں
پہونچے مراد کو غربا ان کے عہد میں •
یکساں ہیں سب امیر و گدا ان کے عہد میں
ملتا ہے زندگی کا مزا ان کے عہد میں •
کیوں کر نہ گرد ان کے جوان و مسن پھرے
ستھی ہوئی ایسا کہ ہم سب کے دن پھرے •
اندیشہ لوٹ مار کا نہ رہزنی کا ڈر
سوتے لگائے جاتے جنگل میں بے خطر •
طاقت کسی کی ہے کہ مقابل کرے نظر
وہ قوت اور یہ کہ لئے شہر آتے گہر •
ہر اک جوان بھی تیز ہے اور نگاہ میں
انصاف کہہ رہا ہے کہ یہ بادشاہ ہیں •
لکھتا ہوں اس شجاعت و جرأت کا کچھ بیان
کاغذ پہ سر پٹکتا ہے کلک گہر فشاں •
ہے عالم ہراس میں ہر پیر و نوجوان
دنیا میں ایک طرف ہو تو اس سے مفر کہاں •
مانگیں امان پہاڑ بھی سر اپنا ٹیک کے
بھاگیں حریف تیغ و سپر ان میں پھینک کے •
تیغ ایسی برق دم کہ سپر طالب پناہ
کوہ گراں بھی ہو تو کٹے مثل برگ کاہ •
کھینچیں اگر جلال میں مانند رزم گاہ
پہلو میں آفتاب کے چھپ جائے قرص ماہ •

پھیلی ہی قمقموں کی ضیا مثل ابر بلک
خورشید کی جھلکتی ہی ہر مردمہ فلک *
تارے جھل ہیں گر میں پیدا ہی وہ جھلک
جھک جھک کے دیکھتا ہی زمیں کو مہ فلک *

ہی چاندنی بنی ہوئی دریا کی موج پر
ذرے بھی زمیں کا ستارہ ہی اوج پر *
ان کے مقابلہ میں بھلا کیا کسی کی قدر
ہر جا کہ بادشاہ نشیند مقام صدر *

وہ روز مع حکم ہوئے ہیں جو اہل قدر
ہر ایک نقش پائی مٹانا شروع بدر *
دیتی یہ روشنی رخ پر آب و تاب کی
دروں سے چمک اٹھی ہی ضیا آفتاب کی *

کیا اصل ہی طلا کی جواہر ہی گر تو کیا
کم مایہ جانتے ہیں سب افتخار کا *
یہ بادشاہ وقت ہیں ذکر ان کا کیا بھلا
اسباب ظاہری سے نظر رہا سدا *

ان روشنوں سے عقل کہو و مہ کی دنگ ہی
سادہ ہی گر لباس مگر لاکھ رنگ ہی *
ساقی وہ مے پلا کہ طبیعت کو جوش ہو
دنیا کی کچھ نہ فکر نہ عقبی کا ہوش ہو *

مانند گل عروس سخن سرخ پوش ہو
بلبل بنی زمزمہ میرا سن کر خموش ہو
لکھتا ہوں وصف خسرو عالی جناب کا
قرطاس بن گیا ہی ورق آفتاب کا *

اوس بادشہ کا وصف ہی منظور طبع آج
جس کا تمام مشرق و مغرب ملک ہی راج *

یہہ وہ چمن نہیں کہ جو خواہاں ہو آب کا
پہولا ہوا ہی باغ میں تختہ گلاب کا *
یا رب خوشا زمان و زہے ساعت سعید
ہنگام آمد شہ ہندوستاں رسید *
می داشت چشم مردم دیرینہ شوق دید
مژدہ ہزار جان کہ عیاں شد ہلال عید *
معمور ملک شدہ و ستارہ سعید ساخت
مہر مدی نشان جلالت بلند ساخت *
ہو دل کا مدعا بہا برآیا ہزار شکر
روز سعید حق نے دکہایا ہزار شکر *
رتبہ زمین نے عرش کا پایا ہزار شکر
لندن سے بادشہ ہمرا آیا ہزار شکر *
کس طرح چپ رہے کوئی دیکھے یہ مدر ہو
سب مل کے یہہ کہو کہ سدا اون کے خیر ہو *
دشوار ہی ثنائے جناب ولي عہد
سرمہ ہی خاک پائے جناب ولي عہد *
پایندہ ہی لوائے جناب ولي عہد
مل ہی تمام آئیے جناب ولي عہد *
خلقت کا چار سمت برابر ہجوم ہی
ہر سمت بادشاہ سلامت کی دہوم ہی *
ہر شی جہاں میں آج ہی مصروف اہتمام
گردوں جہکا ہوا ہی ادب سے سلام *
تارے اوتارنے کو لئے ہی مہ تمام
کرتی ہی کہکشاں بہی زمیں سے بہی کلام *
آئینہ بنیں نشاں جو ملے اون کے دار کا
خورشید حلقہ فرش کرے دہوپ چہاوں کا *

شبنم نہیں آب پاش جدا ہی چمن چمن
قمری کے سرو پر یہہ صدا ہی چمن چمن *
بدلا ہی رنگ اب چمن روزگار کا
لو بلبلو پہر آگیا موسم بہار کا
مارک خیال دیکہیں یہہ نیرنگ روزگار
سورج مکہی سے ہر گل خورشید شرمسار *
ہر شاخ کے گلے میں پڑا ہی گلوں کا ہار
شاداب نخل ہوئي پانےکي بوں پہوہار *
طالب ہیں سرو باغ جو برسوں سے آب کے
شبنم لوٹتا رہي ہی قرابے گلاب کے *
نکلے ہیں نکے سرو سہی تہ ادہر اودہر
نرگس کے شوق دید میں ہی چار سو نظر *
غنچے نہي مسکراتے ہیں آپس میں ہمدگر
چہرے گلوں کے سرخ خوشي سے ہیں سربسر *
بلبل چمن میں کلمۂ توحید حق پڑہے
سعدی سے کہدو لائے گلستاں سبق پڑہے *
رنگیں وہ لفظ دیں جو گل یاسمن کا لطف
دکہلاتي ہی کشش نہي جدا بانکپن کا لطف *
شیخرف کہو رہا ہی غنچۂ دہن کا لطف
مصرعوں نے گرد کردیا سرو چمن کا لطف *
غنچوں نے رخ سے پہینک دی چادر حجاب کي
کلیاں چٹک رہي ہیں چمن میں گلاب کي *
ہر بیت نظم طبع کے سانچے میں یوں ڈھلي
جس طرح شاخ گل سے چٹے باغباں کلي *
رنگیں بیانیوں سے ہی عالم میں کہل بلي
خامہ دیکہا رہا ہی سواد ختني جلي *

کہ ای خسرو ملک ہند و فرنگ جہانت مسخر بود بے درنگ *
خلافت بپوند خطا و ختن ز حکمت سنچہ سر خوشتن *
ترا دولت و تیغ یاری دہد ہمیشہ ظفر کامگاری دہد *
مبارک ترا سیر ہندوستاں مبارک قدوم تو با ہندیاں *
درخشاں بود نجم اقبال تو منور بود عالم از نور او *

ساقی مجھے سبو سے مئی سرخ فام دے
سر مست ہوں وہ بادۂ گلگوں کا جام دے *
آنکھوں کو آفتاب کی طلعت مدام دے
عقدی سحر ہو وہ زمانے میں نام دے *
ثمرہ ملے ریاض کا ہندبہ قبول ہو
جو لفظ ہو وہ بارۂ گلستاں کا پھول ہو *
دل چسپ فصل ابر کی آمد نئی فضا
جاں بخش طائراں چمن کا ہی چہچہا *
دھوپی ہی چہرۂ گل برا عطر سے صبا
*سبزہ سے بھی زمیں کا ہی دامن ہرا بھرا *
جھک جھک کے ڈالیوں نے سعادت حصول کی
ندی کوئی گری تو مہک آئی پھول کی *
ہی جانتا نہ چہاتو گھیدری گلوں کی بو
بارش سحاب رحمت حق کی ہی چار سو *
لالہ دیکھا رہا ہی جدا داغ آرزو
گلگشت کر رہی ہی نسیم خجستہ خو *
آئی ہی چمن کے پھولوں کی خوشبو دماغ میں
طاؤس مست جھومتی پھرتی ہیں باغ میں *
ہر ایک نہال جھوم رہا ہی چمن چمن
جاروب کش روش نہ صبا ہی چمن چمن *

درین سال، آن شاه عالیجناب — بشهر بنارس درآمد شتاب *
رعایا بشکر حق کارساز — نهادند سر بر زمین نیاز *
خوشه هر یکی را سرافراز کرد — در لطف بر روی شان باز کرد
بخدام درگاه گردون اساس — ز روی ادب کرد خلق التماس *
که ای شاه والا نو دادی سما — مریض حصول ملموس را *
درین شهر با مادن ای شهریار — برا نا تمام جهان یادگار *
ضرور است تعمیر دارالشفا — که باشد مفید مریض بلا *
ز دست مبارک شه خوشخصال — بنا کند بنیاد آن اسپتال *
خو برسد کسی سال تاریخ را — بگو این شفاخانه گشته بنا *
بمرور آن شاه بعدل و جود — تماشای شهر بنارس نمود *
ز نور قدومش بهنگام شام — شده لطف صبح بنارس تمام *
چنان بود لطف چراغان عیان — که شد نجم داغ دل آسمان *
برای که شه جلوه افروز شد — شب از روشنی صورت روز شد *
شدی حال رخسارهٔ شه رخان — سویدای دلهای روشندلان *
رخ ماه از حسن ز یافته — برای ز نور خدا تافته *
خو در لکهنو مژده بارگاه — دل و دیدهٔ خلق شد فرش راه *
شد از مقدم خسروی کامنور — محل نشاط و مقام سرور *
بدهلی و کشمیر و شهر خمون — شده نصرت و اقبال ره رهنمون *
بلاهور و اطراف معروف دیار — نمود آن شهنشاه سیر و شکار *
از و اکبرآباد آباد شد — رعایا ز دیدار او شاد شد *
بهر سرزمین جشن شاهانه دید — هم آبادی راجپوتانه دید *
باصلاح مشهور هندوستان — که زیب از شهنشاهٔ گیتی ستان *
شد آراسته محفل خسروی — بصد زیب و برنس شاهنشهی *
می و مطرب جام و مهتاب می — ز اسباب عیش و طرب جمله شی *
مهیا در آن محفل خاص شد — ز فرط خوشی زهره رقاص شد *
ز دیدار شه عالمی گشت شاد — زبان دعا و ثنا بر گشاد *

تاریخ نهضت از انگلستان و نزول مواکب نصرت نشان مملکت هندوستان و بنای دار الشفا بطور یادگار تشریف آوری ولیعهد سلطنت خسرو عالی جناب هر رائل هائینس الدوک اف ادنبرا دیوک آف ولیعهد الهند ملکه از نتایج افکار مولوی نجم الدین اشرف خانصاحب متخلص بنجم ساکن مقام برای عدالت شهر بنارس *

بنام خداوندی نامش نکوست | همه اوست هم جمله عالم از اوست *
خداوند روی زمین و ملک | شه مالک ملک و ملک و ملک *
نسیمی که از باغ منعش وزد | ازو غنچهٔ مدعا بشکفد *
ز دست حسینان رنگین ادا | بسوزش دل مرغ رنگ حنا *
ازو سبزه روئیده روی زمین | برنگ خط عارض نازنین *
ز ماهی همه تا به مه آمدند | پئی نظم هر ملک شه آمدند *
به بینی که از عدل شاه فرنگ | چه هندوستان نامه است آب و رنگ *
ولیعهد آن شاه کشورکشا | سوئی هند گردید نهضت نما *
که آری بقول بزرگان سفر | دلیل ست در راه کسب ظفر *
مرا هاتف غیب داد این خبر | شود سال آغاز نهضت اگر *
فزون در هزار ازحساب عدد | بود بیع و هفتاد و هم هشت صد *
سفر کرد خسرو دو روز سعید | پئی سیر ملک قریب و بعید *
بلندان و مصر و دیگر شهر نیز | دولهائی مجلوی گشته عزیز *
در آورد انگه بملک عدن | ز در مدعا در کف خویشتن *
باقبال و جاه آن شه نیک روز | بهند آمد از راه دریای شور *
ظلال همایون فزون سرور بوم | حکنند از قدوم مسرت لزوم *
بجستین باقبال و فر شهی | بچو تشریف آورد در بمبئی *
براه سرندیب شاه زمن | بموده تماشای ملک دکن *
پس از سیر مشتور و هم مدراس | بکلکته آمد شه حق شناس *
اگر هست صد آوری بر هزار | فزون سار هفتاد و شش در شمار *

نہ بخشش ہی کیا اونکا کہ ابر فیض عالم ہی ۔
نہ خاک آبرو دریا کی ہی جس سے سخاوت میں ٭
کریں کیا ذکر ہم بخشش کا اُن کے بحر قلزم سے
ہوا پہلے ہی پانی جسے اوسے خاک ندامت میں ٭
کہاں ہی مرغ روح حاتم طائی کہ خواہش ہی
بچشم خود اوسے دیکھوں تمنا دام حسرات میں ٭
رہے منہ میں سوال سائلاں اور ہو عطا سب کچھ
طریقہ خاصکر بخشش کا ہی یہ اونکی عادت میں ٭
ذرا دہشت نہیں تاریکی ظالم سے انسان کو
چراغ انصاف کا ہی جسکی روشن اس ولایت میں ٭
جدر سفر بنی ہندوستاں سے ظلم کی آتش
سب تھنکی ہی اونکی آب شمشیر سیاست میں ٭
دراہ سہو گر آوے یہاں صد سال میں ظالم
صدا کا سامنا ہو جاے اوسکو ایک ساعت میں ٭
ہی کسریٰ کا سا عادل اس عروس ہند کا نوشہ
کہ ہی دان بہی رہی آئین خوبیا اوسکی عدالت میں ٭
کئے ہیں مدرسے دہات میں دان تک ہی جاری علم
نہیں شاہوں سے کوئی ہمسر اونکا اس اماست میں ٭
جو ہی بادشہ اور تعلیم یوں مد نظر ہر دم
ہی اونکو اسلئے کوشش بہت دفع جہالت میں ٭
یہہ نہریں کیا ہیں اوسے ہیں یہہ چشمے فیضکے جاری
نفع ایسے زمینداروں کو ہوتا ہی زراعت میں ٭
جس اب روک لے خامہ ہی کوسوں منزل تعریف
کہ ہو تکلیف قاصد کو زیادہ تر مسافت میں ٭ فقط

حدر مطلق نہیں یعی یہ اچانک آگئی آواز
زبان حلق سے۔گوش نما کی سما یت میں *
کہ اس کے دو نہال گلشن اقبال کا ہی قصد
یہ باغ ہند ہی حسن باغبان کی اب حفاظت میں *
ولیعہد اس حلاوت کے وہ رتبہ تاج شاہی ہیں
ہمیں مژدہ ہی اونکے آنے کا اس بادشاہت میں *
قلم اب نسخۂ سحر ستایش پوش کر بابی
کہ ہی۔آب در دریاے معنی اب لطافت میں *
ہی حامۂ عاشق حسن ممت حوبکا صحرا کو
ہوا گروہ دہ راہجر مضامین کی حراست میں *
بیاں وصف کیا شیریں ہی اونکا جسکے باعث سے
عرق قند بر رگِ سخن میرا حلاوت میں *
ہی شور آمد آمد اونکا اب حلقت میں شور انگیز
بناہ حاق جنابی رہی ہی ظل حمایت میں *
یہ مالک ہند ہی دارالسرور آج اونکی آمد سے
کمر بستہ ملک حورا بھی ہی جنابی اطاعت میں *
بہرر کی صدف کے بے بہا در ہیں کلہ عالم میں
بہادر ہیں کوئی ہمسر نہیں اونکا جلالت میں *
انہی جانے برس جو ابر نیساں کماں اونکا
صدف ساں سینہ دشمن کا بہرے تیر جراحت میں *
ادا ہو اونکی جرأت کی زباں آور سے کب معروف
وہ لئے گرچہ کیسا ہی بڑا دیواں دحامت میں *
یہ مدحت سربزرگی میں سما سکتی نہیں ہرگز
عطارد جو ستائش اونکی لئے اس عبارت میں *
نہیں ہوے درست اک سعد دہی نظم برنا سے
دہر آسماں لئے قصیدہ گر شجاعت میں *

زیبندہ ہو وہ ملک کہ مرشد سے ہی مزاج　　درویش صفت سینہ ہی دل بردبار ہی *
دنیا دوری عیش کو یہ سلطنت نہیں　　شوق غرور حکم نہ دل خواستگار ہی *
مانند باغباں کے ہی پاسداں خلق　　ہر ایک پر نظر رہے لیل و نہار ہی *
آئین پرس ہی دورے ثمر قسم اولیٰ　　بدوں میں شجر کے سنگ دستکار ہی *
بالذات جو ثمر میں نہایت لذت رکھیں　　اون کے نگاہداشت مقدم شمار ہی *
موزوں کرے ہی کاٹکے سر سربلند کا　　جو خار صفت ہی وہی آنکھوں میں خار ہی
مرشد زماں جناب ولیعہد جسکا ایک　　دریائے سلطنت کا در شاہوار ہی *
نازک خیال فکر رسا نکتہ سنج ہی　　عالی دماغ منتخب روزگار ہی *
ہر علم کی رموز شناسی میں عقل کل　　ہر ہنر کی سمجھہ میں سلیقہ شعار ہی *
بغض و غرور و کینہ و غصہ حسد وری　　بدرہ بلک نہیں انکا نہ دل پر غبار ہی *
اخلاق گرم جوشی اشفاق با صفا　　انسانیت میں دور و پاس یک دہی بدار ہی
شیریں کلام خندہ و شاداب روی گل　　نام مزاج نیک نہ شرمسار ہی *
ازبہر سدرہنکی یہ تشریف آوری　　اس باغ ہند کے لئے ابر بہار ہی *
ہر گل مراد سے یہ ادس نام ہی　　کتنا دراز دامن امیدوار ہی *
یہ نور دید ہمکو مبارک ہو دوستو　　انسان جو خیرخواہ ہی بااعتبار ہی *
ابات خسروانہ سے ہونا رکاب بوس　　اے ہندو یہ ساتھ دروگار ہی *
یارب ہو مستجاب دعا سنت لعل کي　　یہ شہنشاہ دہر ہو جب تک رہا رہی *

درمدح جناب فیض مآب پرنس آف ویلس صاحب بہادر دام اقبالہ
تصنیف خاکسار امیر حسن متخلص بہ حسن محرر مل نہر متصل
نکوڑ ضلع سہارنپور واقع ممالک مغربی شمالی

قدم رکھا ہی کسنے ہند کی راہ مسافت میں
جو ہی نوکر یہاں کے خلق کا طالع سعادت میں *
ضرور آتا ہی کوئي مظہر انصاف ایسا اب
کہ جسکے عدل سے گردوں دبی جو سب سے رعایت میں

سعادت تو تعالی انام خلق افزون ‌ ‌ حمایت تو جهانرا بساط امن و امان •
منور است ز انوار عدل او گیتی ‌ ‌ بہ عہدِ ملک آثار معدلش رخشان •
ز طبیعت پاکش که مخزن صد علم ‌ ‌ حصول و دولت اخلاق همچنان با آن •
مدرسین و مدارس همه و طالب علم ‌ ‌ سپاس منعم خسرو بصد زبان گویان •
چگونه بار بصد بار بر ملک نکنم ‌ ‌ که شاهزاده جهان برسرم کند احسان •
بیا که نیست نجد تو با کجا احقر ‌ ‌ ز وصف نیست چو بدرن صفات هندوستان •
برار دست دعا در جناب پاک الہٰ ‌ ‌ که شاهزاده بعمر اند بود شادان •
سمند اہل انام زیر رانت رام ‌ ‌ حرون حرج بعرصادی نہادہ عنان •
سریر گدی و دیہیم ہیچ تا باشد ‌ ‌ تخت و افسر شاہی کدیی تو جام روان •
بحق ظل الہی مدام باد افزون ‌ ‌ هزار عمر ز پُش آنت وطلو نحست جوان •

در مدح جناب معلی القاب ملکه معظمه دام اقبالها و دیگر شاهزادهٔ والا تبار ولیعہد صاحب بہادر دام عمرہ

ادراکِ شان قدر نہ آسان گذار ہی ‌ ‌ یہاں راہ امتیاز عجب پیچدار ہی •
اہل نظر ہزار کریں غور پر نظر ‌ ‌ آتی نہ حوصلی میں جو کچھ ہونہار ہی
ہیں واقعات ہند ہی اسکی ثبوت میں ‌ ‌ کافی بس اور حال زماں درکنار ہی •
پہلے جو تھا سو تھا ہی ولی بعد دور حراج ‌ ‌ گذرا جو حال اسکا وہ سب آشکار ہی •
دیکھیو گرگ کطرح مجذوب عربوی ‌ ‌ پہلا تو اسکی جوبکا رہی جوعہ خوار ہی •
پھرجو دوسرا تھا دور حلا تھا بہادلک کہ آج ‌ ‌ دوسرے سے دوسرے سے وہ مکار ہی •
اسوقت کا وقوع مرا دردِ نغز ہی ‌ ‌ جسمیں کی سم کا کونا سا حال زار ہی •
عہدِ انحرانکو دیکھی استحلف ہند میں ‌ ‌ کسکو امید تھی کہ جو اس دن بہار ہی •
دیکھی کہ جسمی ملکۂ وکٹوریا کی زیر ‌ ‌ دیکھو معاملت میں یہ عالی دیار ہی •
دیکھی ہی زور وور ترقی بہ مال وجسم ‌ ‌ ہر ایک شر سلی العدر مال دار ہی •
مہاراجہ کداگر دام بہی جسکا سعادت یہ بہا ‌ ‌ سب تمور ملک رہا یہ تجارت کا کار ہی •
شاداب آب مہر سے گلشت زار ہی ‌ ‌ دن تحفۂ گلاب عراکۂ کثیت کنار ہی •
ہی شہنشاہ دہر یہ ملکہ معظمہ ‌ ‌ جسکا نہ ہمسر آج کوئی شہریار ہی •

نام نامی را درآوردم ز حرف مصرعها
در مرشم صنعت لطف چه خورده نقش و تاب
تا درآید در سما هر روز و شب شمس و قمر
تا کشند عطار از گلهای بوتا خوش گلاب •
تا بود در سلطنتها حکم جاری از ملوک
تا بگردد در مجالس ساغر لعل مذاب •
عزم عالمگیر بس را نقش باشد هم عنان
سایهٔ آن زیب عالم ریش گردد سحاب •
آنکه داد شاعران از داد داور میدهد
میکند طالب دعا گوید الهی مستجاب •

قصیدهٔ مدحیه در شان حضرت والا دودمان سلطان شاهنشاه انگلستان و هندوستان
جناب نقش مآب پرنس آف ویلز ولیعهد صاحب بهادر دام اقباله و اجلاله

رهی رسائی تخت بلند هندستان	که سایه بر سر ما افکند چنین سلطان •
ز نقش مقدم این بادشاه اهل دوال	زمین هند شده رشک روضهٔ رضوان •
پئی رفاه رعایای هند می آید	ولیعهد خسرو انگلند و شاه هندوستان •
درا برای جه گلدست هند باستین	مگر بوجه شاهنشهی کشیده عنان •
صدر آینه سیماش مظهر همه علم	ازین جمله جهان در طبیعتش پنهان •
زبس رواج بدارار بهرداد کمال	که علم نامه رونق جو جنس شعله نشان •
خرد بگفت که این سایهٔ خدا باشد	فرو سایهٔ عدلش حکومت سایان •
نعش شادی خاطر سرور جان و دل	رسید مطلع تازه جو نامهٔ جانان •
زانندانی بقای جهان بانی دوران	کسی ندید چنین شاهزادهٔ دنشان •
نگاه لطف و کرم بر سر رعیت هند	گذار بحر عطا داد گیر انگلستان •
بعهد عدل چنین والی ولایت هند	که کوس نعده نوازی بلند بر دوران •
هر بر مست کند کار را نگهبانی	ستم نسانهٔ مظلوم خود نعه خونان •
شجاعت تو نعر بما عدو افکن	سخاوت تو ز حاتم بلند کرد نشان •

رام گشتندش سلاطین جمله دوما و مدام
ترک توران شاه چین و راے هندستان شتاب *
بحر و بر مفتوح شد از صدمۂ ضرب تفنگ
هند را حصن حصین مسمار زآتش شد خراب *
این بدیع صنعت ز اصلاح حکیمان فرنگ
در جهان مشهور و اعدا را جگر گسته کباب *
بود هر کس در مقامش مامنه امن و امان
در جهان تحریف شد از جنگ با بوم الحساب *
از سر لطف و کرم مهرش عطا شد این همه
منصب و جاگیر و خلعت هم وظیفه هم خطاب *
این ز انصاف ست ورنه سابقا در عهد خویش
قوم اسلام از سلاطین ظلم کردند از کتاب *
بت کدۂ هم بت شکست اورنگ زیب سنگدل
او بدیر مجبوس کرد و کشت هندو بیحساب *
لشکر از غزنین کشید آن شاه محمود که بود
هر طرف غارت نمود و هند را کرده خراب *
وین محمد شاه هم گر خاندان مهدی ست
حال او هم دیگران را بود نه بینی اندر کتاب *
شد کنون در عصر انگریزی نه بینی این انتظام
میروی بیخوف باحر هم نه خشکی هم نه آب *
تار برقی ریل و هم کشتی دخانی را نه بین
جست شرع نام بر کرد این همه عجب العجاب *
طبع تیپ علمش را دگر در شهرها
بر سبیل شهرها بالیقین شد صدها کتاب *
مطبعہ جیری شده اندر قلمرو بیعدد
هر کسی را ز پیک علم سازد اکتساب *

اشعار

[illegible] الدیث [illegible]

[illegible]

[illegible] مدیب [illegible] آمد [illegible]

آن [illegible] که [illegible] شد [illegible]

[illegible] شد هم [illegible]

شد [illegible] دلهای [illegible]

[illegible] آمد [illegible]

[illegible] مردم [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

শ্রীমান যুবরাজের ভারতবর্ষে

আগমনোপলক্ষে

কবিতাবলী।

যুবরাজ প্রিন্‌স অব্ ওয়েল্‌সের কলিকাতা আগমন।

ওই দেখা দিল ওই সিরাপিস * সহ
অযুত অর্ণবপোত, মৃদুল গামিনী,
ধাইছে কূলের পানে, নব ঘন যথা
বরিষার কালে। অসংখ্য মানবদল
গঙ্গাকূলে দাঁড়াইয়া, কাতারে কাতার,
অনিমেষ চক্ষে, চাইছে জাহাজ পানে,
সানন্দ অন্তরে, গাইছে মঙ্গল গীত
"যুবরাজ প্রিনস অব ওয়েলসের"।
হেথায় গড়ের মাঠে ভীম কলেবর,
অগণন গজবাজী, সৈনিক নিকর,
সুসজ্জিত গরজিছে ভৈরব নিনাদে,
তুলিছে ফলক বর্শা তরবারি কেহ
আস্ফালিয়া ভয়ঙ্কর ভীমরণে যথা।
ভাগীরথি,
মরি কি আশ্চর্য্য শোভা ধরেছ ধারণ,
কিবা রত্ন হার সাজি পরিয়াছ গলে,
সহস্র সহস্র পোত ভাসিছে তোমার
বক্ষে, যেন ভীমাকারা হাঙ্গরের প্রায়,
অগণ্য মানবদল তটে দাঁড়াইয়া,
পড়েছে তাদের বিম্ব নির্ম্মল সলিলে,
আকাশে নক্ষত্রমালা মধুর কিরণ
আনন্দে হাসিছে সবে মন্দ মন্দ রূপে,
যুবরাজ আগমনে, পড়েছে তাদের
জ্যোতি বিমল জলেতে, ঢেউতে নাচিছে
যেন স্বর্গবিদ্যাধরী চঞ্চল অন্তরে
তান লয় সহযোগে। ধীরে ধীরে পোত
সব, আসিতে লাগিল লয়ে যুবরাজ।
বাজিল মঙ্গল গীত মধুর নিক্কণে,
অনীল বহিল তাহা স্বন স্বন রবে,
বঙ্গবাসীর কর্ণেতে দিল গিয়া ঢালি।
লাগিল জাহাজ সব তটিনীর তীরে,
শোভিছে যথায় রাজধানী কলিকাতা,
(কি ছার ইহার কাছে দেবতা গৌরব
অমরাবতী শচীন্দ্র পবিত্র নিলয়)।
অকস্মাৎ তোপধ্বনি হইল নগরে,
কাঁপিল গঙ্গার জল মানব সকল,
সিংহনাদে সৈন্য সব গর্জ্জিলা অমনি
অশ্বারোহী পদাতিক সশস্ত্র হইয়া
দাঁড়াইলা স্থানে আপনার, হৃষ্ট মনে।
উপনীত হইলেন চাঁদপাল ঘাটে
স্বগণ সহিত পাইলেন সমাদর
বাল বৃদ্ধ আর যুবা সকলের কাছে।
বাজিল ইংরাজি বাদ্য চৌদিকে অমনি
রবাব মুরজ মন্দিরা সেতারা আদি,
আনন্দ লহরী তথা খেলিতে লাগিল।

* যে জাহাজে যুবরাজ আসিয়াছিলেন তাহার নাম।

অলি গলি চারি দিক, আলোকমালায়
হয়ে শোভমান, ডাকিছে মানবে,
যেন করিতে আহ্বান যুবরাজে। গেলা
পরে যুবরাজ গবর্ণমেণ্ট হউস,
সম্বোধিলেন উচিত আদরে সবারে
লইলা আসন তথা বসিবার তরে।

যুবরাজ।

চিরকাল ভিখারিণী এই বঙ্গ মাতা,
মাগিছে তোমার কাছে এই ভিক্ষা,তার
চিরদুখী ভীরু এই ভারত সন্তান
সবে বলবীর্য্যহীন, পালহ এদেরে,
সন্তানের প্রায়, যশ সৌরভ যুষিবে
এ সৌর জগতে। এই যে নিরীহ
ভীরু দেখিছ, বাঙ্গালি মঙ্গল কামনা
এরা সতত করয়, সদা পক্ষপাতী
ব্রিটীশ রাজ্যের। দেখ একবার,
প্রভু! ভারতের দশা অজ্ঞানান্ধ মূর্খ
সব রবে হায়। হায়। আঁধারেপড়িয়ে।
বিজ্ঞান আলোক যারা না জানে স্বপনে
কোথায় উন্নতি তার? নাশ সব দুঃখ
স্থাপহ জগতে কীর্ত্তিস্তম্ভ আপনার
পালিয়ে প্রজায়রীতিমত সুশাসনে।
এই মিনতি করি পরে ঈশ্বরের পদে
মহারাণী যেন থাকেন নিরাপদে।

ভারতবাসি।

গাও সবে একতানে যুবরাজ জয়।
গাও সবে সর্ব্বস্থলে মহারাণী জয়।
উচ্চৈস্বরে গাও সবে ভারতের জয়।
জয় জয় জয় জয় বাঙ্গালীর জয়।

শ্রীবংশীধর মুখোপাধ্যায়।

শ্রীশ্রীমন্মহারাজাধিরাজ্ঞীর জ্যেষ্ঠ তনয় যুবরাজ প্রিন্স আফ ওয়েলসের শুভাগমনীয় স্তবমালা।

কি শুনি মধুর রব শুভানন্দ মহোৎসব
সঘনে সুবাদ্য সব বাজিল।
নীল পীত সীত বঙ্গে সশস্ত্র ভূষণ অঙ্গে,
সেনাগণ অগণন সাজিল॥
যেন ধূমকেতু বাজী, উঠয়ে আতস বাজি,
রঙ্গে ভঙ্গে গজবাজী নাচিল।
ধন্য ধন্য বঙ্গ ভূমি, কলিকাতা রঙ্গভূমি,
পতি সহ ধরা সতী সোভিল॥
উপস্থিত ধরাধিপ, ব্রিটনের দীপ্ত দীপ,
প্রতাপ কিরণ রাশি জ্বলিল।
জিনিয়া তারকমালা,ভূভাগে গ্যাসের আলা।
অভ্র পুঞ্জে সৌদামিনী উদিল॥
কে বলে চপলা নাহি স্থির হয় কদা।
দেখুক সে শভ্র পুঞ্জে রহিয়াছে সদা॥
কে বলে নবীন ঘন গগনে তরজে।
কর্ণ পাতি শুনুক সে বাগানে গরজে॥
সুপ্রভাত প্রজাদের আজিকা হইল।
প্রিন্সঅফ ওয়েলস্ ভানু ভারতে ভাতিল॥
দুঃখের তিমির নাশ হইল দুবির।
দরশন রশ্মিযোগে প্রফুল্ল শরীর॥
এস এস এস নাথ। দাও দরশন।
পাতিয়া রেখেছি মাত্র ভক্তি সিংহাসন।

অন্য ধন নাই প্রভো কি দিয়ে তুষিব।
কবিতা কুসুমে বাঞ্ছা তোমারে পূজিব॥
করহে করুণা দীনে করুণা আকর।
কাঙ্গাল বলিয়া মনে ঘৃণা নাহি কর॥
অপিত সন্তান বিধি করিলে অর্পণ।
পিতার কর্ত্তব্য নহে করিতে হেলন॥
কব কত মনে যত আছে দুর্ব্বাসনা।
অর্থ গুণ দুই হীন না পুরে বাসনা।
অগম তথাচ ইচ্ছা লভিতে সহজে।
কি জানি কে দুর্নরে হৃদয় সরোজে॥
আশ্চর্য্য মানব ভাব আশ্চর্য্য সাহস।
উড়িলা উৎসাহ বাষ্পে মানস কানস॥
বহু দূর আস্ত বাস করি মর্ত্ত্য লোকে।
মুহূর্ত্তে যাইতে ইচ্ছা ভানুর আলোকে॥
অনাথের নাথ তুমি ভারতের পতি।
কর কর দূর মোদের দুর্গতি॥
কেমনে পাইব ত্রাণ দুঃখের সাগরে।
তাব তাব তার ত্রাত একান্ত কাতরে॥
তুমিত সুযোগ্য মহারাজা মহাবল।
যা ইচ্ছা করিতে পার ক্ষমতা সকল॥
অঙ্কিত তোমার আজ্ঞা সব চিত্ত পটে।
বাঘে ছাগে জল পান করে এক ঘাটে॥
বায়ু বহ্নি শম্পা বন্দী তোমার দ্বারেতে।
আজ্ঞা মাত্র কার্য্য করে অভীষ্ট সাধিতে॥
দুরস্ত দুর্গম বন সমুদ্র অপার।
পোতাদি শকট যার্ত্তা দিনে করে পার॥
তব ইচ্ছা হলে তাহা পত্তিনাব সুয।
ভারত হৃদয়ে কর শান্তির উদয়॥
কুবের মহাত্মাদের ভাণ্ডার হইতে।
অধিক তোমার ধন ভিক্ষা শিক্ষা দিতে॥
শিল্পাদি বিবিধ বিদ্যা সুশিক্ষা দানেতে।
ঘুচাও অজ্ঞতা ধ্বান্ত প্রশান্ত ভাবেতে।
সামাজ্যে কি হয় এই ভারতের স্বামী।
হইনে ভরত তুমি অনুমানি আমি॥
সাবহ প্রজার সুখ নৃপ চূড়ামণি।
সুখেতে সাম্রাজ্য ভোগ করহ আপনি॥
চিরজীবি হয়ে সদা থাকহ কুশলে।
বাড়ুক অশেষ যশ এই ভূমণ্ডলে॥

শ্রীনবদ্বীপ চন্দ্র নন্দী।
নিবাস জগতাই,
জিলা মুর্শিদাবাদ।

যদিও প্রশান্তমনা বিবেক নয়নে।
হবে তৃণজ্ঞান সদা এ ভব সম্পদ,
নহে অবিচার নহে ভ্রম। শৃণ প্রভাসম
মানে লোচন লোভন মাত্র অশনি পতন
প্রায় শীঘ্র ধর্ম্ম শিরে, তথাপি মানবে
বল হায় সম্পদ এমন কোথা কেদেশেছ কবে?
পৃথিবীশ্বর রাখিলা পৃথিবী নাম যার
পৃথুরাজ, ভারত বিখ্যাত হলো ভরত
শাসনে, মনুর বিধানে হয় মানব
আখ্যান শত্রুত পরশবান রাবণ দমন
আর কত ধর্ম্ম অবতার পুন কত যে সম্রাট,
যাঁরা কবি শত অশ্বমেধ যাঁকে পুণ্য ভূমি
নাম দিলা সগৌরবে, থাকিলে নয়নে
অদ্য দেখিতেন তাঁরা, কি সাজে সাজিয়া
কিম্বা কত যে গৌরবে পুন কিবা বাহুবলে
আর কত পুণ্য ফলে আসেন ভারতে আজ
মহারাণী সুত কোন সসম্ভ্রমে, অতো
ধন্য ই নও ধন্য মহারাণী, প্রিন্স অফওএলস
ধন্য, সানন্দ ভারত অদ্য নিরানন্দবাদ।

শ্রীহরিনাথ শিরোরত্ন ভট্টাচার্য্য

১

কল্পনে! দেখেছ কি সে অমর উদ্যান,
জড়িতে বিশ্রাম সুখ, সে বৈকুণ্ঠ পুরে,
যথা অমর রাজ, সহ দেবগণ
অসংখ্য, আসেন তথা প্রহৃষ্ট অন্তরে ?

২

দেখেছ কি কভু সেই দৃশ্য অনুপম ?
বিমানে পাতালে, তুমি সকল ধরায়
কর সদা গতিবিধি, আহা। মনোরম
করিব কল্পনা প্রসূ কবিতা সজ্জায়।

৩

দেখে থাক যদি তবে বল গো কল্পনে।
উপমিতে পার কি তা এমর ধরায় ?
পার কি দেখাতে লোক ভারত উদ্যানে।
দেবেন্দ্র সমান আজ নরেন্দ্র হেথায় ?

৪

পার যদি চল প্রিয়ে সামান্য সজ্জায়,
সমস্ত ভারতবাসী করি সহচর
দেখিব সে সুর লোক, এমর ধরায়
শচীপতি সম সেই রাজরাজেশ্বর।

৫

জলধি অসিত জলে দেখ গো কল্পনে।
কত সিত পোত হাব অই ভাসমান,
আমাদের যুবরাজ ভারত উদ্যানে
আসিছেন আরোহিয়া বুঝি জলযান।

৬

চির জনশ্রুতি আছে, মণি ফণি শিরে,
কে বল কল্পনে। তাহা দেখিছে নয়নে ?
কিন্তু যদি কেহ তাহা পায় নিজ করে,
কেমনে আনন্দোদয় হয় তার মনে।

৭

সে আনন্দে এ ভারত ছিল গো বঞ্চিত
এত দিন, শুনিয়াছে সে গ্রেট ব্রিটনে
আছেন ভারতেশ্বর ভারত বাঞ্ছিত,
এবে সিদ্ধ কাম হবে তাঁর দরশনে।

৮

এখন ভারতবাসী, আনন্দে মাতিয়া
গাইবে বিজয় গান আকাশ অবনী,
ধ্বনিত হইবে তাহে, তা সহ মিশিয়া
উঠিবে ড্রমের শব্দ বিউগ্লের ধ্বনি।

৯

কি আনন্দ স্রোত আজ বহিবে ভারতে,
পার কি ভারতবাসী তাহা বর্ণিবারে ?
অ। কে দেখি সেই চিত্র কল্পনা তুলিতে।
সম্ভাস ভারতেশ্বরে সকলে সাদরে।

১০

বহু আরাধনা পরে ভারত সন্তান
পেয়েছে অমূল্য নিধি, কৌস্তভ রতনে
নরভূপে পায় যদি ভিখারি যে জন,
ধরে কি আনন্দ তার আহ্লাদিত মনে ?

১১

গাও তবে গাও সবে প্রেমার্দ্র হৃদয়ে
তাঁহার বিজয় গান, নগেন্দ্র শিখরে
হইবে ধ্বনিত সেই সঙ্গীতের লয়ে,
স্বর্গ পথ হতে তাহা শুনুন অমরে

১২

"এস রাজরাজেশ্বর" বলিয়া সকলে,
সাদর সম্ভাষে তাঁয় ডাক ঐক তানে,
এস রাজ রাজেশ্বর। দেখাও সকলে,
অতুল স্বর্গ শোভা আজ হিন্দুস্থানে।

১৩

[illegible]

১৪

[illegible]

১৫

[illegible]

১৬

[illegible]

১৭

[illegible]

১৮

[illegible]

১৯

[illegible]

২০

[illegible]

২১

[illegible]

২২

[illegible]

২৩

[illegible]

২৪

[illegible]

যুবরাজ প্রিন্স্ অব ওয়েল্সের ভারত সাম্রাজ্যে শুভাগমন

১

সুদূরে আকাশে এক নক্ষত্র উজ্জ্বল
ঝলমলি মনে করে আশার সঞ্চার,
নয়ন রাখিয়া তায় নাবিক সকল
অতি ক্রমে উর্ম্মিময় ভীম পারাবার।
বায়ু কোণে উঠিমেঘ ঢাকিল আকাশ
যবন ভারত রাজ্য দিল উড়াইয়া,
একটি নক্ষত্র পরে পাইল প্রকাশ,
ভাতিল তারকা দীপ্তি ভারত ব্যাপিয়া।
দূরের নক্ষত্র আজি ভারতে উদয়,
সকল ভারত গাও রাজ পুত্র জয় ॥

২

কল্পনার প্রিয় যাঁর উজ্জ্বল বরণ
কল্পনা আঁকিছে যাঁর প্রশস্ত ললাট,
কল্পনার মনোরম নয়ন রঞ্জন—
চিত্র আজি সজীবন ভারত সম্রাট।
ভারত! প্রভাত তব দুঃখ বিভাবরি,
উদিত ভারতরবি সহস্র লোচন,
নাচিবে সকল চিত্তে আনন্দ লহরী
আজি হতে ভারতের দুঃখ বিমোচন।
প্রভা কর কর আজি ভারতে সদয়।
সকল ভারত গাও যুবরাজ-জয়।
অবনীর বাণীর নন্দন কানন,
পুষ্পময়ী ফলবতী, স্বর্ণ প্রসবিনী,
জ্ঞানের আকর, রাজ ভক্তি নিকেতন,
রাজ্যের নিরন্তর কল্যাণ দায়িনী—
সাজিবে ভারত আজি মনোহর বেশে,
বচিয়া বিচিত্র বেণী দিযাণী দুকূল,
দামিনী সীমন্ত শোভা বাড়াইবে কেশে,
নবীননিরদ বক্ষে করি ঢলমল।
ভারত ভাবি সৌভাগ্য রবির উদয়।
সকল ভারত গাও যুব রাজ জয়।

৪

কলকল রবে আজি দেয় হুলুধ্বনি
কাবেরী যমুনা গঙ্গা তাপী সরস্বতী,
করিছে মঙ্গল গান ভারত রমণী।
ভারতের ভাগ্যে ধন্য পূর্ব্ব বসুমতী।
বিস্তারি সাগর বক্ষে আপন বসন,
চরণ চুম্বিছে সুখে রঙ্গে সুহাসিনী,
সুখে বিমোহিত সবে করে নিরীক্ষণ
অপ রূপ যুব রাজ সূর্য্য কান্ত মণি।
ভারতের সর্ব্ব গাত্র হোক নেত্র ময়
দেখিতে রাজায় আজি সকল সময়।

৫

ভারত সজ্জিতা এবে বঙ্কিম বসনে
ঘোষিতে রাজায় ভক্তি দেখাতে স্বরূপ,
ভূষিতে রাজায় চির দিন স্থির মনে,
ভারত যত্ন! সদা ইচ্ছা অনুরূপ।
কোথায় হস্তিনাপুরী পাঞ্চাল গান্ধার
দূরে গেছে সব এবে ভারত বক্তিমা
ভুলিয়া আর্য্যের নাম আর্য্যের আচার
গাইছে ভারত আজি রাজার মহিমা।
রাজ প্রিয়া হতে এই দেশ সমুদয়
ভাগ্য ভারত সিন্ধু গায় জয়জয়।

৬

গায় জয় হিমালয় উন্নত প্রস্তর,
গায় জয় বিন্ধ্যগিরি নর্ম্মদা সহিত,
পঞ্চপুত্র সিন্ধুনদ ব্রহ্ম পুত্রনীর
গায় সবে এক মনে হয়ে অবহিত।
কুমারিকা উল্লি ন   লইয়া

গভিছে মুকুতারাজী সি হল সৈকতে।
সাজিছে সুন্দর, সুখে অঙ্গ ঢালি দিয়া,
গাঁথিছে মুকুতাহার রাজায় ভেটিতে।
বঙ্গদেশ কোমলাঙ্গী দুর্ব্বলাসরলা
গায় জয় রূপে কবি জগত উজলা ॥

৭

সাজে আগ্রা সাজি দিল্লী সাজিছে সকল,
দেখিতে বাসনা মনে নব যুবরাজ,
সকল নগরী গায় রাজার মঙ্গল,
গায় জয় গৃহে গৃহে পল্লীর সমাজ।
বরুণা অসি বেষ্টিতা পুণ্যনিকেতন,
সাজিছে সুন্দর রাজ তনয়ে দেখিতে,
বিবাহ আনন্দে যেন আজি নিমগন
কামিনী সকল,বঙ্গে লেগেছে সাজিতে
কোন দেশে রাজ ভক্তি ভারত সমান ?
ভারতে রাজার পূজা দেবের সমান
বয়নে। কিরূপে আজ করিব বর্ণন
ভারতের রাজধানী শোভার আলয় ?
হবে কি বর্ণনা তবে মনের মতন ?
করিল কল্পনাক্ষেত্র যত শোভাময়।
ভারতের নাম শেষ তনয় সকল
ভারত ক্ষেত্রের সার কুসুম সুন্দর—
রাজা রাজপুত্র, শুভ্রবস্ত্র নির্ম্মল,
নিষ্কলঙ্ক রাজ ভক্ত, প্রশস্ত অন্তর,
বিদ্যান সকল যথ একত্র হইবে
কল্পনে সে কলিকাতা কিরূপে চিত্রিবে ?

৮

ভারতের রাজধানী সুখের আলয়,
ইন্দ্রের অমরাবতী অথবা অলকা,
ধরায় বৈকুণ্ঠ শোভা হয়েছে উদয়,
উড়িতেছে গৃহে গৃহে পতাকা বলাকা।
বয়েছে নক্ষত্র শোভা শশীর কারণ,
উদয় হইবে শীঘ্র পূর্ণ শশ ধর,
আনন্দ আনন্দ স্রোত আনন্দে মগন
সবার হৃদয়, বঙ্গে ভারত ঈশ্বর।
রাজধানী সিংহাসন বঙ্গের হৃদয়
রাজ ভক্তি বঙ্গ দৃশ্য সকল সময়।

৯

আলোক মালায় দীপ্ত সকল প্রদেশ
তাহাহতে সমুজ্জল রাজ পুত্র গণ,
ভাসি সম্রাটের রূপে অন্ধকার শেষ,
করিল সকলে যথা পূর্ণিমা গগন,—
পূর্ণশশীভাতি মাঝে তারকা সকল,
হারায় আপন দীপ্তি না পায় প্রকাশ,
ক্ষীণালোক কটিতারা দ্রষ্টব্য কেবল
কৌমুদী আবর সুখে সকল আকাশ,
ভিন্নদেশ জয় করি কবিতে দর্শন,
কত সুখ মনে! হয়ে রাজার মতন ॥

১০

আজি কি অপূর্ব্বসুখ রাজপুত্রমনে!
পরাধীন বঙ্গ কবি কেমনে কহিবে ?
দেবত্বে যা কতসুখ বলিবে কেমনে,
অমৃতের স্বাদ মর্ত্ত্য কিরূপে জানিবে ?
একেত ভারত রাজ্য সকল আপন,
তাহাতে কেহই পূর্ব্বে আগমন করি,
করে নাই আদি সত্য কথন ঘোষণ,
যুব রাজ হৃদয়েতে আনন্দ লহরী।
উর্ম্মি উর্দ্ধে আঘাতিয়া চালায় যেমন,
সুখ পরে সুখ চিন্তা হৃদয়ে তেমন।

১১

ভারত সুখের দিন রাজার দর্শন,
ঘটিল ভারত ভাগ্যে দীর্ঘ কালপর,
করিবে রাজার কাছে দুখের ক্রন্দন,
ভারাক্রান্ত, লঘুভার হইবে, অন্তর।

দেখলো বহুদে আজ পচিম প্রদেশে
রক্তিম বরণ রবি হইল উদয়,
সাজাও ভারত অঙ্গ মনোহর বেশে,
সবল ভাবত তোমা আজি সুখময়।
ব্রিটন শাসন কালে যে সুখ কখন,
ঘটেনাই সেইরূপ হইবে এখন।

১২

আটশত বর্ষহয়, ভারত ভাস্কর,
ডুবিয়াছে দুরাচার যবন সাগরে।
আজি কি ভারত ভাগ্যে সেই দিবাকর,
উদিত। আশ্চর্য্য কথা। অস্তাচল শিরে
সাজলো বিবিধসাজ ভারত সুন্দরী,
কনক মলয়া নিল সুবাস বিস্তার,
সুশোভিত সাবিত্রি সপুষ্পবল্লরী,
দুলিয়া চুম্বিবে সুখে চরণ তাহার।
ভারত ভাবি সৌভাগ্য রবি যুবরাজ,
উদয় মলয়া চলে শুভক্ষণে আজ।

১৩

নাচিল আরব্যসিন্ধু লহরী খেলিয়া,
নাচাইতে বাজ তরি নাচিতে সকল,
উচ্চ কণ্ঠ বাদ্য ভক্ত কামান গর্জ্জিয়া,
গাইল বঙ্গের কুলে রাজার মঙ্গল।
আনন্দ কল্লোল উচ্চ উঠিল গগণে—
কামিনীর হুলুধ্বনি কুমারের জয়,
ছুটিল আতোষ বাজী ভারত প্রাঙ্গণে—
রঞ্জিয়া আকাশ পথ, কিবা সুখোদয়।
ভারত ভাবি সৌভাগ্য রবিযুবরাজ,
উদয় মলয়া চলে শুভক্ষণে আজ।

১৪

আহা আহা কিবা সুখ। কি সুখের দিন,
মুহুর্ত্তে বিদ্যুত বহি এসুখ সম্বাদ,
সমস্ত ভারত, পূর্ব্ব, উত্তর, দক্ষিণ—
নাচাইল, ডুবাইল হৃদি অবসাদ।
ভূলোক বৈকুণ্ঠ এই সোনার ভারত,
কোটি কোহিনুর শোভি পদ নখেযার,
ধনের ভাণ্ডার, সর্ব্ব সুখের নিয়ত,
বিরাজিত যত্রাধামে অতুল ভাণ্ডার।
আজিকেন সে ভারতে দেখি দীনবেশ,
হইল কি ভারতের সম্পদের শেষ?

১৫

ছিলবস্ত্র। কিন্তু আজি শুভ্র যতনে
পীত অঙ্গ অবিশেষ। তথাপি সুন্দর
দীনতায় স্নান। কিন্তু বিকাশ বদনে,
যুবরাজ সমাগমে হাসি মনোহর।
নাই রত্নশক্তি নাই, কিন্তু পরিত্রাণ,
কি দিবে ভারত আজি রাজ পুত্রকরে।
যবন, হৃদয়ে দিয়া প্রস্তরের চাপ,
লইয়াছে ভারতের ধনরাশি হরে,
দু শিখী কুটিবে যবে রাজার উদয়
কি দিবে রাজায় ভাবি এইরূপ (ই) হয়

১৬

রাজ পুত্র। রাজনীত শাস্ত্র, ইতিহাস,
সকল কণ্ঠস্থ তব জান সমুদায়।
ব্রিটনেতে রোমীয়ের সভ্যতা প্রকাশ
যেন ভারতের পুত্র পুত্র তুল্যনয়।
মিসর যুনানী যবে জননী জঠরে
ভারতের জ্ঞানালোকে বিশ্ব আলোময়,
শত কোটি স্বর্ণ দান যবনের করে,
একদা ভারত করে দু খের সময়।
আজি সেই ভারতের দীনতা দেখিয়া,
সহৃদয় হৃদি হায়। যায় বিদরিয়া।

১৭

কি দিবাভারত আজি ভেটিবে তোমায়,
মামুদ, তৈমুর, আর নাদিরের মত,

অর্ধ জগদ্বাসী শত্রু ভারত আসিয়া
লুটিয়া লইয়াছে ছিল যবে।
ভারতে কেবল আছে সরল হৃদয়,
অকপট ভাব ভক্তি রাজ সমাদর।
দীনতা দেখিয়া পাছে দুখার্ত ঈশ্বর,
বসাবে আহ্লাদপথ কি সে কারণ।
ঢাকিয়াছে দেখতাম পূর্ণিমারজনী,
কাঁদিছে ভারত মাতা বিরলেতে বসি।

১৮

শান্ত পুত্র। কি নিমিত্ত বিলাত ভ্রমণ,
কবিত কল্পনাবলে উচ্চ যেই স্থান,
'সিপাহী' নামকে খ্যাত দেশ শশধর,
ভারতে এখন পর্ণ কুটীর কেবল।
কোথা শাদী স্বর্ণ মণি সোনা গোলাপ
বাণিজ্যের লোভে পর পাসের মত
পাঠাবেনা সৈন্য আর আটকের পথ,
আটক এখন আছে ব্রিটনীয় হাতে।
যে লোভে অসিয়া দিয়া পারসীয় গবে
রোমীয় আসিয়াছিল কোথা তারা এবে।

১৮

যুবরাজ। স্বর্ণ ভূমি বাণিজ্য লইলা,
ব্রিটিশ বিনয় এত বণিক স্থাপিলা।
ইংরাজ বণিক যথা ঢুকি বসনিয়া,
লইল ভারত রাজ্য সিংহাসনাধার।
সে ভূমি কি আছে আর পূর্বের মতন?
মহাসভা স্থলে এবে আসন লভিয়া,
যবে উঠে ইণ্ডিয়ার কথোপকথন
লৌহের বণিক এবে পড়ে ঘুমাইয়া।
দুর্দিন এখন ভারা দরিদ্র ভারত,
কে বা নিদ্রা ব্যাঘাতিবে ভারত বিপদ॥

২০

সহৃদয়, দেখি শ্রীমে হৃদয়ের ক্লেশ,
বলেছেন মহাবাহো "যদি শক্তি থাকে,
হেন জাতি যত তবে সুখে অবহেলন,
দিতেপারি স্বাধীনতা এমন জাতিকে?"
মহাত্মন! এমতি সহস্র দেখিয়া,
স্বাধীনতা লাভ করি যতন পুষিতা,
এ বিনী যোগীমনে শিক্ষিত করিয়া,
দেখাইল রাজভক্তি নিবৃত্তি অভক্তা।
ভারতে দুরাশা নাই, প্রার্থনা এমন,
করিবেন যুবরাজ। ভারত কথন।

২১

স্বাধীনতা হইতে কভু চাহেনা ভারত,
তাহার প্রার্থনা নিজ অবস্থা যেমন,
তাহার প্রার্থনা সদা নায়ের সম্মত,
অন্যায়ে সরলতা না পাবে তেমন।
ভারত প্রার্থনা আজ লভিতে প্রণয়,
অল্প কিছু ভারতের নব আকাঙ্ক্ষিত,
যদি ভারতের প্রতি সম্রাট সদয়,
ভারত তাহারা তবে হইল পূর্ণিত।
অধীনা বলিয়া যদি দয়া পালে মনে,
ভারত বসিবে সুখে বিলাতের সনে।

২২

কমোজের অস্ত পুরে ভারত কমলা,
পেয়েছেন একদিন পূর্ব হইতে,
রূপে গুণে জগতিতায় [illegible]াত উজলা,
ভীষণ আহব তার জিনিয়া লইতে।
না করি আদর পৃথু সামান্য যৌতুক,
না শুনি অন্যের কথা প্রফুল্ল অন্তর,
লভিয়া কমলা দেবী সুখে স্মিত মুখ,
প্রণয় কুসুমে পূজেছেন নিরন্তর।
আবার ভারত লক্ষ্মী দীনবেশে আজ,
তোমার প্রণয়প্রার্থী তেয়াগিয়া লাজ।

২৩

পারিবে তোমায় কভু যৌতুকে তুষিতে,

দীনহীনা ভিখারিণী যদি অনাদর,
নহ সেই হেতু তাম তোমায় দুষিতে,
শিকাটি জিহ্বা নিন্দ রবে নিরন্তর।
জানে সবে যুবরাজ। প্রণয় কথন,
ফেলনায়। সেই হেতু সচিব তনয়,
লভিলা হৃদয় দানে অমূল্য রতন,
রাজার নন্দিনী পাণি বদলা হৃদয়।
মাতৃক জননী এক, সহোদরা যদি,
স্নেহ পরায়ণা, তুমি হইবে সুমতি।

২৪

চার্চ যথা শিশু প্রতি অনুরাগ ভরে,
বাসনা জ্ঞাপন করি বিশুদ্ধ প্রণয়,
লভেছেন ভারতে ও সরল অন্তরে,
দেখিয়া সকল প্রীতি সকল সময়,
যুবরাজ। অনুগ্রহ থাকে যেন মনে,
প্রকৃতির প্রিয়তম রম্য নিকেতন,
ভারত রাজার প্রীতি লভিবে আপনে,
এ আশা ভারত হৃদে করে জাগরণ,
দেখ বিচারিয়া নরনাথ একবার,
আপন বান্ধব সর্ব্ব দেশেতে তোমার,

২৫

হেন গুরাবতী এই অবনী মণ্ডলে
না পাইবে কোন স্থান দেখাতে আদর,
কোন হৃদেহেন প্রীতি জাগিছে বিরলে,
কোথায় পাইবে হেন সরল অন্তর?
শ্বেত দ্বীপ মাঝে তব আপন আলয়,
তব প্রজাগণ মুখে হাসী-কাশীশা,
দাঁড়ায় তোমার পাশে নবল সদয়,
নিষ্কোষিত অসি হস্তে তোমায় বেষ্টিয়া।
নিরস্ত্র ভারতে কোথা ভয়ের কারণ—
তবে কেন শস্ত্রযুত রব আগমন?

২৬

পদাশ্রিত লভেছেন ইংলণ্ড ঈশ্বর,
বিপুল ভারত রাজ্য শান্তি নিকেতন,
এক শত অষ্টাদশ বর্ষ তার পর,
গত হয় ভারতের অদৃষ্ট কখন,
ঘটে নাই রাজ সেবা অবহিত চিতে,
মুছে নাই অশ্রু কেহ কৃপান্বিত মনে।
তথাপি ভারত রবে দোষী কোনমতে।
আটলিস গণ লভে রাজ অনুগ্রহ।
বাসায় বিরক্ত করে প্রত্যহ প্রত্যহ।

২৭

ভারত দুঃখিনী পর গৃহে চিরদিন,
নাই মাতা পিতা তার নাই পিত্রালয়,
দীনতায় মলিনায় বদন মলিন,
যুবরাজ। কত আশা মনে এ সময়।
দেখিয়া তোমায় যথা হৃদের জীবন,
নব নীল মকরন্দে নাচে বুদ্বুদে।
কুমুদিনী শশীপদি সরসী সলিলে।
নাচিছে গরত হৃদি ভারত উজ্জ্বল,
উর্দ্ধে রবে গায় যুব রাজের মঙ্গল
দেখ যুবরাজ। নেত্র দক্ষিণে বিস্তারি
নাই অঙ্গ বঙ্গ, বিহার কলিঙ্গ কনোজ,
নাই ধারাবাব, সিন্ধু বিদর্ভ নগরী,
উজ্জিন হস্তিনা মৎস্য, গন্ধার, কম্বোজ
ইন্দোর, সিন্ধিয়া, কিম্বা বিবাবের দেশ,
বিস্তৃত নিজাম রাজ্য পুনা মহীসুর,
নিদাঘে সরসীসম কিকব বিশেষ,
শুদ্রায়ত, স্রোত শূন্য, প্রান বহুদূর,
অযোধ্যা, চিতোর গায় ব্রিটিনের যশ,
ব্রিটিনকি হবে তবে কঠিন মানস।

৩৯

যুবরাজ! রাণী যিনি জননী তোমার,
ভারত জননী তিনি বহুদিন হতে,
স্নেহময়ী সিংহাসনে বসি অঙ্গীকার,
আছেন আটান্নে করিয়েছেন এই মতে,
"যেমন অন্যান্য দেশে কর্ত্তব্য বন্ধনে,
বাধ্য আছি আমাদের প্রজার সহিত,
পালিব ভারত রাজ্যে অবিরত মনে,
ঈশ্বর সহায় আর বিবেক বিহিত।
খৃষ্ট ধর্ম্মে দৃঢ় আস্থা যদিও নিরন্তর,
নাহিক প্রবৃত্তি অন্যে হঠে জাত্যন্তর।

৪০

"ঘোষণা করিনু এই আমার বাসনা,
রাজকীয় হৃদয়েতে আছে নিরন্তর,
পক্ষপাতে অনুগ্রহ কেহ লভিবেনা,
নাহইবে কেহ উপদ্রুত শান্তিহীন
যে ধর্ম্ম হউক তার ক্ষতিনাই তায়,
সবার সমান ভাবে আশ্রয় আইন,
যদিকেহ অবহেলি এসব কথায়,
ভ্রমেও অন্যথা এর করে কোনদিন,
রাজকীয় ক্রোধাশনি তাহার উপর,
পতিত হইবে। ইথে নাই অন্যপর।

৪১

"আরও বাসনা অন্য করিব প্রচার,
আমাদের প্রজাগণ যে জাতীয় হয়,
যে রূপ ধর্ম্মেতে আস্থা যে রূপ আচার,
ক্ষতিনাই তায়, সবে সমান সময়,
লভিবে সাম্রাজ্য মধ্যে কার্য্য সমুচিত,
নাই পক্ষপাত জাতি বিশেষের প্রতি,
আপনার বিদ্যাবুদ্ধি ক্ষমতানুমত,
পটুতা প্রকাশ ক্রমে লভিবে উন্নতি।
ক্ষমতায় পদলাভ পদের গৌরব,
সবলে সমান ইথে এক সম সব।

৪২

"জানি ভাল, যবে থাকি সর্ব্বদা সমান,
দেশ বৎসলতা সেই দেশের কারণে,
ভারত বাসীর যাহা প্রাণের সমান,
লভিয়াছে আর্য্য পূর্ব্ব পুরুষের স্থানে।
তাহাতে যে তাহাদের স্বত্বআছে তায়,
ন্যায়মত রাজকীয় প্রাপ্য বাদদিয়া,
রাখিতে বাসনা আছে, শাসনকরায়,
আইন প্রস্তুত করি ন্যায় বিচারিয়া,
এদেশের রীতি নীতি, স্বত্ব সমুদয়,
রক্ষিতে করিব চেষ্টা নিশ্চয় নিশ্চয়। *

৪৩

রাজ পুত্র! দেখ মাতা কোমল হৃদয়,
কোন প্রতিজ্ঞা করি আশ্বাসেন সুতে,
অপর তাঁহার উদারতা আর দয়া,
কোন মতে পারে কি এ অন্যথা হইতে?
কেবল ভারত স্থিত প্রতিনিধি দোষ,
পূর্ণচন্দ্র রাজ্ঞী যশে কলঙ্ক রোপিত,
মাতা বহুদূরে কেবা বলে তাঁর পাশ—
কিরূপে ব্রিটিনাম হেথা কলঙ্কিত।
নাহেরিয়া কভুভারতের মুখ যে—
সেহ কি বুঝিবে, হায়! জননীর মনে,

৪৪

যুবরাজ! করোনা কি ভারত প্রচার,
এখনো মনীষা শক্তি অতুল্য জগতে,
নিত্র সমকক্ষ জন করেছে বিচার?
একমাত্র বঙ্গবাসী উচ্চ আদালতে।
বুদ্ধিতে ভারত বাসী সর্ব্বত্র উজ্জ্বল,

* ক্লিক ইণ্ডিয়া ২১ ও ২২ পৃষ্ঠা। ১ ম অধ্যায় ৫ ধারা।। ৭ ধারা।। ১৮৫৮ নবম্বর।

তাহাদের দেশে তারা নাপায় আদর,
বিচার আলয়ে। কোথা ভারত নরপ,
আর্ম্মেনি ইহুদি বলে ভারত শাসন।
যুবরাজ। মন্ত্রি দোষে ভারতের ক্লেশ
দেখ বিচারিয়া, আর কিসের বিশেষ।

৪৫

ধর্ম্মেতে প্রবৃত্তি দান অন্যায় বলিয়া,
মাতা দিয়াছেন অতি সুস্পষ্ট ঘোষণা,
তবে কেন ধর্ম্ম প্রচারকেরা আসিয়া,
বটতলে করে খৃষ্টধর্ম্ম গবেষণা,
তবে কেন রাজবৃত্তি প্রচারকগণ—
ভোগকরি লাভকরে উৎসাহ করিতে,
দীক্ষিত খ্রীষ্ট ধর্ম্মে হিন্দুকি যবন,
তবে কেন যত্ন এত স্বধর্ম্মে আনিতে?
মন্ত্রিদোষে রাজ্যে ঘটে এত বিশৃঙ্খল,
সর্ব্বত কির্ত্তিত অপযশ অমঙ্গল।

৪৬

ভারতের ভবিষ্যৎ আশার বিকাশ,
মরুভূমিমাঝে জল প্রাপণের প্রায়
মেঘের বিজুলি সমক্ষণিক প্রকাশ,
ক্ষীণআশাজ্যোতি একদিকে, কিন্তু হায়।
নূতন নূতনরূপ শাসন প্রণালী,
বিদ্যা আলোচনা পথরোধ করিবার
পাইছে প্রয়াস তায় ঘোর বনস্থলী,
হইবে ভারত ভূমি, দুঃখের আগার।
দীন দশা ভারতের দেখিয়া নয়নে,
যুবরাজ। দয়াযেন থাকে তব মনে।

৪৭

যুবরাজ। দেখ পুনারত্তের নয়নে।
যে ভারতে কপিল গৌতম আবির্ভাব
বিরাজিত কণ, জৈমুনি যেই স্থানে,
এবেসে ভারত বিশ্বে অন্ধকার ভাব।
ব্রহ্মগুপ্ত নাই নাই বাল্মিকী মহান,
নাই কালিদাস নাই রাম যুধিষ্ঠির,
ভারত গৌরব রবি অস্তমিত প্রায়,
ইংরাজ রাজত্বে আ॥ অস্তাচলেথায়।

৪৮

আপনা হইতে যার এমন পতন,
কি কাজ করিয়া তার পতনের পথ,
কি কাজ ভারত পূর্ব্বে করে নিমজ্জন,
গ্রাসিবে ভারত যদি অনন্ত বিপদ।
যুবরাজ। নিরস্ত্র করিয়া এই দেশ,
মন ব্রিটীস সেনা রক্ষে নিরন্তর,
বলশূন্যতায় জ্ঞানজ্যোতি অবশেষ,
আবার অশনিকেন তাহার উপর?
পতিতে উদ্ধার সদা রাজার পদ্ধতি,
হবেকি ভারত ভাগ্যে বিরীত গতি।

৪৯

শরীর বাধায় দিয়া মনের যে বল,
তাহাতে উন্নতি লাভ ভারতের আশা
উচ্চশিক্ষা উঠাইয়া সে সুখ সম্বল
শেষহলে কি হইবে ভারতের দশা।
সত্য বটে মুসলমানছিল অত্যাচারী
কিন্তু রঘুনাথ রঘুনন্দন প্রবীন—
চৈতন্য, বৈষ্ণব কবি কত ব্রহ্মচারী—
হয় দেব প্রাদুর্ভূত হন সেই দিন।
যদিও ভারত আছে সুখেতে এখন
ভারত মনীষা ক্রমে হতেছে পতন।

৫

উৎসাহ বিহীন ভারতের এই দশা,
নাইকি এখনো লোক জ্ঞানের আধার,
জ্যোতিষি এখনো ভারতের ভালবাসা,
দেখায় উজ্জ্বল এক উন্নত অন্তর।
এঞ্জিন বিভাগে বহ ...লি,

কর্ষক্ষেত শেষ নিজ পুরে বিরাজ,
এখনো আছেন সহ দেবদেব যতী
এখনো উচ্চে স্বরে [illegible] সদায়।
উদয়ার, উদয়ার, মার উদয়ার কেবল,
[illegible] উচ্চে পড়ি বলিতে লাগল।

৫১

পড়িলাম [illegible] ইতিহাস পর
কথা [illegible] যেনো ভয় [illegible]
[illegible]
যে কহিল উচ্চ [illegible] পড়িল এখন,
আপনা [illegible] আর নির্ভর [illegible],
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] দেখিলে সব দুরবস্থা এদেশ,
সহনা, এখনো এত অপমান হবে।

৫২

অবলোকি আমাদের দুর্দশা এমন,
দেখিলে [illegible] বলিত মানেরে,
কি বলে ভারত দুখ আছি নিমগন,
কি বলে অনন্ত ক্লেশে শেষ দিয়াছে।
উপায় বিধান করো আপনি এখন,
আমাদের পালিবে এ ভারত বিস্তার,
হৃদয় পড়িয়া নিজ ক্ষমার তথা,
করিও বিপদ হতে সবলে নিস্তার।
পদপাত শূন্য হবে দেখিও সকল,
ভারত পাইবে সুখে আমার মঙ্গল।

৫৩

দুরবস্থা। বুদ্ধিমাত্র আছেই—
মানবের, বুদ্ধি আছে এখনো ভারতে।
উপায় বিধান করো বাড়াইতে বল,
আপন প্রাণের যাহে হিত সর্ব্বমতে।
[illegible] শোণিত [illegible],
সকল [illegible] করিছে [illegible],
[illegible] রোদনে,
এখনো [illegible]
[illegible] এই [illegible],
যেন [illegible] যেন একই প্রকার।

৫৪

অবহেলিবে যেন না করে ইঙ্গিত,
হাত এক যোগ দিয়ে একই সকল,
বিবাদিবে এক হয়ে সমাজ নিরত,
সাধারণ [illegible] কিরণ।
[illegible] বহ্নির মতন,
চালাবে [illegible] যেন [illegible],
মানবের [illegible] তোমার কারণ,
[illegible] এক হাতে কোথায় প্রাঙ্গণ?
আবার প্রার্থনা এই সকল মরণে—
পূর্ণ করি, যশোগাথা করো ত্রিভুবনে।

৫৫

দুরবস্থা! আমি তুমি [illegible]।
[illegible] পাশে আছিলাম,
নাচাব কেলার নিজ ইচ্ছা যথা তথা,
বলিতে কি সেই রূপ ভারত সমান।
বিষ পূর্ণ হীন বীর্য্য? সবল সকল,
পেলার লইয়া পূজা আর্য্য অবহেলি,
রহিয়াছে এ ভারতে নামটি কেবল,
নাচাইতে আর্য্য নামে নিন্দা আর গালি;
সবার হৃদয় যেন গঠিয়া অন্তর,
ভারতের কবে সব দুঃখের অন্তর।

৫৬

বলিও নারীরে ভ্রান্ত সমান নগরে,
বলিও পল্লীতে যারা করে অবস্থান,
সর্ব্বদা থাকিতে হয় বিরস বদনে,

(দৃঢ় শান্তি যুত এক জাতিটি সমান।)
নাহি হয় বিবেচিত রাজ নীতি মত,
ফলাফিক স্বর্গে মর্ত্যে নাহি স্বার্থ নাশ,
দেপীড়িত ভারতের বিস্তৃত নিরক্ষ,
বরেবা ঘুচিবে তাঁদের সর্বনাশ।
ক্ষুধায় জলিছে দিবানিশি নিরন্তর,
উদর, ভারত তায় শীর্ণ কলেবর।

৫৭

যে ভাবে এসেছ যুবরাজ! অনুগ্রহ
ঘোষণা করিছে তার উদারতা তব,
ভ্রাতৃ ভাবে দেশ সবে ইংলণ্ডে সম্প্রেম
সেই হেতু ভারতের অধিবাসী সব,
ভ্রাতৃ বলি সম্বোধিবে আশা ভ্রাতৃ স্নেহ
লভিবে ভারত বাসী সন্দিত বদন
ভ্রাতৃ ভাল বাসা লাভ করে যদি কেহ
কে বলে তাহার আর অরণ্যে রোদন!
দয়াবতী মাতারাজ্ঞী তাঁহার তনয়
সকল ভারত গাবে মহারাজ্ঞী জয়।

৫৮

পায় যেন এক দিন ভারত আসন,
পার্লামেন্টে প্রতি নিধি মহাসভাস্থলে,
জাতীয় জীবন চক্র যাতে আবর্ত্তন
করিয়াছে অভিষেক 'কমন্সের দলে'।
যুবরাজ! কি বলিব যদি শেলন,
যুবক এন্য হয় সদ্যবার্তাকয়,
এ দেশীয় বিদ্যাভ্যেস নাম্যাবক।—
বিপদ আপদ সবে সহিত সময়।
মনে অধিকার নাহি দেশ অভিলাষ,
প্রজার সহজ মাত্র কর্ত্তব্য দায়ার।

৫৯

ভিন্ন দেশ বাসী রাজা আচার নিয়ম,
বিভিন্ন সকল, শাস্ত্র দয়া বিতরণ—
দূর করি মনে শোক, মনের বিষম,
ভারতীয় প্রজাগণে করিব আপন।
হিন্দু কিবা মুসলমান সকলে সমান,
সাম্য মন্ত্র মগ্ন যেন ব্রিটিশ রাজোতে,
বিরাজি শান্তির বন্যা বহে সদা মান,
দেশে যেন শান্তি সুখ থাকে সর্ব্বমতে।
কেবল কর্ত্তব্য পালি সুখ সমুদয়,
ভারত সুখেতে গাবে ব্রিটেনের জয়।

শ্রীব্রজনাথ বিশ্বাস
ঢাকা বান্ধব যন্ত্রালয়।
শ্রীতারিণী প্রসাদ নিয়োগী
লিখিত।

কেন হে ভারতবাসী, নয়নের জলে ভাসি,
আজি সবে করিছে রোদন।
উঠ উঠ উঠ এবে, আর না আকুল হবে,
এক বার স্থির কর মন॥
মাতৃ হীন শিশু প্রায়, কেন পড়ি মৃত্তিকায়
সুকোমল শরীর লুটাও।
মাটির শরীর হয়, অবিলম্বে হবে লয়,
কেন নাহি ধৈরয ধরাও।
আহা সে মায়ের তরে, কাঁদিছ বিলাপ স্বরে,
আসি কি মা, করিবেন কোলে।
ঝাড়িয়ে অঙ্গের ধুলি, ভূতল হইতে তুলি,
বাঁধিয়ে কি লবেন অঞ্চলে॥
হায় হায় বসুধায় সেই দিন পুনরায়,
আর নাহি আসিবে ফিরিয়া॥
আর কি তেমনে, আর কি সে মা ভাবে
আনন্দেতে উঠিবে হাসিয়া॥

দুরন্ত যবন যদি, পার হয় সিন্ধু নদী,
না আসিতে পারিত এদেশে।
তা হলে কি ধনগীব, এই দুঃখ হত স্থির,
এই দশা ঘটিত কি শেষে ॥
অতএব ভ্রাতৃগণ, হইয়ে প্রফুল্ল মন,
উঠ উঠ ত্যজি ধরাসন।
চল চল একবার, লয়ে ভক্তি উপহার,
রাজ পুত্রে করি দরশন ॥
আমাদের দুঃখভার সহেনা হৃদয়ে তাঁর,
তাই তিনি দেখিবার তরে।
সপ্ত সমুদ্রের পারে, এসেছেন কষ্টকরে,
এত দয়া কাহার অন্তরে?
যে জন যথায় রও, ত্বরায় প্রস্তুত হও,
চল চল তাঁর কাছে যাই।
মনের কপাট খুলি, হৃদয়ের দুঃখ গুলি,
একে একে সকল মিটাই।
যার যে নালিশ আছে এখন তাঁহার কাছে
করপুটে করিলে প্রার্থনা।
এক দিন যদি হবে, সমুদয় দুঃখ যাবে,
মন মত পুরিবে বাসনা ॥
জমীদার অত্যাচার, বিচারক অবিচার,
ব্যভিচার কিছু না রহিবে।
সতত ঈশ্বর স্থানে, ইচ্ছাকর মনে প্রাণে,
রাজ পুত্র চিরজীবী হবে ॥
শ্রীতারিণী প্রসাদ নিয়োগী

১

কেন আজি বাজে মঙ্গল বাজন ?
কেন ভাবে সবে সুখের ভাবনা ?
কেন,বা সুধায় সুখের বাণী ?
কোন্ সুখে আজি ভারত সন্তান,
জুড়াইছে সবে সন্তাপিত প্রাণ ?
করিছে সকলে আনন্দ ধ্বনি।

২

আহা মরি মরি অপূর্ব্ব শোভায়,
কেন চারু সাজে সাজিল সবায়,
ভারতের মুখ কেন হাসিল ?
কেন আজি হায় মলিন বদনে,
হাসি বিকাসিল পরম যতনে ?
দেখিয়া জীবন মোহিত হল।

৩

কেন হর্ষ বর্ষে আজি পুরজন,
করিছে সকলে মঙ্গলায়োজন,
জয় জয় রব করিয়া সুখে।
কেহ হুলু ধ্বনি কেহ কাণাকাণি,
কেহ আরাধনা করিছে অমনি,
উৎসব আমোদে মাতিয়া সুখে।

৪

কিশিশু, কি যুবা প্রাচীনা প্রাচীন,
কিবা ধনী কিবা দীন পরাধীন,
সবলেই আজি প্রফুল্ল মন।
কেহ গাইতেছে, কেহ শুনিতেছে,
কেহ হাসিতেছে কেহ খেলিতেছে,
প্রভাতে যে মতি বিহঙ্গগণ।

৫

কেন কেন আজি সাই এ প্রকার,
ভারত কি ঘুমে জাগিল আবার ?
সহসা সুখের স্বপন হেরি।
একি কথা! আহা আর কি হইবে!
ভারত কি ভবে আবার জাগিবে ?
স্বাধীনতা প্রাণ বসনা পরি।

৬

ভারত অসীম রাজ ভক্তি জানে,
পারে প্রাণ দিতে রাজার চরণে,
রাজার কারণে ভিখারী হতে।

তাই আজি তার এত হুলস্থুল,
উৎসবের ধুম আনন্দ অতুল,
তুমুল ঘটনা ঘটিছে এতে।

৭

অতএব সবে সাজবে সাজ,
চল চল আর কাজ নাই ব্যাজ,
'প্রিনস্‌অব্‌ওয়েলস' দেখিতে যাই।
ক্ষনকাল তাঁর নিকটে যাইযে,
এস সব আশা পুরিগে ভাই।

৮

অযি দেখ তিনি আসিছেন অযি,
এস মোরা যেযে আগুয়ান হই,
ভক্তি উপহার ধবিয়ে করে।
মাথা নোযাইয়া কবি যোড় হাত,
ভক্তি ভাবে তাঁরে কবি প্রনিপাত,
এই বথা বলি চবণে ধবে।

৯

এত দূবে থেকে এদযা তোমার
দেখিয়া বড়ই হয় চমৎকার,
ভাবভেব কথা মনে যে লয়।
আর কি আছে সে ভাবত এখন?
সকলেই সেই শোকেতে মগন—
যে ধন যবনে কবেছে লয়।
"ধন্য ধন্য তুমি, ধন্য তব মাতা,
শিখেছিলে কোথা এ হেন মমতা,
প্রজার কারণ জীবন দিতে।
ক্ষুধার আহার, আর জল দান,
পরিতে বসন চলিবার যান,
পরম যতনে সদা রাখিতে।

১১

"এই আশা করি চির জীবী হও,
এই মত মো চির দিন রও,
প্রজার হৃদযে হইয়ে প্রাণ।
কিন্তু এই কথা থাকে যেন মনে,
বিপদে পড়িলে ডাকিব যখনে,
তখন করিও উত্তর দান।

১২

অতএব সবে সাজরে সাজ,
চল চল আর কাজ নাই ব্যাজ,
'প্রিন্স অব্‌ ওয়েলস্‌' দেখিতে যাই।
ক্ষণকাল তাঁর নিকটে যাইয়া
আনন্দে মনের কপাট খুলিয়া,
এস সব আশা পুরিগে ভাই।

১৩

অযি দেখ তিনি আসিছেন অযি,
এস মোবা গিয়ে আগুয়ান হই,
ভক্তি উপহাব কবিযে করে।
মাথা নোয়াইয়া কবি যোড় হাত,
ভক্তি ভাবে তাঁবে কবি প্রনিপাত,
এই কথা বলি চরণে ধরে।

১৪

যদিও যাহা থাকে মনের বাসনা,
দুঃখের নালিশ সুখের প্রার্থনা,
স্বদেশের হিত সত্যের জয়।
ঐ সভার তরে ধরিগে তাঁহারে,
অবশ্যই তাহা পাইব এবারে,
ঘুচিবে আপদ যাইবে ভয়।

১৫

স্বার্থপর যত জমীদার গণ,
পারিবেনা স্বার্থ বুঝিতে কথন,
প্রজার জীবনে দিয়িতে হানা।
পারিবেনা আদি বিচারক যত,
বিচারে অন্যায় করিতে নিয়ত,
রাজ ব শ বলে হবেনা নানা।

অতএব সবে সাজবে সাজ,
চল চল আর কাজ নাই বাস,
(প্রিন্স অব্ ওয়েলস্) দেখিতে যাই।
ক্ষণ কাল তাঁর নিকটে যাইয়া,
আনন্দে মনের কপাট খুলিয়া,
এস সব আশা পুরিগে ভাই।

ময়মনসিংহ শ্রীতারিণী প্রসাদ নিয়োগী
গবর্ণমেণ্ট স্কুল॥

১

দাঁড়াও না গঙ্গে। এবে চলি ওনা আর।
দেখ চেয়ে স্থির নেত্রে,
অতুল ভারত ক্ষেত্রে,
অতুল ত্রিদিব শোভা শোভিছে এবার।

২

সফল জনম কর, দেখ একবার।
ব্রিটনের রাজ্যেশ্বরী, প্রসাদে যাঁহার,
উন্নতি সোপানে স্থান,
পাইয়াছে হিন্দুস্থান,
ঐ দেখ, দেখ চেয়ে তাঁহারি কুমার
দেখিবারে ভারতেরে এসেছে এবার।

৩

ভারত উৎসব নদে মজেছে এবার,
তাহার সন্তান গণ,
সচকিত নেত্র মন,
দেখিছে ভারত শোভা উপস্থিতে তাঁর।
তুমি ও দাঁড়ায়ে এবে দেখ একবার।

৪

বিমল পবিত্র বারি কেন হে তোমার,
লবণাক্ত সিন্ধু সনে,
মিশাইতে ব্যগ্র মনে,
দৌড়িছ দক্ষিণে তুমি কেন অনিবার?
একটু দাঁড়ায়ে শোভা দেখ একবার।

৫

কেন এত দৃঢ় ব্রত সাগরে গমন?
তবু ও কেনই যাও?
একটু দাঁড়ায়ে চাও,
একটু দেখিয়া যাও শোভিছে কেমন,
ব্রিটনের ভাবী রাজা ভারতে এখন।*

৬

অতুল অতুঙ্গ গিরি মেদিনী মাঝার,
কঠিন প্রস্তর ময়,
অভ্রভেদী হিমালয়,
চিরস্থায়ী রবিকর সহনে যাহার,
তুমি কি তরলা নদি! দুহিতা তাহার?

৭

তবে কি মেলিয়া তার স্থির নেত্রদ্বয়,
দেখিয়া ভারত দুখ,
বিদরে পাষাণ বুক,
পাঠান কি তবে তিনি ব্রিটেনে তোমায়
ভারতের যত দুঃখ জানাতে মাতায়?

৮

গলে কি পাষাণ দেহে অশ্রু বারি তার?
বহিয়া লইয়া তুমি,
ত্যজিয়া ভারত ভূমি,
যাও কি ব্রিটনে তবে বলিতে তাহারে,
সহাবাসী বাছে যত দুঃখ সমাচার?

৯

দাঁড়াও তাহ'লে এবে চলিওনা আর।
দেখ চেয়ে স্থির নেত্রে,
অতুল ভারত ক্ষেত্রে,
অতুল ত্রিদিব শোভা শোভিছে এবার।
ভারত কখনি নহে অসুখী এবার।
এত কাল সহিয়াছে যে কষ্ট, এখন,
হেরে তাঁর চন্দ্রানন,
হইয়াছে বিস্মরণ,

দেখিছ, আনন্দ ভরে, ভরিয়া নয়ন,
ভারত রাজ্যের ভাবী রাজার বদন,

১১

যেকাল ভারত ছিল স্বাধীন যখন,
তাহার সন্তান গণ,
করিয়া জীবন পণ,
করিল অতুল তার শ্রীবৃদ্ধি সাধন,
ভূতলে অতুল ছিল ভারত তখন।
স্বাধীনতা সূর্য্য যবে আসিয়া যবন,
রাহু রূপে গরাশিল,
অন্ধকার আবরিল,
বায়ুগতি অসিতার সৌভাগ্য তপন,
ভূতলে অতুল নেত্র ভারত তখন।

১৩

অত পর ইংরাজের শুভ আগমন,
শোভিল ভারতে আসি,
উজলিল দশ দিশি,
তাড়াল যবন রাহু, মোচিল তপন,
ভূতলে অতুল পুন ভারত এখন।

১৪

ই রাজের সুপ্রশংসা বিদিত ভূবন,
যবন রাহুর করে,
ভারতের সুধাকরে,
দেখিয়া আসিল যেন প্রচণ্ড তপন,
করিতে, ভারতে খর কর বিতরণ।

১৫

আর্য্য সুত কীর্ত্তিযত অন্ধকারে ছিল,
তাদের কৃপায় এবে,
বিচিত্র বসন সবে,
পরিয়া অতুল হয়ে ভারতে শোভিল।
তাহাদেরি যত্নে সবে পূর্ণ প্রজ্জলিল।

১৬

শ্রেষ্ঠতম হিন্দুধর্ম্ম যবন শাসনে,
কতশত অত্যাচার,
সহিয়াছে অনিবার,
কত দৃঢ় ভক্ত হিন্দু, যবন অধীনে,
ধর্ম্মে অত্যাচার ভয়ে ত্যজিল জীবনে।

১৭

মহারাণী বিক্টোরিয়া, দয়ার আধার,
ব্রিটেনের সিংহাসনে,
বসিলেন দৃঢ় মনে,
'হবে না ধর্ম্মের প্রতি কোন অত্যাচার।
জাতি ভেদে হবে না গো বিভিন্ন বিচার।

১৮

দৃঢ় সে প্রতিজ্ঞা তাঁর আছে এত দিন।
যবন নৃপতি যারা, থাকিয়া ভারতে তারা,
পারে নি, করিতে ইহা উত্তম শাসন।
বৎসরেক দূরে এবে রাজ সিংহাসন।

১৯

তথাপি দেখনা চেয়ে, দুধারে তোমার,
নিবাসে যে নরগণ,
আছে কিহে এক জন
অসুখী শাসনে যার, তাহার ভিতর?
ভারতে ই রাজ রাজ্য সুখের আকর।

২০

আছে কি দুধারে তব হেন একজন,
পিতা পিতামহ যার,
যবনের অত্যাচার,
সহিয়া, আপনি শেষে ত্যজেছে জীবন,
বলে না, 'ব্রিটিস রাজ্য সুখের সদন?
নিশিতে বিমল বারি স্থির তব হয়,
ভাসে তাহে শোভা ময়,
অসংখ্য তারকা চয়,

জান কি কিসের সেই প্রতি বিম্ব হয়?
কিবা সেই ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র তারকা নিচয়?

২২

উর্দ্ধনেত্রে দেখ যবে সুচারু গগনে,
নয়ন নলিন মাঝে,
নয়ন মোহন সাজে,
ভাসে চারু প্রতি বিম্ব তাহার তখনে।
ভাসে যথা প্রতি বিম্ব মানব নয়নে।

২৩

রজত থালার ন্যায় গগন মাঝারে,
দেখ সেই পূর্ণ শশী,
বিরাজে নিশিতে আসি,
জান কি কিসের সেই প্রতি বিম্ব ধরে?
কিবা সে গগন মাঝে তারকা বিহরে?

২৪

বিজ্ঞানে সুধাই না আসি বলিতে তোমায়,
কিবা সেই সুধাকর,
পূর্ণ শশী নিশাকর
কিবা সেই ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র তারকা নিচয়
বিজ্ঞানে সুধাই না আমি বলিতে তোমায়।

২৫

দিবসে গগনে দেখ প্রখর তপন,
সুবিস্তৃত ভারতেরে,
মধ্যাহ্ন প্রখর করে।
মহারাণী প্রতিনিধি করেন শাসন,
তাহারি ঐ প্রতিবিম্ব ধরিছে গগন।

২৬

ঐ তারকা গণে বেষ্টিত নিশিতে,
গগনে উষার ধনি,
কলিকাতা রাজধানী,
অসংখ্য নগরী যত আছয়ে ভারতে,
উজলা ই রাজ রাজ্য, বিদিত উহাতে।

২৭

ভারত ই রাজ রাজ্য একপ উজ্জ্বল।
গগণের শশীতারা,
বিজ্ঞানেতে গ্রহ যারা,
বোধ হয় প্রতিবিম্ব অজড় কেবল।
রাজ্যের দর্পণ হয় আকাশ মণ্ডল।

২৮

ভারতের এ উন্নতি, প্রসাদে যাঁহার,
উচ্চ শিক্ষা, সুশাসন,
বিরাজিছে অনুক্ষণ,
ঐ দিগে, দেখ চেয়ে, তাহারি কুমার,
দেখিবারে ভারতেরে এসেছে এবার।

২৯

পড়ে কিছে মনে তব কিছুদিন হয়,
চঞ্চল বিমল জলে,
প্রতি বিম্ব ধরেছিলে,—
বিশাল অর্ণব পোত কিবা শোভা ময়।
এসেছিল যুবরাজ সোদর হেথায়

৩০

যুবরাজ স্থির নেত্রে দেখেছিলে তবে?
দেখিয়া ছিলে কি তুমি,
সোনার ভারত ভূমি,
সেজেছিল শোভাময় অতুল বিভবে?
(চিরকাল এই ভূমি অতুল এ ভবে।)

৩১

ইহারি দ্বিতীয় ভ্রাতা, দেখেছিলে তাকে?
শুনিয়া ছিলে কি তুমি,
এই হেন স্বর্ণ ভূমি,
ভাসিয়া নয়ন জলে বলেছিলে তাঁকে,
তাহার দুঃখের কথা বলিতে মাতাকে?

৩২

বিবিধ সুজিত এই ধাত ভিতরে,

নিশানাথ সুধাকর,
ধরে শোভা মনোহর,
অতুল পূর্ণিমা যবে গগন মাঝারে,
বিরাজে কলঙ্ক দেখ তাহার ও ভিতরে,

৩৩

ইংরাজ শাসন মাত্র, সৃজিত তাহার,
কেমনে সম্ভব হবে,
নির্দ্দোষেতে বিরাজিবে,
ভারত ভবনে মুখ সুশাসনে তার?
কি জানি তাহাই বা উনি ঘটান এবার

৩৪

রাজার সন্তান ইনি রাজীব কুমার,
শুনিয়া সোদর মুখে,
সতত দারুণ দুখে,
যোবার ভারত বাসে, দ্রবিল অন্তর,
ভাসিল দুখের জলে হৃদয় ইহার।

৩৫

তাই বুঝি দয়া করি এসেছে এবার,
ভারতের মনো লোভা,
এহেন সুন্দর শোভা,
উজলিতে, অন্ধকার যাহাকিছু তার।
তাড়াইতে একবারে এসেছে এবার।

৩৬

ভারত ই বার রাজ্যে অতুল উজ্জ্বল,
কিবা তবে অন্ধকার,
কিবা সেই দুঃখ ভার
জানি কি কিসের তরে নয়ন যুগল,
ঝর ঝর ফেলে সদা নয়নের জল?

৩৭

পূর্ব্বাপর ভারতেই রাজাধ আবাস,
দিয়াছিল আর্য্য গণে,
বিদেশী যবন গণে,
বেধেছিল সদা তাহে দিয়া রাজাবাস।
ভারত রাজার এবে কোথায় নিবাস?

৩৮

পূর্ণ কলা সুধাকর রাজার বদন,
রাজ সভা, মন্ত্রিগণ,
রাজ ছত্র, সিংহাসন,
ভারতের ভাগ্যে আর নাই দরশন,
ই রাজ রাজত্বে ধনি দেখেনি কখন।

৩৯

সর্ব্বাঙ্গ সুন্দরী যেই রমণী রতন,
শশীসম তুলনায়,
ভাগ্যে যদি অন্ধ হয়,
আছে কি জগতে তবে হেন এক জন,
আজন্ম দারুণ দুখী তাহার মতন?

৪০

ভারত তাহার সম তুলনায় এবে,
তাই বুঝি ভ্রাতৃ মুখে,
শুনিয়া অতুল দুখে,
ভারত নিবাসে সদা, আসিয়াছে এবে,
ভারতের দুঃখ বুঝি সব তাড়াইবে।

৪১

দেখনা হাসিছে ধনি, প্রফুল্ল আনন,
পূর্ণ বারি পাত্র ন্যায়,
ঐরে তার শোভা পায়,
প্রতি বিম্ব পড়ে তাহে, তাহার বদন,
ভারত সানন্দ-মনে দেখিছে সে জন।

৪২

কুতূহলে নেত্রে সদা তাঁহাকে দেখিতে,
ভারত নিবাসী যারা,
ভ্রমিতেছে পথ হারা।
ভুবনে এশোভা সনে তুলনা তুলিতে।
দেখিনা কিছুই আমি গভীর চিন্তাতে।

৪৩

রাজ ভক্তি পরায়ণ প্রকৃতি নিচয়,
মণি মুক্তা, স্বর্ণহার,
দিতে তাকে উপহার,
তাহার সম্মুখে লয়ে, উপস্থিত হয়।
(কেহই এদের ন্যায় রাজ ভক্ত নয়।)

৪৪

আমরা সকলে, দেখ, ভরিয়া নয়ন,
দেখিতেছি যুব রাজে,
শোভিতে ভারত মাঝে,
একবার দেখ তুমি। ফিরাও নয়ন।
কেন এত দ্রুত তব সাগর গমন?

৪৫

ঐ দেখ হাস্য মুখে, প্রফুল্ল নয়নে,
তব পিতা হিমালয়,
দেখিতেছে শোভাময়,
সোনার ভারত, ভাবী রাজার বদনে
এক বার দাঁড়াইয়া দেখ গো এখনে।

৪৬

ভাবিওনা দেখ যত ইংরাজ আসিতে,
চির দিন বাস করে,
সম্পত্তি স গ্রহ করে,
লুটীয়া ভারত, যায় ফিরিয়া বিলাতে,
ইনিও তাদের ন্যায় এসেছে ভারতে।

৪৭

বিধির সৃজিত এ জগত ভিতরে,
নিশানাথ সুধাকর,
যরে শোভা মনোহর,
অতুল পূর্ণিমা যবে গগন মাঝারে,
বিরাজ কলঙ্ক দেখ তাহারও ভিতরে,

৪৮

নৃপতি-উচিত বীর দর্পে আগমন,
করেছেন যুবরাজ,
—ধরিয়া মোহন সাজ,
ভারতে নির্দোষ সুখ করিতে স্থাপন
বিধি বিনিন্দিত সৃষ্টি করিতে সৃজন,

৪৯

দাঁড়াও মা স ঙ্গে তবে চলি ও না আর
দেখ চেয়ে স্থির নেত্রে
অতুল ভারত ক্ষেত্রে,
অতুল ত্রিদিব শোভা উপস্থিতে তার,
নয়ন সফল কর, দেখ এক বার।

৫০

কর হে তাহার কাছে এই নিবেদন,
সুচির নৃপতিগণে
নিবাসি আ ন্দ মনে,
পারেনা সহিতে সতী বিরহ বেদন,
ভারতে স্থাপিত হক রাজ সিংহাসন।

৫১

ভারত ব্রিটিন দুই একই তোমার,
ব্রিটেন বহুদিন,
পতি সনে সুখে লীন,
ধরিয়াছে সিংহাসন অনেক রাজার।
ভারতে নির্দ্দিষ্ট হক নিবাস তোমার।

৫২

ব্রিটেনেতে জন্ম তব তাহে বাস স্থান,
স্বর্ণ ভূমি হিন্দুস্থান,
হ'ক তব বাসস্থান,
এক্ষণে ব্রিটেনে তব স্নেহের সদন,
ভারতে ব্রিটেনে ভেদ রবে না তখন।

৫৩

দয়ালু ই গঙ্গ রাজ তুল্য আ—

তাহা যদি নাই হবে,
ভারত দুখিনী বড়,
বলিছে, "ইংরাজ রাজা কভু দেখিনাই,
বৎসরে বৎসরে যেন দেখা তব পাই।

শ্রীশিবেন্দ্র নাথ দাস গুপ্ত।

ভারত বর্ষে প্রিনস্ অব্ ওয়েল্সের
শুভাগমন।

" Hail, Royal Prince !

সেক্সপীর।

১

রজনী প্রভাত, কেন অবস্মাৎ,
ভারতের মুখে হাসি প্রতি ভাত ?
জনম অবধি হেরিনি নয়নে,
এ মধুর হাসি ভারত বদনে,
হেরিলাম আজি তার রে,
ভারত জননী, মলিন বদনা,
বহু দিন হ'তে সহিছে বেদনা।
তাঁরি মুখে হাসি ? একি অঘটন,—
অবাক হলেম বুঝিনা কারণ।
কে বুঝাবে কব কায় রে ?
গগন ছাইয়া উঠে কলরব,
আনন্দে মেতেছে ভারত মানব,
আ'জের ভারত সে ভারত নয়,
নূতন ভারত ভারতে উদয়,—
এমনি ঐ দেখায় রে।
একিরে প্রকৃতি ? অথবা স্বপন ?
কিম্বা মায়াবীর মায়ার সৃজন ?
কিছুই বুঝিনা, কিন্তু বুঝিবার,
বাসনা জাগিল হৃদয়ে আমার,
বুঝিবারে চিতচায় রে।

২

জান যদি কেহ, জানাও আমায়,
ভারত হাঁসিল কিসের তরে ?
চির দুখ সয়ে, পাগলিনী হয়ে,
বুঝিরে ভারত এমন করে ?
ভারত হাসিল কিসের তরে ?

৩

অমুদিত শশী অপর তামসী,
আজি পৌর্ণ মাসী শশাঙ্ক কোলে,
অকস্মাৎ একি, কেন হেন দেখি ?
কেন ভারতের আঁচল দোলে,
যে আঁচল ছিল পড়ি ভূতলে ?

৪

কেন রে ভারত উঠিয়া বসিল ?
কেন বা ঝাড়িছে গায়ের ধুলি ?
মুছিয়া নয়ন, চাহে ঘন ঘন,
সাগরের পানে শিরস তুলি ?
পূর্ব্ব ভাব সবি গেল যে ভুলি।

৫

দেখে ভাবগতি, বোধ হয় মনে,
ভারত হইল উন্মাদিনী।
তা যদি না হবে, কেন দেখি তবে,
হেন বেশ, যাহা কভু দেখিনি!
ভারত হইল উন্মাদিনী।
অধীনতা বিষ নিমেষে নিমেষে,

৬

ভারতের দেহে প্রবেশ করি,

দূষিল শোণিত, নাশিল সঞ্চিত,
ধীরতা বীরতা লইল হরি,
তাই রে ভারতে এমন হেরি।

৭

দুখিনী ভারত সাত শ বরষ
ভাবিয়া, সহিয়া পর বশতা,
হইল এমন, বুঝিনু কারণ,
নিদাঘে শুকল কনক লতা।
ভাবিয়া, সহিয়া পর বশতা।

৮

যেথায় লক্ষণ হেরি সমুদয়,
কাঁদিয়াছে কা'ল, আজিরে হাসে ?
যাতনা দহন দহিত হৃদয়,
অতুল আনন্দ সাগরে ভাসে।
নিরখি এ সব কি মনে আসে ?

৯

যা ভাবিছ মনে, ভারত তা নয়,
ভারত জননী, দুখিনী বটে,
কিন্তু পাগলিনী, কে তোমারে কয় ?
কোন মূঢ়, ছি ছি এ কথা রটে ?
কে ভাবে এ কথা মানস পটে ?

১০

চেয়ে দেখ ঐ নয়ন তুলিয়া,
যুবরাজ আ'জ ভারত না'রে ;
এলেন দেখিতে, তাই হৃষ্ট চিতে,
ভারত ভাসল সুখের ঝরে,
মলিন বদনে সুহাস করে।

১১

বরষার শেষে সুনীল আকাশে,
শরতের চাঁদে পাইলে যথা,
সুখী চকোরিণী ; আজরে তেমন
সুখিনী দুখিনী ভারত মাতা ;

বহুদিন হ'তে আশা ছিল মনে,—
যুবরাজ যদি কখন আসে,
হৃদয় বেদনা, হৃদয় যাতনা,
খুলিয়া কহিবে তাঁহার পাশে,
যুবরাজ যদি কখন আসে।

১৩

আর্য্যকুল প্রসূ ভারত জননী,
যুবরাজে আজি পেয়ে সখে,
প্রেম সি ধারায়, মধুর কথায়,
তাইবে জাগিল হসিত মুখে,
দুখিনী ভারত ভাসিল সুখে।

(গীত)

রাগিণী যোগিঞা,তাল আড়াঠেকা

১

আয় রে ভারতবাসি। আয় রে সকলে আয়,
বিলম্বে কি প্রয়োজন, সময় বহিয়ে যায়।
আজিরে প্রসন্ন বিধি,
সে হেতু অমূল নিধি,
হেরিব কি সুখ তায় ?

২

হয়ে সবে একতান,
করহ মঙ্গল গান,
লহ করে দূর্ব্বা ধান,
শিরসে দিতে,
হইয়ে যতন পর,
সবে আয়োজন কর,
বসন ভূষণ পর,
সময় বহিয়ে যায়।

৩

তড়াগ সলিল থেকে,
পদ্ম তুল দেখে দেখে,
চন্দন তাহাতে মেখে,

সাজাও সাজী, -
বিবিধ কুসুম থর,
যতনে চয়ন কর,
গাঁথিয়ে নধর হার,
অগুরু মাখাও তায়।

৪

ভরিয়ে জাহ্নবী বারি,
পূর্ণঘট সারি সারি,
বসাও হরষ মনে,
মঙ্গল আশে,—
ফুল মালা দ্বার'পরে,
সাজাও যতন করে,
সাজাও কদলী তরু,
রাজ শুভবাসনায়।

৫

মিলিয়ে ভারত বাসি,
ঝাঁজর কাঁসর কাসী,
মৃদঙ্গ রবাব বাঁশী,
বাজাও সবে,—
ঐকতান বাদ্যসহ,
মাঙ্গলিক গান গাহ,
এহেন সুখের দিন,
সামান্যে কি পাওয়া যায়?

৬

কখনো দেখিনি যাহা,
আজি রে হেরিব তাহা,
সুভাগ্য এমন কার,
জগতে আছে?—
শাস্ত্রীয় বিবাহ এই —
যে ভূপতি বিভু সেই,
আজি ভাবী ভূপে হেরি,
হেরিব রে বিধাতায়।

৭

যার যা মানসে আছে,
বল ভাবী রাজ কাছে,
সুখ দুখ একে একে,
জানাও সবে,
সওয়া শিব রব প্রায়,
যেরূপে সময় যায়,
ভারতে যুবরাজীরে,
সকলি কহিব তাঁয়

৮

আয় রে ভারত বাসি? আয় রে সকলে আয়,
বিলম্বে কি প্রয়োজন, সময় বহিয়ে যায়।

১৫

তুলিয়া নয়ন, কর নিরীক্ষণ,
দিনা দরশন কুমার আজি,
ছাড়িয়া স্বদেশ, পুরিয়া গগন,
মধুর বদন উঠিল বাজি।
শুভ আগমন, শুভ দরশন,
সফল নয়ন, সফল সবি,
হেরি যুবরাজে সাজি নব সাজে,
আজিরে বিরাজে প্রকৃতি ছবি।
দুখিনী যেমন পাইলে রতন,
হরষ সাগরে ভাসিয়া যায়,
ভারত জননী আজিরে তেমনি,
পরে সন্তানি হরষে চায়।
নিপীড়িত কোল হইল শীতল,
হইল উজল কুমারে ধরি,
অজস্র হিল্লোলে আনন্দ উথলে,
ধরেনা হৃদয়ে—পড়িছে ঝরি।

১৬

রাজ বাদ্য বাজে, গভীর আওয়াজে,
মধুর আগুণ উগারে কামান,
আকাশ ছাইয়া, নয়ন ঝলসিয়া,
উড়ে শত শত রঙিন নিশান।
ঘোড়া হাঁকে আর তুরী চীৎকার,
ঝকে ঝকমক অসির কিরণে,
আগে পাছে পাশে, নয়নের কাছে,
ছুটিছে শকট ত্বরিত গমনে,
যুবরাজ বরে হেরিবার তরে,
"শুভদিন আজ, জয় যুবরাজ!"
ধ্বনিত একথা সবার বদনে।

১৭

এস এস যুবরাজ! রাজকুল ধন,
হেরিতে তোমায়,
বহু দিন আশা ছিল, আজি বিধি পুরাইল,
এমন সুদিন ভাগ্যে হয় কি ঘটন?
ভারত ভরিয়া রাজ? হেরিতে তোমায় আজ
ভারতের ত্রিশ কোটি দীন প্রজাগণ,
ভুলিল মনের দুখ, আনন্দে মগন।
এমন সুদিন ভাগ্যে হয় কি ঘটন?

১৮

আনন্দ আকার তুমি তব দরশনে
ভারত বাসীর,
নির্জ্জীব পীড়িত চিত্ত আজি নব আনন্দিত,
নিদাঘ দগ্ধ ধরা বর্ষা পরশনে।
আনন্দ আকর তুমি, তব দরশনে
সকলি আনন্দময়, সাক্ষাৎ আনন্দোদয়,
প্রকৃতি আনন্দময়ী নিরখি নয়নে,
নিরানন্দ অন্তর্হিত নিরানন্দ মনে।
আনন্দ রবিরে হেরি থাকিবে কেমনে?

১৯

বহুদিন যারা দুখের পাথারে,
পীড়িত হৃদয়ে নিরাশে সাঁতারে,
উঠিতে বসিতে শয়ন করিতে,
দেখিতে শুনিতে যাইতে ভাবিতে,
অসহ যাতনা প্রাণে জাগিছে!
শত শেলাঘাত হৃদয়ে লাগিছে?
তপত শোণিত শীতল হয়েছে,
জীবনের সুখ সকলি গিয়েছে?
আজি তারা তব আগমনে,
নিরখি কুমার বালক নিবহ,
কত সুখী হৃদে ধরে না পুলক,
তব দরশনে আনন্দে মগন।
তোমারে দেখিয়া, হৃদয় খুলিয়া,
গত যা বেদনা সুদূরে ঠেলিয়া,
ভাসিছে আনন্দ বন্যে ডুবিয়া,
অধীনতা ভীতি গিয়াছে ভুলিয়া,
আজি তারা তব আগমনে।
যে ভারত বাসী তোমারে পাইয়া,
মন প্রাণ তুলে গগন ছাইয়া,
কোন মূঢ় বলে রাজ দ্রোহী তারা?
ভূপে যারা ভাবে দেবের মতন,
তারা রাজ দ্রোহী? একথা কেমন?
রাজ দ্রোহী হলে তব আগমন,
কেন সুখী হবে হসিত বদনে?
বালক, কুমার, চেয়ে দেখ ঐ,
রাজ দ্রোহী নয়, রাজ ভক্ত বই,
আজি তারা তব আগমনে।
ভূপতি পূজিতে যে সকল চাই
এ ভারতে আর সে সকল নাই।
বহুদিন হল সকলি গিয়েছে,
রতন বিহীন কৌটা রয়েছে?
ভারত বাসীরা তাতেই তোমার,
ভকতি হৃদয়ে পূজিবারে যায়।

কৃতজ্ঞ এমন আছে কি ধরায়?
ভকত এমন দেখেছ কোথায়?
দুঃখী ভারতের দীন সুতগণ,
কৃতজ্ঞ ভকত নিরখ কেমন,
আজি তারা তব আগমনে।

২১

কুমার! তোমার আগমনে,
সুপ্রভাত ভারত ভবনে।
পূরব আকাশে কিবা ছড়ায়ে অরুণ বিভা,
ছুটে রবি তব দরশনে।
বহি কর্পূর শীতল পবন,
পেয়ে আজি তব দরশন,
আনন্দে অধীর হয়ে, কুসুম পরিমল লয়ে
তব শিরে করে বরিষণ।
স্বভাবের গায়ক চতুর, তব দরশনে সুমধুর,
গাইছে মঙ্গল গান, সুধায় পূরিছে প্রাণ,
বরষিছে আনন্দ প্রচুর।
পুণ্যবতী স্রোতস্বিনীচয়,
লহরী দুলায়ে আজি বয়,
আজি বিন্ধ্য, হিমালয়, অতুল আনন্দময়
জয় জয়, কুমারের জয়!"
হিমাচল কুমারিকা অবধি,
নাহি আজ সুখের অবধি
আজরে ভারত ভূমি দেবের স্বরগ ভূমি,
নিরানন্দ ভারত ভবনে,
যুবরাজ, তব দরশনে,
শান্তি আনন্দ আজি,
অমর জ্যোতিতে সাজি,
বিরাজিছে অচল চরণে।
নির্ঝরে আনন্দ ঝরে, কুসুমে আনন্দ ধরে,
নীলাকাশে আনন্দ বিকাশ,
সলিলে আনন্দ নাচে,
আনন্দে খেলিছে মাছ
ললিতবায় আনন্দ বিলাস।
তপনে আনন্দ খেলে, তরঙ্গে আনন্দ দোলে
আনন্দ বহিছে সমীরণে,
আনন্দের উচ্চরবে, ভূধর গম্ভীর রবে,
গাইতেছে আনন্দ গগনে।
অনন্তেতে প্রতিধ্বনি,
অথচ নিকটে শুনি,
আনন্দে লইয়ে করে খেলা,
দুখের ভারত দেশ,
আনন্দিত অবশেষ,
আজি যেন আনন্দের মেলা।
যে দিকে ফিরিয়া চাই,
আনন্দে দেখিতে পাই,
আনন্দেতে পূরেছে নগর,
তবে বাকী কিবা আর?
সকলি আনন্দরবে,
আনন্দের ভারত ভবন?
ভবিষ্য ভূপাল, তুমি,
অশেষ আনন্দ ভূমি,
ভারত জননী আজি তাই,
ভুলিছে দুখের ঘোর
আনন্দে হয়েছে ভোর,
নিরানন্দ একটুও নাই।
ভারত দুখিনী বটে,
কিন্তু আজি চিত্র পটে,
ওই দেখ আনন্দ অঙ্কিত,
বিশ্বের আনন্দ যত, হয়ে আজি একীভূত,
ভারত হৃদয়ে বিরাজিত।
ভারতের দীন সুতগণ,
লভি তব শুভ দরশন,
"জয়, যুবরাজ জয়!"
সবাকার আনন্দে কয়,

ঐর্দ্ধে বহি বর প্রস্রাবণ।
আমাদের ভারত ভবা।

২২

কুমার, তোমার আজি দরশন পাইয়ে
তোমার সঙ্গ। গান গান খুলে নাচিয়ে
ভুলিছি সতেক দুঃ, অর্বে কল্পিত সুখ
ভুগাছি, ভুলেছি সবি তোমা নরে দেখিয়ে,
ভারতে আনন্দ ধারা বায় আজি বহিয়ে।

২৩

কিন্তু গুপ্ত কথা নিবেদন করিব,
তোমা বই কারে কই? কারেই বা দেখিব,
ভারতের হিত আশী, ভারতের দুঃনাশী,
বিপদে আশ্বাস ভাবী কারে বা পাইব?
তোমারে পেয়েছি আজ তোমারেই কহিব।

২৪

উদিত যেদিন, তুমি এই থানে আসিবে
করুণা কটাক্ষপাতে আমাদের দেখিবে,
পীড়িত ভারতনারে, সুমাশ্বাসে শান্তিবাবে,
সুভাশিত বোল তাঁর শীতলিয়া বসিবে,
মধুর বচন রসে ক্লেশ রাশি নাশিবে।
আমরা সেদিন হ তে রেখেছি তুলিয়া চিতে
সুদারুণ সন্তাপ। যতদূর পেয়েছি,
ফেলিয়া চারার কাজ,
তোমারে জানাতে আজ,
হৃদয় কপাট খুলি তব কাছে এসেছি?
বহু কাল দুখ পেলে,
বিধি চান মুখ তুলে,
সবুরেতে মেওয়া ফলে"
বুঝি আজ ফলিল
তুমি আ'জ চন্দ্র রাশি চিরতরে চলিল।

২৬

কুমার, তোমার নাম সুশাসিত ভারতে,
সুখী হবে সুখী নাই, এ দুঃখ কাহারে কই,
আমাদের মত কই দীন দুঃখী জগতে?
জননী তোমার আর আমাদের জননী,
মহারাণী ভিকটোরিয়া, লক্ষ্মী রূপা বদনী,
তাঁর রাজ্যে করি বাস, হই যদি হতাশাস,
পীড়নে পীড়িত যদি হই দিন রজনী,

২৭

সত্য বটে, যবনের অত্যাচার প্রবাহে,
ভারতের এক শেষ হয়েছিল মহাক্লেশ,
সত্য বটে, হিন্দুজাতি প্রপীড়ন প্রদাহে,
বহুদিন জলিয়াছে, বহুদিন সহিয়াছে,
নরক যাতনা?
সত্য বটে, ভাগ্যবেগে আশা বিস্মৃতিজলে,
ডুবিয়াছে, কিন্তু তবু আজো মনোবাসনা,
পূর্ণ কই? কাঁদে ওই হিন্দুরি ললনা?

২৮

কুমার, রাজেন্দ্র শুভ বিদায়ি লগনে,
তব শুভ আগমনে আমাদের সুদিনে
ভারত সুতেরা আজি হয়েছে মগনে,
কিন্তু ওই নারে তার বহে প্রবণেহে,
সুদীর্ঘ নিশ্বাস বহ, আধ কথা মুখে লয়
দুঃখ কণ্ঠ অবরোধ করিছে রোদন হে?
এত সুখে দুঃ। কেন? আছে যে কারণ হে।

২৯

সে কারণ বলিব না—বলিব না তোমারে,
আকার ইঙ্গিত দেখে, নয়নে নয়ন রেখে,
ভাবিয়া বুঝিয়া লহ নিজ চিত্ত মাঝারে।
যে গর্তে জন্ম মন, নাহে হয় নহুতর,
নিজেই বুঝিবে তুমি [illegible]

ভারত বাসীর দশা এ ভারত আগারে ?

৩০

শান্তি হয়েছে সার, দুখি নী ভারত যাঁর,
অশ্রুনীরে অনিবার, ভাসিছে নলিন মু।।
তবুও ও তোমারে পেয়ে,
আজি পুলকিত হয়ে,
বারেক নিবা লয়ে, ভুলেছে সকল দুঃ।।
অপার দুখের পরে, অপার আনন্দ ভরে,
দুখিনী ভারত মাতা, চাহে তব মুখ পানে,
মুহুর্মুহু যে আশায়, স্থির দৃষ্টে তোমা চায়,
সে আশা পুরাও তাঁর,
করুণা কটাক্ষ দানে।
দেশে গিয়ে জননীরে, জানাইও ধীরে ধীরে,
ভারত সন্তান দশা করিলে যা নিরক্ষণ,
গণিয়া কহিব ক'টি? ভারতের ত্রিশকোটি,
পীড়িত প্রজার দশা সব' তাঁরে নিবেদন।

৩১

কয়ো তারে সযতনে, ভারত তনয়াগণে,
করুণা কটাক্ষ দানে এক বার হেরিতে
তিঁনি না করিলে দয়া,
কোথায় পাইব ছায়া?
তাপিত হৃদয় জ্বালা কে পারিবে হরিতে?
তোমার জননী যিনি,
আমাদের মাতা তিনি,
তবে কেন আমাদের না দেখেন চাহিয়া?
তুমি তাঁর স্নেহ ভাগী,
আমরা কিসের লাগি
সে স্নেহ বঞ্চিত রহি, দুঃখ দাহ সহিয়া?

৩২

অতএব যুবরাজ? ব র ক'র এই কাজ
মাদের উচিত যাহা ব ল তাঁরে করিতে,
ব ল তাঁরে মা ত ত, ভারত সন্তানগণ,
করুণা কটাক্ষদানে একবার হেরিতে।
তিনি না করিলে দয়া,
কোথায় পাইব ছায়া?
পীড়িত হৃদয় জ্বালা কে পারিবে হরিতে?

৩৩

দুখ রাশি দূরে যাবে, অতল আনন্দ হবে,
ভাবিতে ভাবিতে আর হইবে না বিষাদ,
এহেতু মিনতি করি বলো তারে সুবিবরি,
আমাদের নিবেদন, পাই যেন প্রসাদ।
ভুলেছি দুখের ভার, বিষাদে হরিষ লাভ,
তাহলে বাড়িবে পুন শতগুণ যাতনা।
এহর্ষ বিষাদ হ'লে, মরিব সকলে মিলে,
দুখিনী ভারত মাতা পাগলিনী হইবে?
জীবন বাহির হবে, কেবল কলঙ্ক রবে,
সোনার ভারত ঘোর নরক ভূমি হইবে।

৩৪

এই হেতু কায় মন বচনে তোমার কাছে,
করিলাম নিবেদন,
পুরে যেন আকিঞ্চন,
অভাগা জাতির বন্ধু তুমি বই কেবা আছে?
চাসব দেখেছ যাহা চাসব কহিও তাহা,
দয়াময়ী মাতারে,
এহেতু হৃদয় ব্যথা, এহেতু দুখের কথা
কহিতেছি বার বার, কি জানি
সো ভুল পাছে।

৩৫

প্রার্থনা।

রাগিণী খাম্বাজ তাল একতালা।

ঈশহে তোমার করুণা অপার,
তোমার প্রসাদে ভারত মাঝার,
হেরিনু দুখ দ এ দে আবার,
ভিখারি ম াতে সেটি যে পাই?

চির সুখী যথা তোমার শাসনে,
সেইরূপ আশা করি মনে মনে,
সুখী লোক সবে ভারত ভবনে,
রাণীর প্রসাদে বাসনা তাই।
বিলাতের প্রজা সুখী যেই মত,
অধীন হয়ে ও স্বাধীনের মত
কাহার থাকিতে বাসনা নাই?
মহারাণী সহ রাজ পরিবারে,
ভারতের ভাবী ভূপতি কুমারে,
চির আয়ু কর সুখে রাখ তারে,

কলিকাতা,
পাথুরিয়াঘাটা। } শ্রীরাজকৃষ্ণ রায়॥

I

এস ত্বরা করি নয়ন সার্থক করি জুড়াই জীবন।
নিদাঘ চাঁদ নিরখিয়ে তোমার বদন॥
হে ভারত সুতগণ, কর তাই দরশন,
যে নয়ন দ্বিশত বৎসর,
দেখ নাই ভাব নাই, ভাবিতেও চাই নাই,
হারাইয়ে হৃদয় কন্দর।
চল পদ ব্রজে, মনে উল্লাসে কর নিরীক্ষণ,
নিরীখহে, ভারতের প্রভু আজ ভারতে সদন।

II

যথা কবিবর মত্ত মদোন্মত্ত, দেখা হেতে অধরা,
যথা নব স্রোত বতী বেগবতী
আশয়ে সহসা।
সেই রূপ দেখি আজি, হেরিবারে যুবরাজ,
জাগিতেছে বাল বৃদ্ধগণ।
আসিতেছে, হাসিতেছে, আনন্দে,
ভাসিতেছে,
সব আজ হরষে মগন॥
উল্লাসিত যুবরাজ! দাও তুমি শুভ দরশন।
ও পদারবিন্দ, হউক ভারত ভূমি অনাথ তপন।

III

ওই দেখ যুবরাজ তোমা দরশনে।
কত বেশে সাজিয়েছে শোভিত নগরে॥
কত যুবতী মোহিনী আহা কাননের কামিনী
অদ্ভুত ভাবিণীইব যারা।
তোমা দেখিবারে, সুদৃশ্য আলোকমালা পরে,
নবিতেছে বদন তাপন॥
যেন গোপনা লজ্জিতা সব সাবাজিনী।
পরি ছবি নীর বাস মেদিনী শোভিণী॥

IV

ভারতের যুবরাজ শুধু দেখিবারে।
ভারতের সুত ভাসে সুখ পারাবারে॥
ব্রিটিশের প্রজাগণ, করে মহা নিবেদন,
করুণার করহে শ্রবণ।
কিছু নাই চাহি আর, মিনতি এবারকার।
সুখ রাশি করিব বর্ণন।
তোমার প্রসাদে সুখী লোক প্রজাগণ।
শুভাকাঙ্খী। শুভ হোক্ তব আগমন॥

V

সুমেরর শৃঙ্গ হৈব মাত্র গৌরগণ।
গগন ভেদীয়া ছিল কোথায় এখন॥
কোথা উচ্চ সিংহাসন, কোথা সেই রবিকুল
কোথা সেই নৃপ সুযোধন।
কোথা সেই বীরবর, পার্থ আদি ধনুর্দ্ধর,
ভীষ্ম দ্রোণ কর্ণ মহারথগণ।
যুবরাজ আছে কি গো ভারতের আর।
সোনার ভারত ভূমি পোড়ে হাহাকার॥

VI

যে দিন ভারতে আসি পশিল যবন,
যে দিন সম্পদ সেন করে পলায়ন,
যে দিন সেই পৃথ্বীরাজ সমরে হত

গোভ দণ্ডে ভাবত তাজিল,
যে দিন সিন্ধুর পতি, সত্ত্বগুণ মহামতি,
এলো বেতে প্রাণ হারাইল,
সেই দিন সুখ রবি হলো অস্তমিত।
গিবিলো না ফিরিবনা হবে উদিত ॥

I

দুরন্ত পাপিষ্ঠ দশ্য যবন দমনে।
প্রাণ বনব লাগ ভারত ভবনে ॥
সুবর্ণ খচিত স্থান সুবর্ণ বিহীন।
দেশ কিছে নাহি হয় তাহে প্রবীন ॥
যে কানোজ এক কালে ভারত ভূষণ।
যার বীর দাপে হত ধরা কম্পমান ॥
সৌন্দর্য্য মধুরীমার ছিল নিকেতন।
কপির আবাস স্থান হয়েছে এখন ॥

II

যে চিতোর ছিল কালে হীরক বজিতা।
পরাক্রম বাস তার বিক্রম পুবিতা ॥
বিক্রম কেশরী লক্ষ বীর প্রসবিনী।
কোদণ্ড টঙ্কারে যার মূর্চ্ছিতা মেদিনী ॥
ভগ্নাবশেষ স্থান হয়েছে এখন।
পালে ২ পেচ গান করিছে ভ্রমণ ॥

III

উজ্জ্বল মোহিনী অতি যশকে রচিতা।
উজ্জয়িনী নাম যার ভারত ভূষিতা ॥
যথা বাস করেছেন কবি কালিদাস।
স্থাবর জঙ্গম যার কবিত্ব প্রকাশ ॥
পুত্তলিকা সিংহাসন খ্যাত চরাচর।
উচ্চতায় যে জিনিল অত্যুচ্চ ভূধর ॥
কোথায় এখন হায় কোথায় এখন।
উথলিছে দুঃখ সিন্ধু কইতে স্মরণ ॥
যখন ই রেণ্ডা ভারত পশিল।

ভাবিশা। চন্দ্র বিশ্বী প্রশান্ত হইল ॥
বিলাসী পলাসী ক্ষেত্রে সিরাজ মরনে।
ভারতের রাজ্য ভার করিল গ্রহণ ॥
কিছু সুখ ভোগীতেছি হতে সেই দিন।
মাসনে কিছু সুখী আছি হে রাজন

1

কি দেখিবে ভারতের আছে কি এখন।
মূল বিনে মূল তরু শোভে কি কখন ॥
ভারত পদ্মাবাসে মোহিতা মেদিনী।
ছিল কালে, এবে তার দুর্দশা এখনি ॥
বিদ্যমান আছে বটে সেই তরুবর।
কোথা তাহা যাতে হত উন্মাদ অমর ॥
সুন্দর মোহিনী ওগো অন্তর মোহিনী।
কোথায় লুকালে করি ভারতে দুখিনী।

১I

আসিয়াছো যুবরাজ তুমিও এখন।
আসিবে অন্তর ভাব কর বিনোদন ॥
তুমিইতো স বোধন নটগীত গণে।
করে এসেছিলে এই ভারত ভবনে ॥
তুমিইতো আহ্লাদ বরিলে যতনে।
মাসিউপতি আর কত বীর গণে ॥
তুমিই করিলে মুগ্ধ দেশ নানাজনে।
পারসের অধীশ্বর ডেরায়স বীরে ॥
তুমিই সুন্দরী দেবী তুমিই মোহিনী।
তুমিই করিলে হায় ভারতে দুখিনী ॥

১II

যুবরাজ। উপহার কি দিব তোমায় ?
দেব গো উপহার আছে কি এথায় ?
বর সাজি সুশোভিতা ভারত তোষিনী।
নাই আর নাই আর এখন দুখিনী ॥

কবিতা কুসুম হার দিই উপহার।
কৃপায় গ্রহণ কর নাই কিছু আর ॥
দুখী প্রজাদের কর দুখ বিমোচন।
হউক হউক তব শুভ আগমন ॥

TALUDHUR SAHA

প্রিন্‌স্ অব্ ওয়েল্‌সের ভারত বর্ষে আগমনোপলক্ষে।

১

যুবরাজ!
ভীষণ তরঙ্গে সদা কল্লোলিত,
সহস্র যোজন পরিধি সাগর,
সে ভৈরব ধ্বনি পরাজিত করি,
হইল কি উচ্চ ভারতের স্বর?
দুখিনী ভারত দুখের সাগরে,
ভাসি দিবানিশি করিছে চিৎকার,
এতদিন পরে সে করুণ ধ্বনি,
গেল কি বৃটনে তরি পারাবার?

২

শুনিলে যাহার পাষাণ বিদরে,
শুনিয়া তাহার, ভারত জননী,
পাইলা কি বেথা কোমল অন্তরে?
তাই কি এবার হইয়া সদয়,
দিলা, যুবরাজ! পাঠায়ে তোমায়,
দেখিবার তরে দুখিনী ভারত,
মায়ের শাসনে আছে কি দশায়?

৩

এসো ভ্রাত! আসি! করি আলিঙ্গন,
জিজ্ঞাসি মায়ের কুশল বারতা
জিজ্ঞাসি—কেমন আছে বৃটনিয়া,
কেমন আছেন আর ভগ্নি ভ্রাতা,
ভীষণ সাগর—ভাবিতে বিস্ময়—
মকর কুম্ভীর যাহে বাস করে,
কেমনে তরিয়া সে সব সঙ্কটে,
আসিয়াছে ভ্রাত! ভারত ভিতরে?

৪

হাসি একবার দেখ আহ্লাদে,
এমন সুদিন হবেনাক আর
যে ভারত চক্ষে সদা বহে বারি,
দেখ আজি মুখে কত হাসি তার।
নাচিতেছে সাজি দিগঙ্গনাগণ,
গাইতেছে গান বিহঙ্গ নিচয়,
আনন্দে বহিছে মৃদুল পবন,
ভারতের আজি কত ভাগ্যোদয়!

৫

দেখ! স্থানে স্থানে, নগরে নগরে,
পল্লিতে পল্লিতে ভারত সন্তান,
বালক, প্রাচীন, নর নারী—সবে,
করিছে আহ্লাদে তোমার সম্মান!
পরি পূর্ণ কুম্ভ মুখে আম্রসার,
বাধিছে সাজায়ে, রোপিছে কদলি,
গাঁথিছে যতনে কুসুমের হার,—
অই দেখ কত খেলে হেলি দুলি!

৬

নারীগণ মিলি দিছে হুলুধ্বনি,
শ্বেত বৈজয়ন্তি উড়িছে গগণে,
মঙ্গল কামনা করি বিপ্রগণ,
হইয়াছে সবে ব্রত স্বস্ত্যয়নে,
ব্রাহ্ম, মহম্মদী, খৃষ্টান—সকলে,
উপাসনা গৃহে একত্র মিলিয়া,
ভুলিয়া সন্তাপ, মনের আহ্লাদে,
গাইছে সঙ্গীত তোমা দেখিয়া।

৭

হল বহুদিন, গিয়াছে আনন্দ,

ঢাকিছে ভারতে গভীর আঁধার,—
যে উৎসব আজি তব আগমনে,
জানি না, কখন হবে কি না আর।
আসিয়াছ যদি ভাগ্যে ভারতের,
জানাইব দুঃখ, করিব রোদন,—
চক্ষু ভরি আগে দেখি চাঁদ মুখ,
ভুলি শোক তাপ, জুড়াই জীবন।

৮

আসিছ ভারত দেখিবে বলিয়া
কি আছে ভারতে, কি দেখিবে হায়?
দুখিনী ভারত এবে ভিখারিণী?
কি আছে তাহার দেখা'তে তোমায়?
সুখের আকর, চিত্তবিনোদন,
যে কিছু দেখিতে পাইছ ভারতে,
হারাইয়া ছিল ভারত এসব,—
পাইয়াছে পুনঃ বৃটন হইতে?

৯

রাজপুত্র চির সুখে থাক,
আসিছ ভারতে দিন দুই তরে,
দেখিয়া শুনিয়া ভারতের দুখ,
পাছে ব্যথা পাও কোমল অন্তরে,
তাই আশঙ্কিয়া ভয় হয় মনে,
সেইহেতু কাঁদিতে সাহস না পায়,
অথবা সবলে দেখিয়া তোমায়,
ভুলিয়াছে নিজ দুঃখ সমুদায়?

১০

দেখিয়া তোমায় ভুলিয়াছে দুখ?
ভুলিবার কথা — কেন না ভুলিবে?
দরিদ্র লভিলে রতন ভাণ্ডার,
দরিদ্রতা আদি দুখ পাসরিবে?
দীর্ঘ নিশা অন্তে আলোকের রেখা,
দীর্ঘ দুঃখ পরে সুখের মিলন,
কেমন মধুর, কে বুঝিতে আর,
বিনা সেইজন, ভোগিছে যে জন!

১১

কোমল হৃদয়ে ব্যথা হবে বলি,
এবে না কাঁদিলে, কাঁদিব কখন?
আসিয়াছ যদি বহু ভাগ্য বলে,
শুনিতেই হবে এসব ক্রন্দন।
ভারত শাসিনী রাজ্ঞী বিক্টোরিয়া,
দিলে অবসর কিছু দিন পরে,
বিপুল রাজ্যের দুরবহ ভার,
রবে, যুবরাজ? আপনারি করে।

১২

বলি তবে শুন——
রত্নগর্ভা বটে ছিল এ ভারত,
এখন সে রত্ন গর্ভে নাই তার।
কে নিল?—জানি না, কিন্তু দেখি সদা
ভিক্ষা উপবাসে মলিন আকার?
সামান্য অভাব হলে উপস্থিত,
ক্রন্দনেতে করে মেদিনী বিদার,
বৃটন শুনিলে প্রতীকার ঘটে,
নহিলে কেবল বিফল চিৎকার?

১৩

ভারত ঐশ্বর্য্য শুনিয়াছ যত,
পাইবে না তার কিছুই দেখিতে,
নাই বালুকাতে হীরক মিশ্রিত,
নাই স্বর্ণ রেণু নদীর জলেতে?
সোনা, রূপা হীরা পূর্ণ পরিমাণে,
আছিল ভারতে—কথা মিথ্যা নয়,
ভারে ভারে সব গিয়াছে বিদেশে,
এখন সে সব স্বপ্ন বোধ হয়!

১৪

তবে এ ভারতে কিছুই কি নাই ?
আছে, কিন্তু তাহা নহে সুপ্রচুর,
কেবল দেখিলে প্রকৃতির শোভা,
ক্ষণ মাত্র হয় দুঃখ রাশি দূর ?
এই যে উত্তরে গগণ পরশে,
প্রাচীরের বেশে আছে হিমালয়,
হিমানী টোপর পরিয়া মাথায়,
অতুল শোভায় তোষিছে হৃদয় ?

১৫

আরো ঐই মধ্যে বিন্ধ্য গিরিবর,
প্রহরীর মত আছে দাঁড়াইয়া,
তাহার দক্ষিণে দুই ঘাট গিরি,
আছে দুই কূলে সাগর বাধিয়া।
প্রকৃতি আপনি বাঁধিয়াছে গড়,
নিবারিতে যেন শত্রু আগমন,
যুবরাজ ? আর শত্রুভয় নাই,
নির্ভয়ে করুন ভারত শাসন ?

১৬

সিন্ধু ব্রহ্ম পুত্র সিন্ধু গোদাবরী,
যমুনা, শরযু নর্ম্মদা, কাবেরী,
কৃষ্ণা, তুঙ্গভদ্রা, মহানদী আদি
আছে ভারতের বক্ষ শোভা করি ?
শ্যাম শস্য পূর্ণ বিস্তীর্ণ প্রান্তর,
পশু পক্ষী আর মহীরুহ গণ,—
স্বভাব দিয়াছে এই অলঙ্কার,
এই মাত্র আছে ভারতের ধন।

১৭

শুনি সুখী হবে, বলি তবে শুন,
আর তার আছে একটি রতন,—
সুখে কিম্বা দুঃখে, সম্পদ বিপদে,
রাজ ভক্ত সদা আর্য্য সুত গণ।

ভ্রম দেশে দেশে, দেখ ইতিহাস,
এমন রতন মিলিবে না আর,
নারী পুত্র ধন প্রাণ আশা ছাড়ি,
বাঞ্ছে আর্য্যগণ মঙ্গল রাজার ?

১৮

আর্কট নগর অবরোধ কালে,
আত্ম সুখ ভুলি সিপাহি সকল,
অন্ন দানে পালি প্রভুর জীবন,
অন্ন মণ্ড পানে বাঁচিল কেবল ?
প্রভু ভক্তি এত, বল যুবরাজ ?
ইতিহাস আর কত দেখা যায় ?
বিদেশীর গুণে ভুলি কোন জাতি,
দেশের রক্ষা ছাড়িবারে চায় ?

১৯

হোম, ব্রত, যাগ, তীর্থ পর্য্যটন,
ধর্ম্ম লাভ তরে করে আর্য্যগণ,
এ সকল কিন্তু বিফলেতে যায়,
না করিতে পারি রাজ দরশন।
শাস্ত্রে বলে মুখ দেখিলে রাজার,
পুণ্য লাভ হয়, পাপ দূরে যায়,
এই পুণ্য লাভে আর্য্য সুতগণ,
বহুদিন হ'তে বঞ্চিত ধরায়।

২০

আসিছ ভারতে, আনন্দ সকলে,
নয়ন ভরিয়া দেখিবে তোমায়,
কিন্তু, দরিদ্রের দরশন আশা,
রয়েছে নগরে —নগরের লোক,
হৃদয় বিদীর্ণ হবে পুনরায়।
দেখিয়া তোমায় জুড়াইছে মন,
কোটি কোটি দুঃখী পল্লি গ্রাম বাসি,
না দেখি তোমায় করিছে রোদন ?

ঢাকিছে ভারতে গভীর আঁধার,—
যে উৎসব আজি তব আগমনে,
জানিনা, কথন হবে কি না আর।
আসিয়াছ যদ ভাগ্যে ভারতের,
জাগাইব দুঃখ, করিব রোদন,—
চক্ষু ভরি আগে দেখি চাঁদ মুখ,
ভুলি শোক তাপ, জুড়াই জীবন।

৮

আসিছ ভারত দেখিবে বলিয়া,
কি আছে ভারতে, কি দেখিব, হায়?
দুখিনী ভারত এবে ভিখারিণী?
কি আছে তাহার দেখাতে তোমায়?
সুখের আকর, চিত্তবিনোদন,
যে কিছু দেখিতে পাইছ ভারতে,
হারাইয়া ছিল ভারত এসব,—
পাইয়াছে পুনঃ বৃটন হইতে?

৯

রাজ পুত্র, চির সুখে থাক,
আসিছ ভারতে দিন দুই তরে,
দেখিয়া শুনিয়া ভারতের দুখ,
পাছে বেথা পাও কোমল অন্তরে,
তাই আশঙ্কিয়া ভয় হয় মনে
কেহই কাঁদিতে সাহস না পায়,
অথবা সরলে দেখিয়া তোমায়,
ভুলিয়াছে নিজ দুঃখ সমুদায়?

১০

দেখিয়া তোমায় ভুলিয়াছে দুখ?
ভুলিবার কথা,—কেন না ভুলিবে?
দরিদ্র লভিলে রতন ভাণ্ডার,
দরিদ্রতা দুরিত দুঃখ পাশরে?
দীর্ঘ নিশা অন্তে আলোকের দেখা,
দীর্ঘ দুঃখপরে সুখের মিলন,
কেমন মধুর, কে বুঝিতে আর,
বিনা সেইজন, ভোগিছে যে জন।

১১

কোমল হৃদয়ে বেথা হবে বলি,
এবে না কাঁদিলে, কাঁদিব কখন?
আসিয়াছ যদি বহু ভাগ্য বলে,
শুনিতেই হবে এসব ক্রন্দন।
ভারত শাসিনী রাজ্ঞী বিক্টোরিয়া,
দিলে অবসর কিছু দিন পরে,
বিপুল রাজ্যের দুর্বহ ভার,
ববে, যুবরাজ! আপনারি করে।

১২

বলি তবে শুন——
রত্নগর্ভা বটে ছিল এ ভারত,
এখন সে রত্ন গর্ভে নাই তার।
কে নিল?—জানিনা, কিন্তু দেখি সদা
ভিক্ষা উপবাসে মলিন আকার?
সামান্য অভাব হলে উপস্থিত,
ক্রন্দনেতে ভরে মেদিনী বিদার,
বৃটন শুনিলে প্রতীকার ঘটে,
নহিলে কেবল বিফল চিৎকার?

১৩

ভারত ঐশ্বর্য্য শুনিয়াছ যত,
পাইবে না তার কিছুই দেখিতে,
নাই বালুকাতে হীরক মিশ্রিত,
নাই স্বর্ণ রেণু নদীর জলেতে?
সোনা, রূপা, হীরা পুঞ্জ পরিমাণে,
আছিল ভারতে—কথা মিথ্যা নয়,
ভারে ভারে সব গিয়াছে বিদেশে,
এখন সে সব স্বপ্ন বোধ হয়?

১৪

তবে এ ভারতে কিছুই কি নাই ?
আছে, কিন্তু তাহা নহে সুপ্রচুর,
কেবল দেখিলে প্রকৃতির শোভা,
ক্ষণ মাত্র হয় দুঃখ রাশি দূর ?
এই যে উত্তরে গগণ পরসে
প্রাচীরের বেশে আছে হিমালয়,
হিমানী টোপর পরিয়া মাথায়,
অতুল শোভায় তোষিছে হৃদয় ?

১৫

আরো অই মধ্যে বিন্ধ্য গিরিবর,
প্রহরীর মত আছে দাঁড়াইয়া,
তাহার দক্ষিণে দুই ঘাট গিরি,
আছে দুই কূলে সাগর বাঁধিয়া।
প্রকৃতি আপনি বাঁধিয়াছে গড়,
নিবারিতে যেন শত্রু আগমন,
যুবরাজ ? আর শত্রুভয় নাই,
নির্ভয়ে করন ভারত শাসন ?

১৬

গঙ্গা, ব্রহ্ম পুত্র সিন্ধু গোদাবরী,
যমুনা, শরযূ নর্ম্মদা, কাবেরী,
কৃষ্ণা, তুঙ্গভদ্রা, মহানদী আদি
আছে ভারতের বক্ষ শোভা করি ?
শ্যাম শস্য পূর্ণ বিস্তীর্ণ প্রান্তর,
পশু পক্ষী আর বনরুহ গণ,—
স্বভাব দিয়াছে এই অলঙ্কার,
এই মাত্র আছে ভারতের ধন।

১৭

শুনি সুখী হবে, বলি শুন শুন,
আর এক আছে একটী রতন —
সুখে কিম্বা দুঃখে সম্পদ বিপদে,
রাজ ভক্ত সদা আর্য্য সুত গণ।

ভ্রম দেশে দেশে, দেখ ইতিহাস,
এমন রতন মিলিবে না আর,
নারী পুত্র ধন প্রাণ আশা ছাড়ি,
বাঞ্ছে আর্য্যগণ মঙ্গল রাজার ?

১৮

আর্কট নগর অবরোধ কালে,
আত্ম সুখ ভুলি সিপাহি সকল,
অন্ন দানে পালি প্রভুর জীবন,
অন্ন মণ্ড পানে বাঁচিল কেবল ?
প্রভু ভক্তি এত, বল যুবরাজ ?
ইতিহাসে আর কত দেখা যায় ?
বিদেশীর গুণ ভুলি কোন জাতি,
দেশের বন্দন ছাড়িবারে চায় ?

১৯

হোম, ব্রত, যাগ, তীর্থ পর্য্যটন,
ধর্ম্ম লাভ তরে করে আর্য্যগণ,
এ সকল কিন্তু বিফলেতে যায়,
না করিতে পারি রাজ দরশন !
শাস্ত্রে বলে মুখ দেখিলে রাজার,
পুণ্য লাভ হয়, পাপ দূরে যায়,
এই পুণ্য লাভে আর্য্য সুতগণ,
বহুদিন হ'তে বঞ্চিত ধরায়।

২০

আসিছ ভারতে, আনন্দে সকলে,
নয়ন ভরিয়া দেখিবে তোমায়,
কিন্তু দরিদ্রের দরশন আশা,
রয়েছে মনে রে — না দেখে লোক,
হৃদয় বিদীর্ণ হবে পুনরায়।
দেখিতে তোমায় চাহিছে মন,
কোটি কোটি দরিদ্র পল্লি গ্রাম বাসি,
না দেখি তোমায় বড়ি দুঃখ মোদের ?

২১

ধন, মান, আর বিদ্যা আছে যার,
সেইত পাইল রাজ দরশন,
অর্থ ব্যয় করি যাইয়া নগরে,
করিল সফল শ্রবণ নয়ন ?
দিনান্তে যাদের ঘটে না আহার,
বল যুবরাজ! তাদের কি হবে ?
বহু অর্থ দিয়া বহু দূরে যেয়ে,
কেমনে তোমার বদন হেরিবে ?

২২

দেখিছ নগরে যত আড়ম্বর,
পল্লিগ্রামে তার কিছুই ত নাই ?
যদ্যপি দেখিতে কর পদার্পণ,
না মিলিবে তথা বসিবার ঠাঁই ?
যুবরাজ তুমি! বহু মূল্য মণি,
মানিক্য খচিত তোমার আসন,
কাঙ্গাল কৃষক কি বলে তোমায়,
বসিবারে দিবে জীর্ণ কুশাসন ?

২৩

ধন্য টুটনিয়া ধন্য ভাগ্য তোর ?
কত সুখে তুই কাটাস্ সময়,
সদা সুখী তোর সন্তান সকল,
কভু দুঃখ সহ নাই পরিচয়!
যাবে না দেখিয়া মনের বেদনে,
সমস্ত ভারত করেছে রোদন,
তুই পুত্র বলে তাহার চরণ,
হৃদয়ে ধরিয়া করিস বহন ?

২৪

তবু যুবরাজ! ভারতের ভালে,
কত পুত্র ছিল, দেখিল তোমায়,
থাক কিছু দিন, হাস্থক ভারত,
থাকুক ভুলিয়া দুঃখের জ্বালায় ?

কিছু দিন থাকি দেখি শুনি যাও,
ভারত তোমার থাকে কোন সুখে,
জিজ্ঞাসা করিয়া জান এসময়,
সদাই ভারত কাঁদে কোন দুখে ?

২৫

আর এক কথা,—বলিব বলিব,
মনে করিয়েছি, কিন্তু ভয় হয়,
যাহ'ক,—যখন পেয়েছি তোমায়,
বলিব খুলিয়া, করিবনা ভয়,—
যাহারে বলিলে মনের বেদনা,
ঘুচিবে যাতনা, হবে প্রতীকার,
তাহার নিকটে বসিয়া কাঁদিব,
কি লজ্জা তাহাতে, ভয় করি কার ?

২৬

বিস্তীর্ণ ভারত —প্রজা বহু তার,
সহজত নয় শাসন তাহার,
ছাড়িয়া তাহারে থাক বৃটনেতে,
মধ্যে ব্যবধান থাকে পারাবার।
অদৃষ্ট আবর্ত্তে ঘুরিতে ঘুরিতে,
পড়িছে ভারত তোমারি করেতে,
গুরুতর অতি শাসন তাহার,
এ ভাবে তাহারে হয় কি ছাড়িতে ?

২৭

বলি, যুবরাজ! কর অবধান,
এবর ক্রন্দন রাখ রাখ মনে,
বৃটন দেখিয়া ভুলোনা ভারত,
কহিও এসব জননীর স্থানে।
কহিও—যে ভাব দেখিলে ভারতে,
যে দুঃখ তাহার করিলে শ্রবণ,
তোমার নিকট শুনিলে এ কথা,
নিশ্চয় গলিবে জননীর মন।

২৮

কহিও—যাদের নাই বিবেচনা,
হিত প্রতি নাই দয়া মায়া লেশ,
সে সব (লোক) লোক আসিয়া এখানে
কেন আর দেয় ভারতের ক্লেশ ?
"নিগার" বলিয়া ভারত সন্তানে,
বিজাতীয় ঘৃণা যাহার প্রকাশে,
"নিগার" নিনাতে আমোদ যাদের,
আর যেন তারা না আসে এদেশে।

২৯

কহিও—মায়ের সন্তানের প্রতি,
সমস্নেহ যেন থাকে চিরকাল
বৃটন হইতে দূরে আছে বলি,
ভারতের যেন ভাঙ্গে না কপাল।
ভারত যখন রোদন করিবে,
কান পাতি তাহা করিলে শ্রবণ,
মঙ্গল ঘটিবে, নতুবা বিপদ !—
সাগরে ভারত হবে নিমগন ?

৩০

অবশেষে মাত এক ভিক্ষা আছে,
চাহিতেছে তাহা, চায় বার বার,
কহিও মায়ে র, সেই ভিক্ষা এই—
বৃটন ভারতে সম অধিকার।
যদ্যপি মন না পারেন অর্পিতে,
এই অধিকার অকাতর মনে,
তবেই ভারত রবে চির দিন
এক হারে গাঁথা বৃটনের সনে ?

৩১

তবেই ভারতে ঘুচিবে আঁধার,
সুখ দিবাকর আবার উদিবে,
ঘুচিবে অশান্তি, যাবে দুঃখ ভার,
শান্তির পতাকা আবার উড়িবে ?
অধীনা বলিয়া ভারতের মনে,
হবেনা হবেনা দুঃখের উদয়,
সহিছে ভারত যে সব যাতনা,
কিছুই রবেনা—যাবে সমুদয় ?

৩২

দীনা ভারতের মলিন বদন,
আমোদ প্রফুল্ল হইবে আবার,
হেরিবে বৃটনে সহোদরা যেন,
সুখে দুঃখে হবে সম ভাগী তার
যত দিন ভবে রবে নর জাতি,
আনন্দে ভারত বলিবে সবায়,—
"হারাইয়া সব ছিলাম দুঃখিনী,
বৃটন এসুখ দিয়াছে আমায় ?"

শ্রীশরচ্চন্দ্র চৌধুরী
বেহালা—হাইস্কুল।

প্রিনস অব ওয়েলসের ভারত-বর্ষে আগমন।

শ্রীযুত বাবু রামদাস সেন
লিখিত

পুলকিত মন, করিয়া শ্রবণ,
হইবে লোকের রাজ দরশন।
ভারত ভুবন, হইল এখন
সৌভাগ্য কিরণে উজ্জ্বল বরণ।
আর্য্যগণ সবে হইয়া মিলিত,
গাই সবে এস আনন্দের গীত।
আম্রশাখা দিয়া নগর তোরণ,
সুসজ্জিত কর সকলে এখন।
বাদ্য মনোহর, কর অবিরত,
মৃদঙ্গ, মন্দিরা বাঁশরি বিষাণ,
যত পুর বালা লয়ে হেম থালা
কর প্রিনস্ শিরে পুষ্প বরিষণ,

ভারতের প্রজা সবে রাজ ভক্ত,
রাজগুণ গানে সদা অনুরক্ত,
কৃতজ্ঞ অন্তরে সকলে এবার,
সবে রাজ গুণ করিব কীর্ত্তন।
যত গৃহ দ্বারে, কুসুমের হারে,
সুসজ্জিত কর বিবিধ প্রকারে,
কবদীপদান, উড়াও নিশান,
করি পূর্ণ ঘট রাখ চারিধারে,
সাদরে সম্ভাষি এস যুব রাজ,
ধন্য কর আজি ভারত সমাজ,
তব পদ স্পর্শে ভারত ভবন,
করিবে ধারণ উজ্জল বরণ।

যুব রাজের শুভাগমনে
ভারত সন্তানের সঙ্গীত।

ওহে যুব রাজ! আজ কি সুকৃতি,
লভিল ভারত,—পাইল পীরিতি।
হ'ল সুপ্রভাত অন্ধকার রাতি,
ঐ দেখা যায় সু। সূর্য্য ভাতি।
শুভক্ষণে তব শুভ আগমনে,
ক্ষরে সুধ ধারা ভারত ভবনে।
আনন্দ লহরী ছুটিয়া আদরে
বিলায় সন্দেশ প্রতি ঘরে ঘরে।
তব আগমন ঘুষিবার তরে,
দে। যুব রাজ নগরে নগরে,
সহকার শাখা পূর্ণ ঘট মুখে,
দ্বারে কদলি দাঁড়ায় সুখে?
আর কিবা আছে? দিতে উপহার
সোনার ভারত এবে ছার খার?
তুমি পৃথী শ্রেষ্ঠ রাজ কুল-মণি,
(কপাল দোষেতে ভারত দুখিনী?)
ভারতীয় গণ প্রফুল্ল বদন,
সাজিতেছে বটে রাজ দরশনে,
কি দিবে যতুক? নাহি কোন ধন?
কোথা পাব তব যোগ্য সিংহাসন?
নাহি তব যোগ্য অশন বসন,
নাহিক তুষিতে রতন ভূষণ।
বহুদিন বরষ ঘরা তাড়নে,
প্রচণ্ড দুরন্ত কঠোর শাসনে,
শুকা'য়েছে রক্ত, আছি ক্ষীণ দেহে,
এ যে দেখহে শোকাশ্রু প্রবাহে,
ভাসিছে ভারত। নাহি গাত্রে বল,
নাহিক বাণিজ্য, নাহি শিল্প কল,
নাহি তত্ত্ব জ্ঞান, নাহিক বিজ্ঞান,
পদার্থ দর্শন, সাহিত্য নিদান,
কিছু মাত্র নাই, গিয়াছে সকলি,
আছি মাত্র ক টা দরিদ্র কাঙ্গালি।
তাই বলি পুন দরিদ্রের ঘরে,
কিছু নাই মোরা আছি রিক্ত করে।
দেখে তোমা'হেন অমূল্য রতন,
কি আছে হে কিসে দেখাব যতন?
অথবা যা আছে সকলি তোমারি,
অখণ্ড ভারতে তুমি অধিকারী?
কিবা কোন ধন? ঐশ্বর্য্যে কি কাজ?
দরিদ্রের ধন বিখ্যাত সমাজ,
আশীর্ব্বাদ করি হও চির জীবী,
চির সুখী হ'য়ে পালহ পৃথিবী,
ক্রমে গ্রহণ ভারতের ভার?
রাজ কুলের নীতি জ্ঞানাধার?
দয়ার সাগর দয়াবতী সুত?
ভারতে পালিতে হও প্রতিশ্রুত।
প্রণত প্রজারে লও কোলে তুলে
ঐ কর পুটে মুঠিতেছে ধূলে?
বিপদে সম্পদে ছাড়িবার নয়,

একান্ত তোমারি ভারত তনয়।
শুভাদৃষ্ট গুণে যদি পুণ্য ফলে,
তোমাহেন ধনে পাইয়াছি বোলে,
মনে হয় তবে বাসনাপুরাই,
হৃদয় বিদারি খুলিয়া দেখাই,
অনন্ত কালের অনন্ত বারতা,
সকলি আছে হে হৃদয়েতে গাঁথা ?
শত শত শত যুগ বলিলে ও রবে
সে পূর্ব্ব কাহিনী শেষ নাহি হ'বে।
যাহা হোক্ যদি শুনিবে বাসনা ?
দৈবে হইয়াছে তব আগমন,
স্বচক্ষে দেখহে ভারতের দশা,
এক মাত্র তুমি ভারত ভরসা ?
আর এক কথা ওহে গুনবান
চির রাজ ভক্ত আর্য্যের সন্তান।
শুনিয়া থাকিবে আর্য্য ইতিহাসে,
শত শত স্থান পূর্ণ এই রসে।
যাগ যজ্ঞ আদি শ্রাদ্ধ অনুষ্ঠানে,
*রাজার সমান দেবতার সনে,
অদ্যাপি ভারতে আছে সেই প্রজা—
অদ্যাপি মানসে করে রাজ পূজা।
সেই রাজ ভক্তি মাত্র এ ভারতে,
আজো আছে, তাই সেই ভক্তি সূতে,
কবিতা কুসুমে গাঁথিয়াছি হার—
তব পদ্য করে দিতে উপহার।
সামান্য ফুলের সামান্য এহার,
সৌরভ বিহীন তাহাতে এবার,
একি তব যোগ্য ?—দিব কোন গুণে ?
তবে যদি হয় সুপবিত্র মনে,
সামান্য হওনও দরিদ্রের ধন,
ব'লে গ্রাহ্য। তবে কর হে গ্রহণ ?
দিই তুলে, দাও ও কর কমল,
হোক্ হে কবির জীবন সফল।

শ্রীরামকৃষ্ট মিশ্র

দেব গ্রাম।

যুব রাজ

বহ, পরিমল বহ মলয় অনিল,
কাঁপিয়া কাঁপিয়া চল নদীর সলিল,
সরোবরে সুখে ফুট ভাসগো নলিনি—
উদিবে ভারতে যুবরাজ দিনমনি।
বিনানিয়া চারু ঘনকেশ, সীমন্তিনি,
সুন্দরি সিন্দুর বিন্দুকটিয়া মোহিনি,
বিনোদিয়া পর বেশ, উষাবিনোদিনি—
উদিবে ভারতে যুবরাজ দিনমনি।
নিমীলিত কলি গুলি, মাধব জাগাও,
মনোহর ফুল সাজে ভারতে সাজাও,
মধুকর কর তাহে গুণ গুণ ধ্বনি—
ভারত উদিবে যুবরাজ দিনমনি,
মধুর মৃদুল তানে কোকিল সদলে,
কভু উড়ি, কভু বসি গাও কুতূহলে—
যুবরাজ গুণ গাও——হ'ক প্রতি ধ্বনি—
ভারতে উদিবে যুবরাজ দিনমনি।
তরুনীল পাতা গুলি, উড়ি বায়ু ভরে,
যুবরাজ গুণ গাও মৃদু, মধু স্বরে,
ওহে দিবাকর, হয়ে গগনেউ ধাও,
ধরি মনোহর বেশ আলোক ছড়াও।—
এত দিনে প্রভাতিল দুখের রজনী,
উদিবে ভারত যুব রাজ দিনমনি।
যমুনা জাহ্নবী কিম্বা সরস্বতীতীরে,
চক্রবাক সুখে বুঝে স্বীয় প্রেয়সীরে—
আঁধারে ডুবিয়া, প্রিয়ে, আছিল ভারত,
ক্রমে দেখ হয়, মনোহর আলোমত,
ফুটিল হৃদয় পদ্ম মন্দ তারাগণ,

অনা শশধর যথা ক্ষীণ প্রভগণ।
প্রেয়সিরে আর যেন নাহর যামিনী—
থাকুক ভারতে যুবরাজ দিনমণি।
কেদার নাথ বাগচী

যুব রাজ

বুঝি আজি এত দিনে তব শুভ আগমনে
অস্তমিত সুখ সূর্য্য ভারত আকাশে,
মনোজ্ঞ নবীন ভাব, পূর্ণ প্রভা প্রকাশিবে
বুঝিবা ভারত পুন পুজিবে উল্লাসে।
সমস্ত ভারত আজ ধরি কি সুন্দর সাজ
ধরিয়াছে রাজপুত্র ভেটিতে তোমারে।
আপনি প্রকৃতি সতী ঐ দেখ বসুমতি
সাজায়েছে মনোহর বিচিত্র আকারে।
দু খিনীর অলঙ্কার কিছুই নাহিক আর
ভারতের পূর্ব্বের্দ্ধ সমৃদ্ধি সকলি।
নাহিক অযোধ্যা আর ইন্দ্র প্রস্থ চমৎকার
নাহিনে হস্তিনাপুর ভারত উজলি।
কি দেখাব বল আর ভারত কঙ্কাল সার
দেখাবার দ্রব্য আর পাইব কোথায়।
স্মরিলে পূর্ব্বের কথা মা্রসে উপজে ব্যথা
ভারতের শেষ দশা এই হল হায়।

রাজপুত্র

কুঞ্জর দলিত যথা কণক নলিনী লতা
রবি কর দগ্ধ হয়ে ক্রমেতে শুকায়,
দুরন্ত যবন গণ সদা করি আক্রমণ
ভারত কণক লতা দলেছে দুপায়।
হিমাচল পাশে বসি যেদিন বাল্মিক ঋষি
গাইল মধুর তানে ভারতের জয়।
কোথা পাব সেই দিন সুখ সূর্য্য চির দিন
কোথায় উদিত থাকে সকল সময়?

মলিন ভাগ্যহীন আজি হে ভারত দীন
অভিমতী দাসী সম পুজিছে তোমায়।
কিন্তু ভেবে দেখ মনে ভারতের দশা পানে
একদিন পূর্ব্বে ছিল এ জগৎময়।
কি কাজ স্মরণে আর গত সুখ বারবার
রাজ পুত্র এসে তব ধরিয়া চরণে।
বলিতে বিনয় করি রাখি পদে দয়া করি
দেখ হে দয়ার চক্ষে ভারত সন্তানে।

বনগ্রাম
শ্রীগোপাল চন্দ্র চট্টোপাধ্যায়
৭ ন পটল ডাঙ্গা ষ্ট্রীট

যুবরাজ এলবার্টের নিকট
নিবেদন।

১

গাইব আনন্দে সুখ সবদের শশি,
আজি এ ভারতে গাব ব্রিটন বিজয়
এত দিনে ভারতের বুঝি দু খ নিশি,
পোহাইল সুখ সূর্য্য হইল উদয়।

২

ধরি! কি সুখের দিন তব আগমন
অষ্টাদশ সত পঞ্চ সপ্ততি খ্রীষ্টাব্দ,
ধন্য এ ভারত বর্ষে, রবে অনুক্ষণ,
সকলের হৃদে গাঁথা এই সুখ শব্দ।

৩

দেখিলাম শতাধিক বর্ষ প্রায় গত,
ইংলণ্ড সুখদ ছত্র আশ্রিত ভারত,
কিন্তু হায় কবে কেন সুখ উপজাত,
হয়েছে কাহার হৃদি উচ্ছ্বসিত এত,

৪

ধন্য আজ ভারত-বর্ষ। সার্থক জীবন,
ভারত বাসীর। আজ পেয়েছে নিকটে,

আবাধনের ধন, হৃদি খুলে দিবেন,
বরিবে আপন হৃ খ কৃতাঞ্জলী পুটে।

৫

শুনিয়া কি ভারতের দু খে বিলাপ,
দুস্তর সাগর তীর অথবা দেখিতে,
শুনিয়াছ ইতিহাসে প্রচণ্ড প্রতাপ,
আসিয়াছ রাজপাট ই লণ্ড হইতে।

৬

দেখিবে ভারত, কিন্তু দেখিতে কি আছে?
দুর্নিবার কাল রাহু চক্র আবর্ত্তনে,
কীর্ত্তি খ্যাতি আদি যত সব গ্রাসিয়াছে,
দহিছে ভারত বাসী অনন্ত আগুনে।

৭

নহে গৌরবের কথা, যাহা এ ভারতে,
ছিল এক দিন তাহা সাহ সিকন্দর,
জানিয়াছিলেন আর পরেশোর নামে,
আর জেনেছিল যত গজনী র সধর।

৮

কে দেখেছে? কে বলিবে কেবা বিশ্বাস?
ছিল এ ভারতে যাহা, কিন্তু বাসি বাসি?
ভাগীরথী দুই কূলে রয়েছে প্রকাশ,
আজি ও অক্ষয় নাসে কাল সর্ব্বনাশি।

৯

এখানেই উদেছিল পার্থ্য যশ শশি,
আবার এখানে কাল চক্র আবর্ত্তনে,
অস্তমিত সে শুধা শু কাল তমোরাশি,
আচ্ছাদিয়া রহিয়াছে ভারত এখনে।

১০

এখানেই আর্য্য কুল তেজ হুতাসন,
প্রদীপ্ত হইয়াছিল আবার এখানে,
নির্ব্বাপিত সে অনল বিধির লিখন,
ভস্ম পাত্র অবশেষ রয়েছে এখন।

১১

হায়! যে ভারতবর্ষ ছিল একদিন,
অনন্ত রতন খনি সুখের আগার,
নাহি সে সকল কিছু আজি দিনহীন,
দু খের অতল জলে দিয়াছে সাঁতার।

১২

কি কুক্ষণে দেখায়ছ সাহ সিকন্দর,
উচ্চারিল মহামন্ত্র আসি সিন্ধু তীরে,
সে দিন হইতে আর্য্যসুত বিষধর,
প্রণত করিল শীর সভয় অন্তরে।

১৩

সেই দিন হইতে হায় এ ভারতবর্ষে,
প্রেবেশিল কৃষ্ণপক্ষ তিল ২ করি।
কীর্ত্তি খ্যাতি আদি যত কালতমোগ্রাসে,
নিপেষিল চারি দিক তিমির আবরি।

১৪

উচ্ছ্বসিত বিচী নানা করি ভীম রব,
নাসে যথা তীর পুন ২ সন্তাড়নে,
নাশিয়াছে বিদেশীয় ভারতের সব,
এই রূপ বার ২ ভীম আক্রমনে।

১৫

যবনের প্রপীড়ণ অগ্নি দুর্নিবার,
যে জ্বালায় আর্য্যসুত হল জ্বালাতন,
শতশত বর্ষ জল ঢালি অনিবার,
অক্ষম জাহ্নবী জ্বালা করিতে বারণ।

১৬

না জানি ভারত বাসীর কোন ভাগ্যবলে?
পেয়েছিল ব্রিটনের সুখদ আশ্রয়,
মনে লয় কোন দিন এই কৃপাবলে,
শীতল করিবে সবে দগধ হৃদয়।

১৭

নব বারি সমাগমে দাবাদগ্ধ বন,
অঙ্কুরিত হয় যথা, তেমনি ভারত,
ব্রিটনের কৃপা জল করি পরশন,
হইতেছে দিন ২ প্রাণ সঞ্চারিত।

১৮

কি সুখের দিন সে দিন যে দিন আপন,
প্রজা দু ঃ নিবারিনী মাত বিক্টরিয়া,
লইলেন এ ভারত দীন হীন জানি,
আপন কোমল ক্রোড়ে যতন করিয়া।

১৯

যথা ভীত সুতে কবি ক্রোড়ে সযতনে,
"ভয় নাই" বলি মাতা করেন সান্ত্বনা,
তেমনি মা বিক্টরিয়া ঘোষণে বচনে,
নির্ভয় করেছেন্ যত ভারতীয় গণ।

২০

সুখে আছি ব্রিটনের সুশীতল ছায়ে,
আমরা ভারত বাসী রক্ষ সুবিচারে,
কিন্তু এক দু খ মোদের সদাই হৃদয়ে,
নিবেদিব তব পদে বাসনা অন্তরে।

২১

নাহি চাই ধন জন সহায় সম্বল,
ই লণ্ড হইতে ভারতের ধন জনে,
কর ভারতের রক্ষা মিনতি কেবল,
বক্ষিতে পারিবে ভারত ভারতীয় গণে।

২২

দেখ দূরে থাকি (পিতা যেন সন্তানেবে),
ভাসিবে ভারত আজ সুখের সাগরে,
গাইবে আনন্দে উর্দ্ধ করি দুই করে,
ব্রিটন বিজয় ধ্বনি মোহিয়া সংসারে।

২৩

নহে রাজ ভক্তি শূন্য ভারত হৃদয়,
কোন কালে, তবু যদি সন্দ হয় মনে,
দেখ বিচারিয়া যত বেদ তন্ত্র চয়,
কি ভাবে ভারত ভাবে নর পতিগণে।

২৪

নহে উপেক্ষার ধন ভারত তোমার,
ভারত ঈশ্বর, করে এ রাজ্য শাসন,
রাম যুধিষ্ঠির আদি নৃপতি সভার,
আজি ও রয়েছে নাম অঙ্কিত স্মরণ।

২৫

বসে এই স্বর্ণ ময় ভারত আসনে,
কর সুখে রাণ রাজ্য যগযুগান্তরে,
রহিবে অক্ষয় কীর্ত্তি এই ত্রিভুবনে,
হইবে সুচীর জীবি রাজ লক্ষী বরে,

২৬

হি সা দ্বেষ অবিচার হবে অদর্শন,
ধর্ম্মের প্রধবল বলে, দীনতা দুর্ব্বার,
হবে সম্মার্জ্জিত সুখ সম্মার্জ্জনী গুণে,
ভারত আনন্দ নীরে দিবেক সাতার।

২৭

অনন্ত আকাস প্রান্তে আছে যত দিন,
তারা শশি দিবাকর, বিজয় ব্রিটন,
পতাকা অবাধে হউক ভারত উড্ডীন,
দিবানিসি আমাদের এই আকিঞ্চন।

শ্রীগোলোক চন্দ্র সর্ম্মা
ছাত্র,
শ্রীহট্ট

(প্রিন্স অফ ওয়েলসের শুভাগমন সম্বন্ধে।)

"There belongeth to kings from their servants both tribute of dutty and presents of affection

Bacon

অকস্মাৎ কেন কেন,
ভারত হইল হেন,
আনন্দের ধ্বনি আজি পূরে চারিধার,
যেদিকে ফিরিয়া চাই,
সে দিকে দেখিতে পাই,
সুখের সাগরে সবে দিতেছে সাঁতার।
অমূল্য রতন রাজি,
পরিয়ে ভারত আজি,
মেতেছে আপন মনে আনন্দ উৎসবে,
ধরেছে সুচারু বেশ,
নাহি আর শোক লেশ,
যে জানিত হেন দিন ভারতের হবে?
ওই দেখ নভোপরি,
নবীন সুষমা ধরি,
হাসি হাসি মুখ খানি—শোভে শশধর
তারকার দল যত,
হাসি তেছে অবিরত,
বিতরিছে সারানিশি সুধাময় কর।
ওই দেখ স্তরে স্তরে,
ফুটিয়াছে থরে থরে,
গোলাপ চামেলী যুঁই ফুল যত না,
সে বাস লইয়া কোলে,
মৃদুল অনিল দোলে,
বহিতেছে ধীরি ধীরি করি মৃদুরব।
ময়ুর বসিয়া গাছে,
পেকম তুলিয়া নাচে,
মধুর অমৃত কণ্ঠে কোকিলারা গায়,

অবিরতা ক্লেশ ভুলি,
সুখের নিশান তুলি,
ওই দেখ দিনমণি আকাশেতে ধায়।
ওই জাহ্নবীর জল,
করি রব কল কল,
মৃদুল গতিতে যায় সাগরের পানে,
সকলে মোহিত আজি আপনার গানে।
কি কারণে কেন কেন,
সকলি হইল হেন,
সকলেরি মুখে কেন আনন্দের ধ্বনি?
ওইযে মিলিয়ে সবে,
গাইতেছে এক রবে,
পুরিছে সে স্বরে আজি আকাশ অবনিঃ—
এস এস যুব রাজ,
এসেছ ভারতে আজ,
কি সুখের দিন আজি—হেরিনু তোমায়,
করেছিনু মনে মনে,
হেরিব গো কত দিনে,
দয়া করি দয়াময় ঘটাইল তায়।
কি সুখের দিন আজি হয়েছে উদয়।
থরকর হু থরবি,
এবে লুকায়েছে ছবি,
ভাগ্য বলে আমাদের সুদিন উদয়।
সবে মিলে গাই মোরা কুমারের জয়।
ভারতের প্রতি ঘরে,
আনন্দ বিরাজ করে,
দীনের শোকরাশি আজিরে বিলয়,

সবে মিলে গাই মোরা কুমারের জয়।
ভুলেছি অধীন ক্লেশ,
নাহিক দুখের লেশ,
এমন সুদিন আর কার ভাগ্যে হয় ?
সবে মিলে গাই মোরা কুমারের জয়।
এসেছ কুমার তুমি,
হেরিতে ভারত ভূমি,
কি আনন্দ ভারতের হেরগো নয়ন,
যতেক ভারত বাসী,
আনন্দ উৎসবে ভাসি,
মাতিয়াছে সুখে আজি আনন্দের মনে।
কিন্তু যুবরাজ।
বলিব একটী কথা,
দারুণ হৃদয় ব্যথা,
মনোযোগ দিয়া শুনি রাখিও স্মরণে,
বিলাতে ফিরিবে যবে,
মাতার নিকটে কবে,
কত দিনে স্নেহ্যগণ, ভাই ভাবে আলিঙ্গন,
করিবে ভারত মাঝে বিজিতের সনে

শ্রীমনিলাল শেট।
৩ নং প্রসন্নকুমার ঠাকুরের ষ্ট্রীট,
পাথুরিয়া ঘাটা, কলিকাতা ॥

যুবরাজ।

THE PRINCE OF WALES

১

এস এস যুবরাজ ভারতের মনি হে,
ভারত দুখিনী,
ভারত কি ধন ধরে, তোমারেই পূজা করে,
জুড়াই তাপিত প্রাণ চির কাঙ্গালিনী।

২

কি দিয়ে পূজিব বল নাহি হেন ধন হে,
বাঙ্গালি হৃদয়ে,
লেখনী প্রস্তুত যাহা, অবাধে বলিব তাহা,
প্রেম ভক্তি সব এই "বাঙ্গালি হৃদয়"।

৩

বাজাও ভারতবাসি। বিজয় বাজনা হে,
সবে ঘরে ঘরে,
তোমাদের প্রাণ ধন, করিতেছে আগমন,
গাও যশোগান তাঁর সুললিত স্বরে।

৪

জয় জয় জয় রবে কাঁপাও মেদিনী হে,
কাঁপুক ভারত।
ভাবের তরঙ্গ তুলি, জয় জয় এই বুলি,
উঠুক আকাশ মার্গে উঠুক সতত।

৫

বল্মে তুমি গো দেবী বিশ্ব বিমোহিনী,
দাও দেও পদাশ্রয়,
এ দাস তোমার বরে, দিবে যুবরাজ করে,
বাঙ্গালি হৃদয়ে যাহা হইল উদয়।

৬

শোভাব ভারত পর অমূল্য বসন গো,
যুবরাজ তরে,
আলোক আলোকময়, ভারতে দিকচয়,
কিবা অপরূপ হেরি প্রফুল্ল অন্তরে।

৭

যুবরাজ জননীরে হের একবার হে।
করুণা নয়নে,
ভারতের যাহা ছিল, তব পদে বলি দিল,
তবু না পুরিল আশা ভাবে মনে মনে।

৮

"কোথা আর্য্য সুতগণ কোথায় এখন হে,
ভারত রতন,
ভারতের শিরমণি, অনন্ত রত্নের খনি,
কোথা কালিদাস আদি আর্য্য সুধীগণ।"

৯

কোথা ভানুমতী দেবী বিদ্যা বিনোদিনী গো,
বিদ্যার সাগর,
তোমাদের যুবরাজ, এসে'ছে ভারতে আজ,
হেরিতে প্রাচীন কীর্ত্তি বিশ্ব মনোহর।"

১০

বাজিল বিজয় ভেরী বাজিল এবার হে,
ভারত কন্দরে,
বাজে প্রতি ঘরে ঘরে, বাজে কি মধুর স্বরে,
শোভন বাঁশরী আহা ভূধর শিখরে।
নগরাজ তুলি শীর্ষ গগণ উপরে হে,
করে জয় ধ্বনি,
গগণে উঠিল রব, দেবতা মানব সব
আইল ধাইয়ে তারা সেই রব শুনি।

১২

পূরিল ভারত আজ কি মধুর রবে হে,
সুধর সুন্দর,
সাগর সঙ্গমে উঠে, অশনি চৌদিকে ছুটে,
আনন্দ লহরী পূর্ণ ভারত অন্তর।

১৩

বিজয় নিশান তুলে ভারত নাচিছে হে,
হরষিত মন,
ভারতের সুখ শশী পশ্চিম আকাশে বসি,
ঢুষিছে সবারে তার বিমল কিরণে।

১৪

ছি ছি ছি ভারতবাসি বাদিও না আররে,
মহ্লারের তরে,
তোমাদের যুবরাজ, এসেছে ভারত মাঝ,
দুঃখ ত্যজি উঠ গাও সুললিত স্বরে।

১৫

ভারত মহিমা আজ সবে ঘরে ঘরে,
গাও সুললিত স্বরে,
মহ্লারের কথা ভোল, হৃদয়ের দ্বার খোল,
প্রেম ভক্তি উপহার দেও নৃপবরে।

১৬

ভারতের দুঃখ নিশা অস্তমিত হলো রে,
সৌভাগ্য উদয়,
আর কি ভাবনা বল, ভারত পবিত্র হল,
আনন্দ উৎসবে মাতে ভারত আলয়।

১৭

ওই দেখ, পালে পালে গজপাল সব রে,
যত রাজগণ,
হেরিতে ভারতেশ্বরে, সজ্জিত তুরঙ্গ পরে,
অপূর্ব্ব মাতঙ্গ চড়ি করিছে গমন।

১৮

ওই দেখ, কত শত ব্রিটিশ সেনানী রে,
সাজে কুতূহলে,
বিচিত্র সমর সাজে, বিচিত্র সেনানী মাঝে,
দাঁড়াইয়ে সর্বত্রক লয়ে দল বলে।

১৯

গভীর নিনাদে উঠে জয় জয় ধ্বনি রে,
আকাশ ভেদিয়া,
অশনীর রব প্রায়, যুবরাজ স্বর্গে যায়,
আনন্দ লহরী হৃদে উঠে উথলিয়া।

২০

মোদের ভারত আজি কি আনন্দ হলো রে,
ভাবে মনে মনে,
এ যেন সুখের ঘর, নাহি বিশ্ব চরাচর,
একি হেরি নব সূর্য্য উদিত গগণে।

২১

'জয় ভারতের জয়' শুনি চারি দিকে রে,
কাঁপিল ভারত,
প্রত্যেক হৃদয়ে বাজে, প্রত্যেক হৃদয় মাঝে,

অপূর্ব্ব ভাবের স্রোত বহে নদী মত।

২২

সে রব দক্ষিণ পূর্ব্বে পশ্চিম উত্তরে রে,
উঠে নিনাদিয়া,
বন উপবন যত, সুগন্ধ বিস্তারে কত,
চৌদিকে কুসুম চয় উঠে প্রস্ফুটিয়া।

২৩

হিমালয় শৈল হতে কুমারিকা* অবধি রে,
যত জনপদ,
আনন্দ উৎসবে ভরা, যুবরাজ জয় ধরা,
পরেছ বিচিত্র সাজ জিনি কোকনদ।

২৪

কি অপূর্ব্ব শোভা হেরি ভারত ভিতরে রে,
নয়ন মোহন,
পূর্ণশশী যেন আজ, উদিত ভারত মাঝ,
আহা কি সুন্দর দেখে পুলকিত মন।

২৫

কিন্তু রে ভারতবাসি কাহার রমণী,
ওই গহন কাননে,
আলু থালু কেশ পাশ, ভূমেলোটায়েছে বাস
উদাস উদাস, হাসি নাহিক বদনে।

২৬

নাচিল ভারতবাসী আনন্দ উৎসবে রে,
নাচিল সব।,
কেন এ নিবিড় বনে, বসে ওই একাসনে,
কি লাগি হয়েছে আজ বিরস বদন।

২৭

জান না ভারতবাসি তোমাদের প্রাণ রে,
ভারত জননী
স্মরি পূর্ব্ব বাস গণে, স্মরি স্বাধীনতা ধনে,
বিষম বদনে হায় বসে একাকিনী।

* কুমারিকা Cape Comorin

২৮

স্মরিয়ে ভারত ভাগ্য বিষাদিত হয়ে রে,
ভাবে মনে মনে,
"কোথা সূর্য্য বংশধর, চন্দ্র আদি দিক্‌পাল,
কোথা সে বৌদ্ধ, কোথা স্বাধীনতা ধনে।"

২৯

"চির নিদ্রা ত্যজি হায় উঠ একবার হে,
উঠ নিনাদিয়া,
ওই দেখ দিকচয়, সৌরভে সৌরভময়,
আনন্দ পূর্ণিত স্রোত উঠে উছলিয়া।"

৩০

কি হবে ভারত মাতা বসিয়ে বিরলে গো,
বিষাদিত মনে,
এসগো মা কুতূহলে আনন্দে মাতি সকলে
ভক্তি উপহার দিই নৃপেন্দ্র চরণে।

৩১

যা কপালে ছিল মাত হয়েছে সকলি গো
পড়েছে ভারত,
পড়িল ভারত আজ, রক্ষা কর যুবরাজ।
তোমার চরণে মাতা হলো পদানত।

৩২

"যুবরাজ জননীরে ত্যজ না মিনতি গো,
কবি ও চরণে,
শোকেতে কাতরা হায়, অতি জীর্ণ শীর্ণ কায়,
ভরসা আছে হে দিবে স্থান ও চরণে॥

শ্রীকেদার নাথ বসু
হরিনাভি স্কুল, ৫ম শিক্ষক।

যুবরাজ।

আজি কি আনন্দ ভারত ভবনে।
নাচিছে সকলে পুলকিত মনে।

রাজ দরশন করিবার তরে।
কেহ ঘরে দ্বারে, নগরে প্রান্তরে।
স্বদেশী বিদেশী, পাঠান যবন।
কত যে চলেছে কে করে গণন।
দীপালোকে পূর্ণ বারাণসী পুরী।
কি শোভা হয়েছে মরি মরি মরি।
ঘোড়া গাড়ি সব কাতারে কাতার।
চলিতেছে কত সংখ্যা নাহি তার।
নানাবিধ স্বরে বাজিছে বাজন।
আহা! কি মধুর শ্রবণ রঞ্জন।
"জয় ইংলণ্ডের জয় জয় জয়"
এই শব্দ ভিন্ন শুনা নাহি যায়।
ভক্তি মালা মাল্য করিয়া রচন।
দেয় রাজ গলে আর্য্য সুতগণ।
অবরোধ থাকি কুল বধূগণ।
বাতায়নদেশে করে দরশন।
যে ভারত ছিল অন্ধকার ময়।
সুখ রবি এবে হইল উদয়।
এত দিনে বুঝি ভিক্টোরিয়া মনে।
পড়িয়াছে যত ভারত সন্তানে।
পাঠালেন তাই আপন কুমারে।
ভারত দুর্গতি দেখিবার তরে।
কি দেখিবে ভ্রাত! কি আছে এখন।
হয়েছে সকল নিষ্ঠুর যবন।
আর্য্য কুল লক্ষ্মী গিয়াছে ছাড়িয়া।
স্থান মাত্র সব রয়েছে পড়িয়া।
রত্নাকর সম ছিল যে ভারত।
অন্যায় লুণ্ঠনে হইয়াছে হত।
তবুও যা ছিল করিয়াছে ক্ষয়।
দুর্ভিক্ষ ভীষণ, আর মারিভয়।
ধন মান যশ গিয়াছে সকল।
ভারত চরণে পরেছে শৃঙ্খল।

স্মরিলে হৃদয় যায় বিদরিয়ে।
রয়েছে সকল উপকথা হয়ে।
কি হবে বলিয়া বলি নাক তাই।
তব হৃদে ব্যথা দিয়ে কাজ নাই।
জান ত দুখিনী ভারত কামিনী।
গেল চির কাল হয়ে পরাধীনী।
মনের মতন বিদ্যা আলোচন।
পারে না করিতে কুল বালাগণ।
যদি ভাগ্যবশে এসেছ কুমার,
করে যাও দেশে সুনীতি প্রচার।
ভারতের যাতে হয় গো উন্নতি,
কর এই কাজ রাজ মহামতি।

১

যুবরাজ মুখ করিয়া দর্শন,
মিটাইব যত মনেরি আশ।
সব দুঃখ কথা বলিব খুলিয়া
আনন্দে বসিয়া ভ্রাতার পাশ।

২

এই আশা সদা করিয়া মনন
ধৈরজ ধরিয়া ছিলাম মনে।
আইলে কুমার জানিব সকল,
অবশ্য বাসনা পূরণ হবে।

৩

মনের বাসনা মনেতে রহিল,
কার দোষ দিব? বিধি বিড়ম্বন।
অজ্ঞতা বশত হৃদয় বেদন
হইয়া রহিল বোবার স্বপন।

৪

ভগিগণ দুঃখ না শুনি শ্রবণে,
অমনি চলিলে নিজ নিকেতনে।
এই কি উচিত ভ্রাতার কাজ?
[illegible] ভোগে ভারত সমাজ

দেখিলে না চক্ষে ভারত রাজ।

৫

তব সমীপেতে ভিক্ষা অবলার,
স্ত্রীশিক্ষা প্রচুর কর গো দান।
পিঞ্জর বাসিনি বিহঙ্গীর মত,
থাকিতে পারিনে বেদনা প্রাণ।

৬

কি দোষ করিল ভারত বালা
ভাবিয়া বুঝিতে পাইনে মনে।
বলিও মায়েরে ওহে যুবরাজ,
হয় নাকি স্নেহ এ কন্যাগনে।

কোন ভারত মহিলা।

যুবরাজ আসিবেন শুনিয়া ভারতের উক্তি।

১

উল্লাস তরঙ্গে ভাসি, ছাড়াও কিরণ রাশি,
মম সুখে সুখী হয়ে আজ দিনমণি।
সুরভি মাখিয়া গায়, বহ হে মলয় বায়,
উল্লাসি সরসি হৃদে হাঁস সরোজিনী।
নতনে ভারত বালা, সাজাও ফুলের ডালা,
উৎসবে মাতিয়া সবে দাও হুলুধ্বনি।
বড় শুভদিন আজ, আসিছেন যুবরাজ,
শুভক্ষনে আজ মম পোহাল রজনী॥

২

চৌদিকে মঙ্গল বাদ্য বাজুক সঘনে।
যত দিগাঙ্গনা গণ, হয়ে প্রফুল্লিত মন,
সাজাও সুন্দর অঙ্গ বসন ভূষণে।
ধরহ বরণ ডালা, কেহ লহ ফুল মালা,
বরহ ত্বরায় গিয়ে তাঁরে সযতনে।
বড় শুভদিন আজ, আসিছেন যুবরাজ,
কৃপা করি অধীনীরে হেরিতে নয়নে॥

৩

অঙ্গ বঙ্গ কলিঙ্গের কবিচূড়া গণ।
ললিত মধুর তানে, ভাবী ভূপ গুণগানে,
যথাসাধ্য কর তাঁর চিত্ত বিনোদন॥
বিনায়ে চাঁচর কেশ ধরিয়া মোহিনী বেশ,
তোষিবারে পূজ্যপদ অধীনের মন।
যে আছ নর্ত্তকী বঙ্গে, নাচ সবে রস রঙ্গে,
বিবিধাতে কর তাঁর চিত্ত বিনোদন॥
বড শুভদিন আজ আসিছেন যুবরাজ,
দীনা হীনা অধীনীরে দিতে দরশন॥

শ্রীরাধিকাপ্রসাদ চট্টোপাধ্যায়।

উপহার।

এস বঙ্গ বাসী গণ, এস বঙ্গ বাসী গণ।
সবলে করিগে ভাবী বাঙ্গাল দর্শন॥
ছাড়হে মলিন বেশ, ছাড়হে মলিন বেশ।
তাঁহাকে জানাও সব স্বদেশের ক্লেশ॥
যাহা কিছু আছে যার,
যাহা কিছু আছে যার।
সকলে মিলিয়া তাঁকে দেও উপহার॥
মোরা বাঙ্গালি দুর্ব্বল,
মোরা বাঙ্গালি দুর্ব্বল।
কিবা দিব উপহার বিহীন সম্বল॥
রাজভক্তি উপহার, রাজভক্তি উপহার।
তাহা দিয়ে করি সবে অভ্যর্থনা তাঁর॥
তিনি প্রজা বৎসল, তিনি প্রজা বৎসল।
দয়া করিবেন, সবে দেখিয়া দুর্ব্বল॥
তাঁর বদন কমল, তাঁর বদন কমল।
দেখিয়া সকলে করি জীবন সফল॥
হয়ে ভক্তি সুখচিত, হয়ে ভক্তি সুখচিত।

তাঁহার সদনে সবে হই উপনীত ॥
তাঁর হেরিতে বদন, তাঁর হেরিতে বদন।
উছলিছে আশাসিন্ধু হৃদয়ে সঘন ॥
তাঁরে করি নিরীক্ষণ, তাঁরে করি নিরীক্ষণ।
আনন্দে মাতিয়া তালে নাচ বন্ধুগণ ॥
দয়াশীল তাঁর মন, দয়াশীল তাঁর মন।
দয়াবান করে সদা সর্ব্বত্র ভ্রমণ ॥
সবে তাঁহার দয়ায়, সবে তাঁহার দয়ায়।
কত সুখ ভোগ করি এই বসুধায় ॥
দেখ ডাকাত দুর্জ্জন, দেখ ডাকাত দুর্জ্জন।
বলে কাড়ি লতে পারে সকলের ধন ॥
কিন্তু তাঁহার যতনে, কিন্তু তাঁহার যতনে।
সকলে রহিছে সদা কোন শাসনে ॥
গত দুর্ভিক্ষ দুর্গতি, গত দুর্ভিক্ষ দুর্গতি।
তাঁহার কৃপায় সবে পেয়েছি মুক্তি ॥
পূর্ব্বতন আকিঞ্চন, পূর্ব্বতন আকিঞ্চন
বহুদিন পরে তাহা হইল পূরণ ॥
হেরি দু খীর অন্তর, হেরি দু খীর অন্তর।
অতুল আনন্দ লয়ে যাবে স্বীয় ঘর ॥
অধীনের আকিঞ্চন, অধীনের আকিঞ্চন।
বঙ্গের দারিদ্র্য নিশী করেন মোচন ॥

যুবরাজ প্রিন্স অব ওয়েল্সের শুভাগমন উপলক্ষে।

১

কপাল ফিরেছে,—এস এস উঠি,
ভারত আকাশে নবীন রবি।
সোনার বরণে উষারে সাজায়ে,
উঠ দেব, দেখি মোহন ছবি।

২

যে রূপ ধরিয়ে অযুত কিরণে,
উঠেছিলে তুমি সরযূ তীরে,
সেই রূপে আজ উঠ উঠ, হেরি,
স্মরি সবে রাম রঘুবর বীরে।

৩

রঘুবীর নাই,—নাই কি সে তেজ?
গিয়াছে বল্লে কি আসিবে না আর?
আপ জ্যোতি লয়ে কি করিবে দেব?
পূর্ণ রূপে এস ভারত আঁধার।

৪

শিখরে সাগরে গহনে কাননে,
জলে স্থলে কর জীবন সঞ্চার,
রঘু শির ভূষা কোথা সে কিরণ?
সব লয়ে এস—ভারত আঁধার।

৫

নও কি তপন। সে তপন তুমি?
নতুবা তোমার কোথা সে কিরণ?
উঠেছ গগণে তথাপি কেন যে,
আঁধারে রয়েছে ভারত ভবন?

৬

রয়েছে ভারত আঁধারে পড়িয়ে,
তোজোময়। তারে যদি দেখা দাও,
থাকিতে কিরণ আঁধারে ফেলিয়া,
কোন প্রা। পুন কোথায় লুকাও?

৭

এস এস এস ব'সো নীলাকাশে,
তোমারে হেরিয়া উঁচু মুখে চাই,
গৌরবের সাক্ষী প্রাচীন ভারতে,
তুমি বিনা, দেব, আর কেহ নাই।

৮

ভারতের ধন ভারতে এল না,
যাবে না এ ক্ষোভ চির দিন, তাই,

সাধিয়ে সাধিয়ে বিষাদে ভাবিয়ে,
অসুখে কাল তো কাটাতে নাই।

৯

প্রজাগত প্রাণ, প্রজাবে ছাড়িয়ে,
কভু কি কোথাও থাকিতে পারে?
নূতন লীলায় ভারতে ভাবিতে,
আবার শ্রীরাম আসিতে পারে।

১০

এবে সে ভবনা দূর দেশে রাখি,
সাগর সঙ্গমে দেখ না চেয়ে।—
ভারত নরেশ কুমারে লইয়া,
আসিছে তরণী উল্লাসে ধেয়ে।

১১

উঠ উঠ উঠ শীতের তপন।
শরৎ শশী রে! উঠ আকাশে।
মৃদু মৃদু বহ মলয় সমীর,
বসন্ত কুসুম অমিয় বাসে!

১২

অয়ি শশধর! দিনেশ মণ্ডল!
রাখ অনুরোধ ধরিয়ে বিকার।—
তোমরা তো পাবে যথা কালে কাল,
সে কালে এখানে রবে না কুমার।

১৩

বসন্ত বিটপে বাসন্তী কুসুম,
হরষে বিকাশে কুমারে হের,
অকাল ঘটনা দেখিয়া আমোদে,
হাসিয়া মলয় অনীল ফের।

১৪

অথবা আকাশে একদা উজলি,
রবি, শশী, তারা, স্থির ভাবে রও।
সুনীল সরসে নলিনী বসিয়া,
কুমুদিনী সনে হেসে কথা কও।

১৫

শীতল সমীরে হেলিয়া দুলিয়া
শ্যামল প্রান্তর সোনার সাজে,
বিবিধ গতিতে পাখা উড়াইয়া,
ভুলাবে বিহগ, ভারত রাজে।

১৬

বিপীনে বিটপী চাঁদের কিরণে,
গেঁথে মালা, হিম হিরার ফলে,—
পার যদি, তারে সজতনে লয়ে,
দাও উপহার কুমারের গলে।

১৭

টৈশ াণ হৃদয়ে ধরিয়া,
যবে ভাগীরথী ধীরে ধীরে যান,
ঝাঁকে ঝাঁকে পাখী তীরেতে বসিয়া,
গাইও হরিষে বিবিধ গান।

১৮

প্রকৃতি সুন্দরি! ভারতে তোমার,
মোহিনী মূরতি, শুনিয়া কানে,
অনন্ত সলীলা সাগর বাহিয়া,
আসিছে কুমার বঙ্গীয় যানে।

১৯

না আসিতে এবে, ছাড়ি দীন বেশ
নবীন বসন ভূষণ পর,
আসিলে লুকায়ে নয়নের জল,
হৃদিন হরষ দরশন ধর।

২০

কেঁদনা কেঁদনা,—বলি পুনঃ পুনঃ,
কথা শুন, দাও দীন বেশ ফেলে,
রোদন তোমার কপালের লেখা
যদিও আবার কুমার গেলে।

২১

অতুলন গুণে অপরূপ রূপে,
মোহিয়াছে যদি সকল ভুবন,
এবে যুবরাজে দিও না যাইতে,
রাখ দিয়ে তাঁরে রাজার আসন।

২২

যুবরাজ তুমি আসিছ ভারতে,
এস, হাত ধরে তুলিয়া লই,
বহু দিন পরে, আজ ভ্রাতৃবরে,
মনের বারতা খুলিয়া কই।—

২৩

মনে বলে,—ঐ সুনীল আকাশে,
স্থির যদি থাকে তপন শশী,
গড়ি তার নীচে সোনার আসন,
হেরি, তদুপরি যুবরাজ বসি।

২৪

মনে বলে,—ঘরে বাসের পিপাকে,
দু ঃ রে সাগরে ডুবিয়া যাই,
চন্দ্র সূর্য্য দেবে সহায় করিয়া,
নাভে, রাজ পানে, মাথা তুলে চাই!

২৫

তথায় আপন ভাগ্য দোষে যদি,
আশা করে শেষে নিরাশ হই,
অসীম যোজনে অন্তরীক্ষে চেয়ে,
"অতুল জ্যোতি" রে বেদনা কই!

২৬

সব আশা মিছা সকলই স্বপন,
এস যুবরাজ আপনার ঘরে;
পথে ঘাটে দ্বারে বিতলে ত্রিতলে,
আলোকে পুলক তোমার তরে।

২৭

কলিকাতা আদি প্রসিদ্ধ নগরী,
হেরিবে তোমারে হরষিত মনে,
পল্লী স্থান যদি দেখিবে না তুমি,
দুখে, ধরি ছবি, দেখ দরপণে —

২৮

ঐ দেখ ঘোর জঙ্গলের মাঝে,
পাতার কুটিরে মলিন বাস,
নিশ্চল নয়নে জল ধারা হেরি,
কতই বিষাদে ছাড়িছে শ্বাস।

২৯

ভাঙ্গা ঘরে ঐ কাঁদিছে ছেলেটী,
কাঙ্গালী মায়ের আঁচল ধরি,
ফোটে ফোটে ফোটে পড়িছে মায়ের,
বুক ফাটা জল নখর ঝরি।

৩০

ঐ দেখ কেবা কারে বা মারিছে,
কার্ বা উঠিছে শিকল পায়।
পথ ভুলি দেখ নয়ন বিহীন
দস্যুর হাতে জীবন হারায়।

৩১

ঐ যে কাননে স্বভাব সুন্দর,
বন ফুল, নীল নয়ন মেলি।
নিদয় পুরুষ ভীষণ বিচারে,
জলন্ত আগুণে দিতেছে ফেলি।

৩২

ও দিকে, কুমার। শুন, দেখ চেয়ে—
প্রণয় পুতলী বাঙ্গলা ঘরে,
সখিরে ডাকিয়ে অমিয় বচনে,
কি ভাবে কতই আলাপ করে।—

৩৩

"আসিলে এখানে যুবরাজ ভাই,

যমের দুয়ারে দিতাম কাঁটা,
ভ্রাতৃ দ্বিতীয়া পরব সুদিনে,
দিতাম ললাটে ভাইয়ের ফোঁটা।"

৩৪

আবার দেখনা কাহারে দেখেবা,
সহসা আলাপ ভাঙ্গিয়া দিল,
লাজের আভাবে অপরূপ ছবি,
ঘোমটা টানিয়া ঢাকিয়া দিল।

৩৫

মন কথা এক কহি যুবরাজ।—
বিদেশী নিবধি হেন নহে লয়,
আমাদেব যা যা দেখি যেমন,
তোমাদেব মন তেমন নয়।

৩৬

তাই আশা, শুভ অভিষেক দিনে,
বসায়ে তোমারে বেদিব উপরি,
"স্ব-র জ" মন্ত্র উচ্চারণে,
ভারত পরাণ প্রতিষ্ঠা করি।

৩৭

সে আশা দুরাশা।—এস যুবরাজ।
ভগিনী সকল পড়িছে পায়,
তাহাদের গতি দেখিয়া যাও,
নহিলে ভারত অধ পাতে যায়।

৩৮

যে নয়নে সেই সাগরের পারে,
ভ্রাতৃ নিকর পানেতে চাও,
আমাদেব পানে সেই ভাবে চেয়ে,
তেমনি মমতা বিচার দাও।

৩৯

সমভাবে দেব, সুবিচারে দাও,
দেখিবে কি ভাবে আদেশ পালি,
সরল স্বাধুতা ধ্বজা উড়াইয়া
"গোকলের" লেখা আগুণে জ্বালি।

৪০

ভারতের শিরে দেব দেব তুমি,
তাই এ কামনা প্রথম নাশে —
অবিচারে যবে আম মরে যাই,
বাঁচাও সবারে ভুতের হাতে।

৪১

শীতল প্রদেশে সাগরের পারে,
সুবা সেবি যদি উপকার পাও,
গরমে আমরা মরি তার তাপে,
তাহারে এবার সাথে লয়ে যাও।

৪২

যুবরাজ। ভ্রাত। শুভ কালে যদি,
দু শিনী ভারতে দিলে দরশন,
দেখা যাহারে,—কবক হবে,
বন পশু পাখী বন বিচরণ,

৪৩

কি করে খাপন?—ভারত ভবনে,
অমূল্য রতনে হবিছে যে কাল,
এখন পরিবা নাশিলে, কুমার।
স্মরণ রহিবে আন্ত কাল।

৪৪

কণ্ঠ উঠে পনে। কহিব না আর।
কহিতে সবে না সকল কথা।
যবে যাহা চাই—দাও বা না দাও—
শুনিও,—দিওনা মরমে ব্যথা।

৪৫

ভারতের দিন ছিল এক দিন,
পূরিত যে দিন সকল কাম—
ইহ সুবলাভ ছিল যথা তথা,
পর সুখ তবে বারাণসী ধাম।

৪৬

হায় মাতৃভূমি। সে দিন তোমার,
ফিরে কি কখন আসিবে না আর?
উঠিবে না আর, ভীষণ সাগরে,
কপালের দোষে ডুবি একবার?

৪৭

কাঁদিছে জননী, কাঁদিছে রমণী,
হাসিছে কুমার তোমার তরে।
অহো কি মাধুরী। বিদেশীর হাসি।
আমাদেরি কেন নয়ন ঝরে?

৪৮

অনন্ত রতন প্রসূতি ভারত,
স্বদেশ আমার মনোরম স্থান।
নিরাপদে আছে। তথাপি বিরলে
স্মরণে, কেন যে কাঁদে মা প্রাণ।

৪৯

গিরীশ শিখরে মহীরুহ শিরে
বিরলে বিসয়ে পাখী করে গান
সায়াহ্ন সমীরে কালে পশি তাই
কি বলে?—কেন যে কাঁদে মা প্রাণ।

৫০

গভীর নিশীথে নির্জন দেশে,
জাহ্নবী যথা কুলু কুলু যান
অদূরে বাঁশরী মনচোরী তানে,
কি বলে?—কেন যে কাঁদে মা প্রাণ।

৫১

কাঁদে না পরাণ কাহার কারণে?
কিছুই দেখিনা—চারি দিকে চাই
সকলই তো আছে। তবু মনে লয়
কি যেন ছিল না তা যেন নাই।

৫২

যবে এস মনে বসুধা রতন।
দেহ ছেড়ে প্রাণ যেন উড়ে যায়,
অ ধার প্রদেশে। তবু কানে শুনি,
কে যেন কাঁদিয়া বিনাইয়া গায় —

৫৩

"সোনার প্রতিমা করিয়া ভারতে,
কেন, রে বিধাত। পাঠালে ভুবনে?
সাধ করে যদি মোহিনী সাজালে,
কোন প্রাণে তারে দিলে হুতাশনে?

৫৪

"সাধ করে যদি মোহিনী সাজালে,
কোন প্রাণে তারে দিলে হুতাশনে?
শুনিলাম—তার সাথে বাঁধিলাম
আশাময়ী গীতি পশিল কাণে

৫৫

"প্রিয় জন্মভূমি। কেঁদনা কেঁদনা।
এবার পেয়েছি আশালতা বনে।
শুনেছি জলদে নবজল দিয়ে,
সাজাবে তাহারে কুসুম ভূষণে।

৫৬

যুবরাজ। আজ্ এই শুভদিনে,
কহিয়া সকল দু খের কথা,—
দুদিন দেখিয়া যদি চলে যাবে—
দিবনা তোমার পরানে ব্যথা।

৫৭

এসেছিল যবে সাগরীয়া দেবী,
কুমার। তোমারে দেখিবে বলে,
চারিদিন দেকে না দেখে না দেখ।,
ডুবেছে বিষাদে সাগর জলে।

৫৮

সহসা এখানে বিদেশী আসিলে
তখন সবার শরীর দহে,

জানিয়া তোমার শুভ আগমন,
ভারতে শীতল অনীল বহে।

৫৯

বারুদ খেলায় নানারূপ ফুল,
আধারে যেমন লুকিয়ে রয়,
নানা আভরণে তেমনি ভারতে,
অদৃশ্য রয়েছে কুসুমচয়।

৬০

এস যুবরাজ। ঐ হাতে লয়ে,
তব সুদর্শন আগুণ দাও,
পুন কালীদাস, পুন ভবভূতি,
ভারত ভবনে রাখিয়া যাও।

৬১

যাও যদি তুমি নিতান্তই যাবে,
অস্তমিত রবি যেওনা ভুলে,
কি দেখিতে এলে কিবা দেখে গেলে,
স্নেহময়ী মায়ে কহিও খুলে।

৬২

শেষ অনুরোধ, কহি যুবরাজ।
শুনেছি আমরা কালের কাছে,
ভারত কমলা ভারত ছাড়িয়া,
সাগর পারেতে লুকিয়া আছে।

৬৩

খুঁজিও তাঁহারে পথে পথে পথে,
দেখিলে কোথাও হাত ধরে বলো
"ভারত বাসীরা খুঁজিয়ে খুঁজিয়ে,
না পেয়ে কাঁদিয়ে শুকিয়ে মল।"

৬৪

"ধন মান লয়ে এসেছ কমলে।
ভুলেনি ভারত ও রাঙ্গা পায়।
মনোরমা রমা গড়িয়া কমলে,
শতদল দলে পূজিছে তায়।"

৬৫

পুণ্য শ্লোক নল মানসে রয়েছে,
যুধিষ্ঠীর দেবে প্রভাতে স্মরি,
রাখ কীর্ত্তি হেথা, অয়ি যুবরাজ।
রাখিব হৃদয়ে যতনে ধরি।

শ্রীঈশ্বরচন্দ্র চৌধুরী,
ভাবেঙ্গা, পাবনা।



TO INDIA

The Prince is standing at thy head,
Thou weeping India, rise ,
Thy bitter tears no more do shed,
Nor groan with heavy sighs

Thy sobbings cease, thy wailings still,
The Prince with joy receive ,
Let foreign steps thy blood not thrill,
Thy mourning heart aggrieve

It is the sympathizing foot,
That treads upon thy breast ,
The Prince with joy and reverence greet,
They sons this day are blest

Retain thy tears , but let them be
Of joy and not of grief ,
Beside the Prince's pitying eye,
They shall be thy relief

Upon thy lap, with joyful tears,
The Glorious Prince receive ,
This day shall end thy piteous fears,
Thy breast no more shall heave

The Sun is rising in the West,
Ah, lo ! the golden glare ,
The morning lark lo ! from her nest,
Soars singing 'bove the air

Of happiness it is the dawn,
That smiles with Western light ,
How sweetly laughing golden lawn,
Thy night hath winged to light

Now raise thy head (in sorrow laid !)
The Royal Prince is come
To warm thee in a happier shade,
Beside the Ganges' hum

No more the Eastern Sun shall touch
Thy mild and gentle breast,
Benignant 'rosy fingered' torch
Shall light thee from the West

To wipe thy tear He's come so kind,
And soon will he thee leave
But he will leave for thee behind,
A happy eternal eve

Unveiled this day thy daughters coy,
His anthem raise in glee,
Thy length and breadth is spanned with joy
The National Jubilee

A. B. C.



Welcome son of our gracious Sovereign!
Behold the land of India our native realm
Poets have sung and warriors have sought
Its far famed riches that surpassed the wealth
Of every other country on the globe
The land which stood the stout blows of strangers
Attracted by her gold, for centuries
The Macedonian came with a mighty train
To whom victory seemed sure, to lay
Upon her his potent hand, but her son
The brave Porus, before him stood to stem
The torrent of his pride and ambition
That rolled uncurbed, unchecked, o'er Asia's plains
And firm and strong, the torrent he withstood
Which unmolesting lay out of our bounds,
Until at last some other way it found,
For India no match to Europe's skill
Was inundated and thus overthrown
There raged the battle whose doubtful issue
Inspired both on to victory or death,

Until Jhelum's banks were strewn with the dead ,
Ah Courage that will ne'er be satisfied
Till crown'd with the laurel or the Cypress !
The Greek felt the weight of our lusty blows,
And thought to conquer us was much for him ,
Thought that a fight with us was fight indeed ,
And victory with us was victory
Then came those of the Prophet wave after wave,
For plunder which this splendid land did give .
This mighty rock withstood those dashing waves
That came on furiously one by one,
Till it was undermined and it once more
Was reft of her rich natural splendour
Then came one by one from the futhest end,
For lawful prize Europe's civilzed sons ,
For our dear land's wealth was worth their labor
So many drew this land with whom we fought
And many hardships we endured from them ,
Such we and such the land that produced us
And drew to her so many from all parts
A land the cradle of philosophy
And sciences that modern nations boast of ,
Where lived great sovereigns of pure wisdom
And saints of intellect performing worthy feats
Discoveries, philosophers now boast
Of having found out were ours, long ago
In those primeval times in some fine arts,
Attained we perfection, so that then,
We were a star and light to all around,
And now to modern nations a wonder
Who stood amazing that we did so much ,
Such then the matchless wisdom of our sires
Come Prince come and behold their progeny ,
We will greet thee with shouts and acclamations
Rising up so high as to rend the air,
And reach heaven's roof bursting from our breasts

Come to this land whose ten score millions of sons
Know well how to honor their queen's son, when
He deigns to be among their cheerful haunts ,
In whom you will find linked many virtues
Truthloving, gentle, and in manners simple
O'er whose whole frame pervade religious thoughts
And far and wide has spread the joyful news
Of thy arrival, and has sent to all
A thrill of joy, for hospitality
Is much delighted to display itself
And days, and months, and years will roll away,
But thy arrival, ne'er shall we forget
Years after to his grandchildren may tell
Some hoary head who saw thee in his land,
Of thy visit and all regarding thee
And the youngsters whose youthful fancies love
To range everywhere and know all things,
With beaming eyes and cheerful countenances,
Will gaze upon him with attentive joy
And sighed they lived not then to have beheld thee
Long may you live and your illustrious mother !
This is a wish of mine and of all India

T RAMA KRISHNA PILLAI

V GANNAPATHY PILLAY,

Mahavidvan,

MADRAS

---

1 பாத ராசல மெனவொளிர் மகதர மமரும
சந்த ராசல சகதொளிர் சந்தன தனப
பந்த ராசலஃ பரவிடு மஹிஷிமுன பயாத
செந்த ராசல விளவர செனுமபெயாத திறலோய!

2 நாக முகதிடு கருதிமுற சேகர னளினப
போக முகதிடு புயகாதம பஞசமம புராய
ஆக முகதிடு கலைகயே யமுனையே யலைசால
வேக முகதிடு தாயகபத திராசனம விரவும

3 மண்ட லமபுகழ வராசன சராசன சேவு
குண்ட லமபுனை யுவாமதி கோடிற வரிருகை
தண்ட லமபெறு மிமாலய தராதர மிதகாசோ
விண்ட லமபெறு திரிதசா வீதினமே வுவால

4 வீர வெணடுகிற கேதன திசாமுகம விரவச
சூர் மெயகவெரு சாபமே யெனவிவா தருளும
பூர பமகயப பூதவி னெனபுகழ கவிஞசா
வார பங்கய மெனவமா கைகமே யிதாகாண

5 அங்க மேயிவ ரருணமே யவநதியாக திரமே
துங்க மாதரு மிலாடமே கவிகைமே தொகுசிரப
புங்க மாதரு நிடதமே புலிநதமே போடவ
கங்கமாரமா புரிதரு காசமே யிவைகாண

6 வாதவீரவெவ குருசிலே! மஹிஷியீன றெடுதத
சாத மாயபுய வெளவண சரோருக முகனே!
பாத ஞானமறைப பராயணம புரிதரு பணவா
இநத வீதியோா தாரகிக சிவரொன வெணணே

7 மூலவிவ வாணகை மடநதையா முகிழ மூலைப போகத
திவலை நறகக மெனவுரை சுகாசன மெயதிப
பலவே ஞானமாம பயோதகி படிநதவ சிவாகாண
கலவ யுநதிர விபருசெயவ கவீசர சிவாகாண

8 மாஜ சேகர மணியணி வரனதிட மலிசேப
பாஜ சேகர பனுமகு டபபாளி பணியும

வேஜ சேகர விததகா விநதமாய விஜேவோன
ராஜ சேகரன ராஜவெனா பினனவ னிவனே

9 புணனி யமபெறு வேதமாா புகழுமபா ரததது
கணணு மஙகிலே யததனி நாயக! காஙகள
கணணு வபபுற விருதயங களிபபுறக கணஞசான
'மனணு வபபுற வழஙகுசுவ வரிசைகொண டருளே

10 பார சூளிய பயோததிப பயோததிய பஞசரா
மார சூனியம புரிசிவன வாரஞ சிலிலவாழ
தார சூனிய வரிசசகதரா றகையிராமபபோப
பாரசூனிய மியறறிடு கிருஷணபாரக கவளே

11 கஙகை மாகுல முதிததிடு கவினமிகழ மேலாம
செஙகை யானாக னகமுக மலாததுசிாய பரிதி!
றஙகை நீதியும றவலரு நீடிறங குடமும
சஙகை யினறியெக காலமுக தழைததிவா ழுகவே

T CHINNASAWMY PILLAY,

Tamil Pundit

Free Church Mission Institution

MADRAS

வெணபா

ஓஙகுபுகழபரினனாஅபவேலஸ உததமனேகினவதள
மாஙகமலமேவு மருடடேனே யீஙகமரும
எஙகளவிழிபாமவண டினிதருநதசெயதவிறைக
கஙகளிநது வகதளரு செயவராம

ஆசிரியவிருததம

1 சீாமருவு கிரேடபரிட டனனவேயாருந
செபபிடு தணடமிலி நாஙகிசேயமெனனம
போமருவு தடததுலவும நுபபிா சீதகி
பெருமாசிவிகடோரியா வொனசஙகம
கோனமையொடு தநத பிரினஸ நுபவேல ஈ முததம
கிகரி லிநது தேசமநி ா மேவலாலே
ஏாமருவு மதனி யவா பினஙெலேோராதம
எழிலயன வெறுஙகுமுதமை ாநதடாதோ

2 குலத்தாயமை பொலாபதி குணமாதேனமை
குலவுமலியாரசி விகடோரியாளாம
இலகு பாறகடலதனில வருபரிவலஅபவெலவ
எழமயிதமே யிஉளி பெயதலாலெத
கலமுளாா அவபமெனு மானரிகூித
தாவில கவிமேவி யிவயாரா யாரூா
நிலவுமொழிவாம வைபபு மாநதமுகநாயிக
நிலமுமகக வினைககாபோற பொலிககனறே

3 கலையறிவு வாயமைகொடை சாநதமாகிக
கழறு சுகுணஙக ளுருககொணடாலனன
இலகுசீர பரிவல ஐபவெலன எனனுஙகோவே
எழிலுறு கறபகததரு வெனறுரைததே விணணோ
இடமெபதிலைகாயாள சினமருடடி
வெனறமவோ கொளவதிலை யாதலாலித
தலமிசை பைஙகருவெவன வோா தெனறா
சாறறு மிடததகனுணமை யறிகிலாரே

4 பூதலசதி னுயிரகள ரலமுருவா னெணணிப
புரிநது கைமமாறுகவாமற பொழியு மேகம
ஆதவனில பொலிபரிவலஅபவெலஸ உனககொபப
பறைவா பலா எமபோல வாதா மெனபாரோ
ஏதமில செகதாமரையின முகமலாநதே
இவசொலதுடன சொனமழை பொழினறுய நீ
பேதமுறத தெழிததுறபபிக கறததுமேகம
பெருஙகிவ நீமழையைப பொழியுமனறே

5 உளமருவு இரேட பரிட்டன வாழி வ ழி
உணமைசெறி விகடோரியா அரசி வாழி
இளவரசாம பரிவலஅபவெலஸ வாழி வாழி
ஏனறுமவா புதலிர மிததிராகும வாழி
ஒரியமரும பாாலியமெனடாரும வாழி
ஓஙகுமிகுவிஷ கவாணமெனடும வாழி
குளிர பொழிலகளிறை யீநது தேசம வாழி
கொறறவா மறறவா யாவரும வாழி வாழி

P JAGANADA PILLAY,

Tamil Munshi

F C Mission School,

CHINGLEPUT.

பிலஹரிஸ்வர ஸாஹித்தியம

பல்லவி

ஆதிபரமே ஜதிசெப ஆலபாட பிரிவலைய வேலை அருளோ

సారిగపద సనిదపా- దప మగరి పరిసనిదసా

அநுபல்லவி,

ஜோதி மகுடாதிபவிக டோரியாதரும சூரியனிகரும (ஆதி)

సారిగప మగపద రీ సనిద పామగరి

சரணம

தினமணி	அனமா	கிவாநா	னனபீ	
గపదరి	సససా	గగగా	రిరిరీ	
உனுமே	வனகோ	னனகா	வனிதமி,	(ஆதி)
పపపా	మగగా	రిససా	రిసనిద	

2

தாகெமெனகெகரும - புகழ - சாலவுரகவரும - மகி

సారిగ గ్గగా-రిగ పాపప్ప పా్ప దప

3

மூாவிறகும - தலமைய - பலமும மகிலவரு புவமும
நாவமொடு நிலவுற (ஆதி)

సా-సస్స-సా్స - గరిసని-నిదప - పదపమ - గరి రీ - గపమగ - రిసరిగ

விரிநீாக திரைகுழ தரு நிலனு - மரிவைவி னெருநணி புருஷனை

పప పా రిరి గపమగగా-గపమగ మగరి స రిగరిస సా,

வருபதியும - அருமதியும-பெருமதியும - மருவிய திருவொடு

రిసనిదసా - రిసనిగపా - దపదరిసా - రిసనిద - దమగరి, (ஆதி)

౪

ஆதரமில - கேகயியரை சோதனைசெயல போகாதா ?

పామగరిగ - దామగరి గ పా మగరి గ సస్స స్స?

ஆதலிளமை - பேதமையொடு - காதலினருள வாரசா!

గారిసని ద - రిసనిద ద - సారిసనిదప - స స్స స్సా

ஏதமகல மனமே ஓதவியல பொனனே நிதநறஇனனியனே,

గారిసరిరి - రిసనిదద్ద ద్దా- పామగగగ్గ గ్గా,

உதவெனபாம - நீதமுநிமலே-பணிவொடு தாதிபுரி குவமுயா

సరిగద పా- రిగరిససా- గరిస ని- దపమ- గరిసరిగ, (ஆதி)

౫

சார பாகபடு புஜமகதரா!

దా పదపమ గరిగగ్గా

மதையளி முகசகதரா!

పదపమ గరిగగ్గా,

சீர பெருக வேபுரிய கலைகசரா

పా దపమ గామరిగ సస్స స్సా

திரமாா - வரமே வருமா கரமுறு

సరి గ, రిగ ప- దపదా- మగరిగ

கேளவோ - மிருமை இகசரா!

దాపమ గరి సస్సస్సా,

கோதகு பரபுகை தபாக முடைய போக!
ಓಸ ನಿ ದದದಾದಾ ಗಾಂಸನಿ ದ ಡ ಓ!

ஆரவ அரசுகரனே!
ಸಾಂಡX ಸಡ ಸನಿ ದ

வாயிகு கதைரனே! இளவரச! வருக (ஆர)
ಪಾದ ನಿ ಪದಪಮ X! ದ ಪಮXಽ ಸಾನಿX,

இங்கிலீஷ்மெட்டு சரத்துடன்

பல்லவி

படசமுடையை எமை எலாம பாலி காலி கோது மாவின (படச)
XX Xಮ Xಡ Xಡ ಸಾ ನಿ ಸ ಓ ನಿ ಸಾ ಡ ಗಾ ಸ

அநுபல்லவி

அடசய அரசுரிமை மருவும ஆபபாட எடவாட அரசனே (படச)
XX XಮX ಡXಡ ಸಡ X ಮಾX ಡ X ಸ ಪಸನಿ ಸಾ,

சரணம்

தார வேதத பகதியும
ಓ ನಿ ಪ ಸX ಓ

தகு சிதான சகதியும
ಡX ಡ ನಿ ಪ ಸX ಓ

சோ தனமை யோடு கருண தோய
ಎ [illegible] ಪ ಮಾಪಮ Xಮ ಓ

திகழும விசய குடிகளாய (படச)
ಡX ಡ ಸನಿಸ ನಿ ಸನಿ ಸಾ

N THAVAPPARUMALIAH,

Telugu Pundit

Free Church Mission,

MADRAS

సీసపద్యము

---

(1) విక్టోరియాగర్భవిశ్రుతాబ్ధిహర్షతరంగసంతతులనుప్పొంగఁజేసెన్న|
విసువిఁగాంచినకవిజనతతిదారిద్ర్య సంతమసంబెల్లనణఁచెనన్న|
మిత్రకైరవములమిత్రసరోజముల్ ముదమునకుఖానఁబొదలఁజేసెన్న
సద్బంధుకోటిలోచనచకోరకకదంబములు తృప్తినిఁజెందఁజేసెన్న

తే. గీ. ప్రిన్సుఆఫ్వేల్సునాఁగనుచెలగెనన్న|
రాజచంద్రుండుబుధకళల్ రమణఁగొలువ|
నిజవినిర్మలకీర్తిచంద్రికలుదిశలఁ|
ఎర్వఁజేసికనుపట్టినిర్వక్రలీల|

చంపకమాలావృత్తము

(2) అరయఁగరాజ్ఞిగర్భమనునట్టిసరస్సునమాన్యనాళముం |
ఇరఁగజనించెఁబానఁగడు ప్రాభవప్రిన్సఫువేల్సునక్షత్రా |
కరసము తేజమున్మధువమందముగాఁగనుజేయుమానసా |
తరంగయనద్విరేఫములుగ్రాలుచుఁ గ్రోలెనుఁగాంచెఁదృప్తిగన్ ||

తేటగీతపద్యము

(3) పరులపకారమొనరించు పట్టిపేరుఁ |
పొల్పుగావచ్చెఁబ్రిన్సఫువేల్సుతోడ |

జనము సోద్భ్రాంతి బెకల్చి దొలసట్టి ।
గర్జితంబులు బొబ్బలు గలుగకున్న ॥

ద్విపద

(4) జయము సర్వంసహాచక్రంబునందు
జయము విక్టోరియా జగదీశ్వరికిని
జయము ప్రిన్సు వేల్సు జననాయకునకు
జయము బ్రాహ్మణ ప్రభు సందోహమునకు
జయము సమస్త రాట్ప్రౌఢులకును
జయము చంద్రప్రభు సంఘాతమునకు
జయము భూమిని గలజన సంతతికిని
జయము సమస్త భాషాశాలలకును



AN OFFERING OF FLOWERS.

सुमनोऽञ्जलिः ।

श्रीमन्महाराजकुमार ड्यूक आव अडिनवरा चरणकमले समर्पित

TO

HIS ROYAL HIGHNESS, THE DUKE OF EDIN-BURGH, K G, K T, G C M G, K G C S I

" किमासनं ते गरुडासनाय । किम्भूषणङ्कौस्तुभभूषणाय ॥
लक्ष्मीकलत्राय किमस्ति देयं । वागीश किं ते वचनीयमस्ति ॥ "

(निबन्धे)

BY

HARIS CHANDRA

जिसको हिन्दी भापा के प्रेमी तथा रसिकजनों के मनोविलास के लिये क्षत्रिय-पत्रिका सम्पादक श्री म० कु० बा० रामदीन सिह ने प्रकाशित किया ।



पटना—"खड्गविलास" प्रेस—बांकीपुर ।

साहब प्रसाद सिंह ने मुद्रित किया ।

१८८८

प्रथमावृत्ति]

[दाम /)

AN OFFERING OF FLOWERS.

सुमनोऽञ्जलिः ।

श्रीम महाराजकुमार ड्यूक आफ एडिनबरा चरणकमले समर्पित

TO

HIS ROYAL HIGHNESS, THE DUKE OF EDINBURGH,

K G, K I, G C M G, K G C S I

" किमासनन्ते गरुडासनाय किम्भूपणङ्कौस्तुभभूपणाय ॥
एक्ष्मीकलत्राय किमस्ति देय वागीशकिन्ते वचनीयमस्ति ॥ "

(निबन्धे)

BY

HARIS CHANDRA

पटना—"खड्गविलास" प्रेस— बांकीपुर

साहब प्रसाद सिंह ने मुद्रित किया ।

१८८८

PREFACE

The short stay of H R H the Duke of Edinburgh at Benares prevented me from personally presenting him this "offering of flowers" on the occasion of his visit to this city With the co operation of some of my esteemed friends, I convened a meeting at my house on the 20th January, and invited many respectable and learned Pundits and Gentlemen to attend it The meeting was formally opened by me by reading the biography of the Royal Prince in Hindi, and in conclusion requesting the gentlemen present on the occasion, to adopt suitable measures for the address The Pundits of the city expressed their great satisfaction, and read individually some Shlokas (verses) in Sanskrit expressing their heart felt joy on the advent of the Royal Prince to this city The verses are entered systematically into this book The meeting then broke The gentlemen present on the occasion evinced great joy and loyalty to the Royal Prince for which, this small book containing the expressions of their sincere loyalty, is most respectfully dedicated to his Gracious feet

BENARES
10*th March* 1870 } HARIS CHUNDRA

Names of the gentlemen present on the occasion of the meeting held for presenting an address to H R H the Duke of Edinburgh

Professor Shri Bapu Deva Shastri, F R A S and Fellow, Calcutta University
Pandit Shri Raja Ram Shastri
" " Basati Ram
" " Govind Deva Shastri
" " Bal Shastri
" " Seetal Prasad
" " Bechan Ram
" " Krishna Shastri
" " Dhundhi Raj Dharmadhikari
" " Ramapati Dube
" " Ram Krishna Shastri Pattburdhana

Shri Shiva Ram Govind Rande
,, Narayan Kavi
,Hanuman Kavi
Hari Ram Bajpaie
Rai Narsinha Das
,, Jaya Krisna Das
,, Lakshmi Chandra
,, Murari Das
,, Valkrishna Das
,, Radha Krishna Das
Babu Vishweshwar Das
,, Madhava Das
,, Madhusoodan Das
,, Gokul Chandra
,, Shyama Das
,, Loke Nath Moitro
Munshi Sankata Prasad
Moulvi Asharaf Ali Khan
Babu Balgovind

श्री ।

[illegible] महामहि[illegible]नि प्रताप[illegible]र्चा[illegible]नसर्वावनिपालपरमहाटवीरगाथा
[illegible]कृतचक्रचूडामणिरत्नचन्द्रिकाच्छादितपादकुमुदाया अपूर्वविद्योद्योतसद्यो-
[illegible]मानमानसमानसायां श्री५महाराज्ञीजयदिव्या सततपरिशीलितविविधविद्या
[illegible] ख्यातिमुदङ्गुणगणैर्यशोभमानो [illegible] दनिवार: नन्दनाधि-
[illegible] श्रीमान् ड्यूकाभिधानो [illegible] दयासिवासिनां दाकिनीतीर-
[illegible]जनानां मानसानानन्दयितुमिव श्रीविश्वेश्वपुरीमाजगाम । ततस्तदागमनसमुत्पा-
[illegible]दकन्दकदम्बाङ्कुरितमहोत्सवप्रां प्राप्तिमागमेन यथा तत्र गृहितशास्त्रप्रवी-
ण समासादितविविधविश्वविद्यालयानेकाविद्वज्जनसमाजविराजिता विविधगुणि
गणगणितगणपरिवेष्टिता [illegible] चिन्मद्याचारप्रचारसम्पादितधनधान्यनदान्य
धन्यसुन्दरमहलङ्कृता सभा समाहिता । तस्यां च प्रथम परमप्राचीनसमीचीनसमय-
समुचितेतिहासविचारणानिष्ठ्वोत्तरांशूय परमां चित्तचमत्कृतिमावहति स्म, ततः श्रीम-
महाराज्ञीतनयप्रचलितकीर्तिकान्तिविराजिताद्वर्शनमनतकौतुकादिगन्तिप्य मान-
सेनाशमप्राप्य काव्यव्याने प्रकाशमानो [illegible]नमन सन्तानानन्दयाञ्चकार ।
तृतीयभागे च तस्यां [illegible] [illegible]मनोनुरञ्जनकरो नाचनादनप्रचार-
रसानन्दचकार ।

इत्थं च सभायाः परमप्रशस्तप्रदायां य कतिपयकाव्यकलाकदम्बो व्यवीतास-
यं यानि पण्डितवरपरिकल्पितकाव्यमुपासेवीकृत्य तदञ्जलिं श्री५युतमहाराज्ञी-
कुमारचरणारविन्दयो समर्पयितुम् महते ।

श्रीहरिश्चन्द्रगुप्त.

श्रीपण्डितबापूदेवशास्त्री।

नित्य पूर्णकला कलङ्करहिता तुल्य दयोत्थामृत
पर्यन्त्यङ्गलभारतात्मजनयो शुक्लाययो पक्षयोः ।
स्पृष्टा नैव कदाप्यरातितमसेत्याद्यैरनल्पैर्गुणै
र्देवी चन्द्रमसं प्रकाममधरीकृत्य स्वय राजते ॥ १ ॥
परमेश्वरेण सृष्ट सकलद्वीपग्रहौघकेन्द्रे य ।
अङ्गलदेशस्तदधिष्ठातृत्वाच्च स्वयप्रकाशत्वात् ॥ २ ॥
बहुलप्रतापवत्त्वात् सकलभुवनजीवनप्रदातृत्वात् ।
सूर्यसमापि निजविनी जनसताप पर हरति ॥ ३ ॥
तस्यास्तनूजो युवराज एडिम्बरोपुरड्यूक इति प्रसिद्धः ।
प्रशान्तिदान्तत्वगुणैरपेत शौर्यादिभिश्चाखिललोकमान्यैः ॥ ४ ॥
सप्राप्य विश्वेशपुरीमिदानीमक जन तर्पयति स्म धन्य' ।
ईशप्रसादाच्चिरजीवितां स प्राप्नोतु नित्य च जयाभिवृद्धिम् ॥ ५ ॥

श्रीपण्डितराजारामशास्त्री।

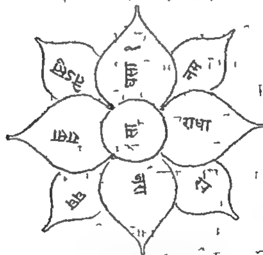
श्रीमत्सर्वनियन्तुर्नियमनशक्तिर्ध्रुव नृमूर्त्तिधरा ।
श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीमद्विजयिनिदेवीस्वरूपेण ॥ १ ॥
सैव च लीलावशतो बहुधात्मान निधाय त्रिदिव ।
सकलधरातल्लोक प्रशास्त्यमुक्त्वा स्वक धिष्ण्यम् ॥ २ ॥
श्रीपार्लिमेण्टनामा सत्सद्वृन्दमण्डिता जयति ।
निष्पक्षपातसारा गुरुत्वकेन्द्रे यतो भवति ॥ ३ ॥
श्रीमद्विजयिनीदेवीदयोदधिसमुद्भवे ।
दोषशून्योदिते चन्द्रे दोषाशून्योदितो वृथा ॥ ४ ॥
रसायनादिविद्याभिर्विद्युयन्त्रादिकर्मभि ।
शौर्यधैर्यादिभिर्युक्ता गुणैरप्य यजातय ॥ ५ ॥
तथापीग्लण्डदेशीये सहजा या दयालुता ।
सस्पर्शो ऽप्यन्यदेश्याना न तया सह जायते ॥ ६ ॥
प्रभुवर निजकोशादातुमीहाऽपि नो चेत् ।
सकलविधधनाना वार्निधेर्वा निधेर्वा ।

शृणु वचनमथापि त्वत्पदाब्जे नत सन् ।
ज्ञपयति जगदेतत् तत्कुरु द्राक् प्रिय न ॥ ७ ॥
भारतवर्षीयाणामायुष आदाय दण्डमेकैकम् ।
कुरु चिरजीवितयुक्तामवनीं विजयिनीं ससुताम् ॥ ८ ॥

श्रीपण्डितबेचनरामः ।

श्रीमन् राज्ञीतनय कवयो ह्यकसाहेब्वर्य
प्रोचुश्चक्षु कमलमिति यत् तन्न दृष्टं मयासीत् ।
दैवादद्य त्वयि नयनयोर्गोचरे जातमात्रे
प्रेमानन्दाम्बलिर्भिकमितैरस्ति सर्वस्य साक्षात् ॥ १ ॥
नृपतिततितुताधिकप्रताप प्रथितगुणाग्र्य महामहद्धिशालिन् ।
जयजय मनुजेश्वरीतनूज त्वयमवलोक्य वय कृता कृतार्थाः ॥ २ ॥

साधसा नमधारासा साराधा रजमा जमा
सांजरी धघमारासा सारासा तेस्तु माधसा



श्रीपण्डितबस्तीरामशर्मा ।

श्रीशम्भोराजधानीं सुरपतिनिकरख्यातकीर्तिः समागा-
च्छ्रीराज्या वर्यपुत्रः सकलरिपुजयी सर्वलोकानुरागी ।
रक्षादक्षः प्रजानां शरणदशरणः शोभिता येन काशी ।
सोयं सेव्य समस्तैः सकलगुणयुतो मोदतां दीर्घकालम् ॥ १ ॥

श्रीबालशास्त्री ।

निर्व्याजौदार्यदयोद्रेकैर्भास्वती काश्यधीश्वरी ।
श्रीमद्विजयिनी देवी भृशं विजयतेतराम् ॥ १ ॥
तस्याः समस्तसामन्तचूडामणिमरीचिभिः ।
समुल्लसत्सार्वभौमसाम्राज्यपदवीजुषः ॥ २ ॥
अयं तनुजनुः श्रीमान् शान्तिदान्तिदयादिभिः ।
राजमानो गुणगणैर्महाराजोधितिष्ठति ॥ ३ ॥
काशीस्थनिवासदनमिदं सभूषयन्निमं ।
लोकोत्तरामनिर्वाच्यां वर्धतीव परां मुदम् ॥ ४ ॥

अतः किं बहुना ।

राजन्सम्प्रति सम्मदं विभृमहे भूयो भवद्दर्शनात्
लब्धार्थाः किल वीक्ष्य सुन्दरसुधाकारं चकोरा इव ।
सानन्दं पुनरेकमेव विनयैर्विज्ञापयामो वयं
स्वीये हृत्कमले स्थलं स्थिरतरं दातुं प्रसीदादरात् ॥ ५ ॥

श्रीगोविन्ददेवशास्त्री ।

सार्वभौमपदवीमधिरूढा सन्ततं विबुधरञ्जनचित्ता ।
राजनीतिगुणनद्धनरेशा श्रीमती जयति काश्यधिदेवी ॥ १ ॥
तस्यास्तनूजोऽयमुदारचेता मातुः प्रजा स्वीयदृगन्तपातैः ।
कुर्वन् सनाथामिहकाशिपुर्यांप्राप्तोऽस्मदीयैर्गुरुपुण्यपुञ्जैः ॥ २ ॥
तं दृष्ट्वा वयमानन्दनिमग्नाः प्रार्थयामहे ।
सर्वेश्वरस्तदीयायुः कुर्यात्पूर्णं शतं समाः ॥ ३ ॥

श्रीवापूदेवशास्त्री ।

अवनिपतिकिरीटकोटिचञ्चत्प्रपदनरव्रजदेवताङ्गजन्मनः ।
सकुशलमिहतातनः प्रवेशः समजनियन्तदहोमदर्द्धयेन ॥ १ ॥
पुरा मूर्तिर्यस्या नृपनुतपदाया शुभतरा ।
हृदि स्मारम्मारं वयमतुल्तोषैकनिलयाः ।

भजन्त श्रीमन्त सुतमहह तस्या विधिवशा-
दिदानीमालोक्य स्थिरतरमुद स्मः सुनियते ॥ २ ॥
श्रीश्रेणिश्रित यत् प्रभूतमभितो दुर्भिक्षमासीदहो
युष्मत्त्रासमरादरातिरिव तन्मग्न पयोधाविव ।
आकर्ण्यागमन शुभैकसदन लोकोऽप्यसौ तावक
शर्म्मागाद्यदिद तदद्य कुशल को वर्णयेद्भूतले ॥ ३ ॥
ईहामहे वयमिहानिशमेव मव्या यात्रा भवेत् तव मृश विगतान्तराया ।
तस्या समस्तमनुजेश्वरसेविताया भक्तिश्च नोऽत्रमवतैव निवेदनीया ॥ ४ ॥
त्रिभुवनपतिरेको योऽस्ति सर्वैकशास्ता शरणगजनरक्षाकर्मदक्ष कृपाब्धिः ।
विलसतु सतत नस्तत्र सुप्रार्थनैषा विगतरिपु तदीय स्याच्चिरस्थायि राज्यम् ॥ ५ ॥

श्रीताराचरणतर्करत्न ।

अज्ञाने गतिदायिनी विपदि या सन्त्रासविध्वसिनी
विद्याया विनियोजिनी शुभमये क्रोडे चिर शायिनी ।
क्षुत्पाते प्रतिपालिनी प्रभवति क्लेशे स्वय दु खिनी
स तोषे सुखिनी श्रिया विजयिनी साम्बा सुतान् रक्षतु ॥ १ ॥
सम्राट्सुताद्य भवदीक्षणजाततोषस्तादृक् समाश्रयति नो हृदयान्तरालम् ।
यादृग् विलोचनविधौ ककुभोऽवकाश स्वच्छाम्बरे शरदि पूर्णशशिप्रकाश ॥२॥
सौभाग्यसारपरिचुम्बिततोषराशिर्यद्विलोकनभवो भवतोऽधुना नः ।
लब्धो न स क्वचन भारतभूमिमध्ये सम्पत्तिपूर्त्तिमयता शतजीविनाऽपि ॥३॥
तेजस्विभिर्बहुतरैरभिकाशयद्भि पूर्णाऽपि भारतधरा न तथा रराज ।
चन्द्रेण हीनरजनीव बुधादिपूर्णा सैषाऽधुना हसति पूर्णविधुर्निशेव ॥ ४ ॥
तथैव पश्यतु श्रीमान्

प्रसन्नचित्ता स्मितपूर्णवक्त्रा जनास्समस्ता स्तव दर्शनेन
कुर्वन्ति केचित्कुशलस्य चिन्ह शसन्ति केचिद्यशस प्रशस्तिम् ।
पश्यन्ति केचिद्भवदास्यशोभां शृण्वन्ति केचिन्मधुराक्षराणि
आयान्ति केचिद्भवदीक्षणाय मुह्यन्ति केचित्सुखिनोऽनिमेषा ॥ ५ ॥

गज्जन्ति पार्श्वे परिपूर्णकुम्भा राजन्ति मार्गे परित पताका.
नृत्यन्ति योषा कृतवेशभूषा गायन्ति तादृङ् मधुरस्वरेण ।
दीप्यन्ति वीथीयुतदीपमाला स्फूर्जन्ति माला निलयोपकण्ठे
वर्धन्ति शोभामिव गेहवत्यारर्पन्ति हर्षान् सकला क्षणाथ ॥ ६ ॥

अतएव ।

कामनाथप्रभो पार्श्वं प्रातिना भाति यद्विधा ।
शीलरत्नहता भूयात्तद्विधा हरिविक्रम ॥ ७ ॥

श्रीगङ्गाधरशास्त्री ।

श्वाराणी वसुधामयीव विभवप्रावीण्यशास्युज्ज्वला
लीलाविग्रहधारिणीव करुणा लावण्यलक्ष्मीरिव ।
सामन्तक्षितिपालमौलिसुमनोमाल्यस्फुरच्छासना
श्रीसाम्राज्यपदेश्वरा विजयिनी देवी वरानृद्यते ॥ १ ॥
वल्याकृतभूवल्या वत्सपदीभूतवार्द्धिविस्तारा ।
वीरश्रीरिव निर्मला विलसति भुवि विजयिनी देवी ॥ २ ॥
सा ऽसूत कुमाररविं कुवलयमुल्लसति यदुदये चित्रम् ।
प्रसरति कीर्तिज्योत्स्ना राजाभ्युदयो विराजते जगति ॥ ३ ॥
यत्तेजस्तपनो ऽरिजन्मसदनं गत्वाश्रयाच्च्यावय-
स्तानासाद्य धनास्पदं निजबलेनाहृत्य सर्वं वसु ।
भूयस्तन्नृपविक्रमक्षयवशात्सौम्योऽपि जातो गुरु-
श्चन्द्रो ऽमन्दवपुश्च लोहिततनु काव्योज्ज्वलो भूतले ॥ ४ ॥
विश्वोल्लङ्घनजाङ्घिकैरभिनवै कीर्तिप्रतापोद्गमै
शीताशीतकरौ विजित्य शिशुता शेषोप्यशेषाक्रिय ।
विश्वालोकनकौतुकी विजयिनीवीरप्रसूतानभु-
विद्वन्मानसहंसतामुपगतो विद्योतते ऽद्यावनौ ॥ ५ ॥
श्रीमन्मध्यमलोकभाग्यनिवहै साम्राज्यलक्ष्मी वहन्
पौरानात्मजदर्शनाहितरतिर्भूयोपि ता वर्द्धयन् ।
क्षोणीमेकपुरीमिवेप कल्पयन्पाथोनिकाञ्चीं कृती
काशीभूषणभारतीयसदसं प्राप्त्या स्वया ऽभूषयत् ॥ ६ ॥

नालोकेन महस्सगीतमहसा पीयूषधाराशत-
स्नानैर्वा घनसारपूरनिबिडैरक्ष्णोद्दशाम्भकाञ्जनैः ।
नो वा कैश्चिदमन्दचन्दनरसैरानन्दमेतादृशं
विन्दामो वयमद्य यादृगुदभूच्छ्रीमत्प्रभोर्दर्शनात् ॥ ७ ॥
एतावदेव सततस्पृहणीयमास्ते नाथे समस्तजगतां परमेश्वरेऽपि ।
मा भूदमुष्य च सुखानुभवस्य भङ्गो यावज्जनुर्भवतु तत्प्रतिपक्षिणा स ॥८॥

श्रीरमापतिदूबे ।

यस्तार्क्ष्यो विनतानुमोदननिधौ सद्वाहिनीवल्लभः
पारावार इवाधरीकृतसमस्ताराातिकीर्त्तिव्रजः ।
आकूपारविहारिभूपतिशिरोरत्नालिनाराजन-
प्रोद्यच्चरणपद्मपङ्कजो विजयतां श्रीड्यूकविन्य प्रभुः ॥ १ ॥
श्रीमड्ड्यूकनरेन्द्रवीक्षणवलन्मोदामृतम्प्राणिभिः
प्राप्तं केवलमित्युपाशु कवयो जल्पन्ति वल्गन्तिते ।
यत्काशीनगरीस्थितासिलगृहश्रेणाभिरेणीदृशां
वाग्व्याजेन च सत्कृतो नरपतिः सम्पूर्णकुम्भादिभिः ॥ २ ॥
श्रीड्यूक त्वत्प्रतापानलशिखिनिचयो ऽयादकूपारपारं
प्राप्याशापामपास्य स्वगतवलभरात्तज्जनीरङ्गिगाय ।
ताः पातिव्रत्यभाजो ऽपगतबलतया त्वां स्वसिन्दूरपूरा-
नारक्ताकाशदम्भादनुदिनमुपामि प्रार्थयन्त्यो लसन्ति ॥ ३ ॥
राजानो ऽनुगता जगद्विजयिनामूनुम्भवन्तं नृप
वीरं वीरमभापुरिष्टमधिकं ताराधिनाथो यथा ।
पर्णैः षोडशभिः कलाभिरुदितो दृष्ट्वा चतुर्वाधिकं
काश्यामम्मामितरत्वदीयदृपया पञ्चमुन प्राप्तवान् ॥ ४ ॥

श्रीनृसिंहशास्त्री ।

श्रामामानुशातावचलनिलयमहीपालकोटीरकोटि-
प्रोन्माणिक्यप्रोचिर्निदीपदरागविभ्रमप्रकाशः ।
[illegible]

गिरयानैशयमीगा जगति विजयते शौर्य्यसार कुमार ॥ १ ॥
स्फूर्जद्दूर्वाटिभाल्लोचनमहानहोविरचर्चो ऽथवा
पिण्डीभूतसमस्तवाडवशिखाशोचि समूहो ऽपि वा
भूभृत्पक्षविदारणोद्यदशनिज्वालाकलापो ऽयमि-
त्यास्ते त्रस्तविहस्तवैरिहृदये यस्य प्रतापो युधि ॥ २ ॥
नीरक्षीरविवेकवित्तविहगश्रेणीजिगीषावशात्
सारासारविवेचनातिनिपुणो यो राजहंसोऽजनि ।
विद्वन्मानसनित्यवासरसिको विश्वातिशायिद्युति-
विश्वास किल मूर्त्तिमांश्च विनतक्षोणीभृता विश्वराट् ॥ ३ ॥
यत्सातिवर्षजनितामलकीर्त्तिमुक्ता सामन्तशेखरनिवर्षणतो ऽतिशुद्धा
दिक्कामिनीकुचतटीषु भवन्ति हाराकारा कवीन्द्रकवितागुणगुम्फिताश्च ॥४॥
सत्यास्मिन्सकलास्त्रधारिणि वृथा धत्ते कुमारोहमि-
त्याख्या वक्त्रकदम्बनैकृतधरस्कन्दो महासेनता ।
सापि द्वेषिचमूचमूरपटलीपञ्चाननस्यास्यया
सेनासज्जनिकोशखड्गनिकरा तस्या पुरो निष्प्रभा ॥ ५ ॥
धन्या हि सा विजयिनीदेवी यैनन्निजोदरे ऽयत्त ।
प्राचीव सकलभूभरवहनधुरीणन्तमभ्रमातङ्गम् ॥ ६ ॥
विश्वम्भरा सपत्नी रमेव सा जगति कन्यका धन्या ।
निर्जितकमलङ्करतलमस्याधत्ते गुणाब्धिजाता या ॥ ७ ॥
अक्ष्णोरासेचनकं सुधाकरस्येव यस्य वीक्ष्य वपु ।
सत्कविचकोरनिकरस्तृप्तोऽपि न तृप्तिमाययौ चरमे ॥ ८ ॥
निरर्गलविनिर्गलन्निखिलतन्त्रसैद्धान्तिका
वचस्सुगुरवोनुधा सदसि यस्य कान्याधिका ।
नटीरदपटीतटी मधुरिमाधुरीणा सुधा
तया किमु सुधर्मया यदि सभास्य भूभृन्मणेः ॥ ९ ॥
नवरत्नमालिकेय नवतरणिमसम्पदः कुमारस्य ।
प्रीतिं जनयतु परमां स च प्रजाभ्यः प्रसीदतु श्रीमान् ॥ १० ॥

श्रीढुंढिराजपन्त ।

दर्शंदर्शं यदीय मुखकमलमहो तुल्यतामाप्तुकाम-
श्चद्र: सगृह्य तेज सवितुरनुदिन मथर वर्द्धमान: ।
पूर्णाया तादृशामोऽभवमिति मुदितो ऽभ्येत्य खे नाप शोभा
क्षीण:क्षीणो बभूव प्रतिकुहु जयति प्राज्ञराज्या स सूनु ॥ १ ॥

यात्रावर्णनम् ।

सम्राट्सुनुनलाहके दिशिदिशि प्रारब्धपुण्योन्नतो
युक्ते प्रोद्यतशस्त्रराजितडिता यात्रामृत वर्षति ।
स्फीता नेत्रतरङ्गिणी समभवत्तृप्ता पुरग्रामभू
पूर्णं चार्थिसर: शशाम धरणीदुभिक्षदावानल ॥ २ ॥

श्रीविश्वनाथशास्त्री ।

उत्साहप्रभुमन्त्रशक्तिकरणाशौर्य्यादयो ये वरा
भासन्ते जगतीतले गुणगणास्त्रैलोक्यसौख्यप्रदा ।
ते भल्लाकसुखेच्छया विजयिनीत्याख्यासमालङ्कृता
दध्रु: श्रेष्ठनृपालसेवितनु भाग्योदयानूनानुजात् ॥ १ ॥
यद्गात्रयष्टिमहसा सह योद्धुकामा या केतकी सुमशिखा मनसा चकार ।
वृत्ति तदैव विजितास्मि तयेति चित्ते लज्जावशेन कृशताकृशतामवाप ॥ २ ॥
तस्या: सुतो विजयिनीति सुनामभाजो य: सार्वभौमपदवीममलङ्कृताया: ।
प्रल्हादनाद्गुणगणैर्मनस: प्रजानां चद्रे चकार स निरत्सुकता दयालु: ॥ ३ ॥

श्रीविनायकशास्त्री ।

यत्कीर्त्यर्णवसङ्गते सुरनरव्याहारगङ्गाम्भसि
स्नातु वाञ्छति लाञ्छनाऽपहृतये लोके कलाना निधि: ।
सा देवी सकलाग्रणीर्विजयिनी तस्या: सुत स्तासुत
प्रीत्या ऽऽधिक्ययुतस्तता निजगुणैर्य प्राप सद्युक्तताम् ॥ १ ॥
सो ऽय राजसुतो विलोकय इद वर्षं तत भारत
हृद्येव विनिधाय लोकमखिल पश्यन् ययौ काशिकाम् ।

त प्रत्यत्रनिवासिनो बुधजना विज्ञापयन्त्यादरात्
ता वाचः प्रसरतु कर्णपदवीं श्रीमत्प्रभोर्निर्मलाः ॥ २ ॥
श्रीपाठशाला गगन खगा वय विद्यार्थिसघ खलु तारकागणः ।
कलानिधिं प्राप्यभवन्तमत्र सुख लभते पुरवासिनो जनाः ॥ ३ ॥
खद्योतराजः सकलापदां गणो द्युतिं निजां न प्रकटाकरोति ।
तथारिपुस्त्रीषु विवर्द्धमान पत्यौ प्रशाते विरहश्च नास्ति ॥ ४ ॥
विद्यासमाना कवितानलिन्यपि श्रीमत्करेरास्यसर प्रसूता ।
अणुप्रमाण वचन प्रभूततामस्माकमित्येतु भवत्प्रसादात् ॥ ५ ॥

श्रीरामकृष्णशास्त्री ।

याप्येकानेकदेशे तडिदिव नितरा राजमानानुकम्पा-
सद्विद्याशौर्यशान्तिप्रभृतिगुणगणे पालयतीह लोकान् ।
श्रीदेवी राजराज्ञी जयति निजयिना तत्सुत सार्वभौम
पूर्वाशा पूरयन् यो रविरिव महसा दूरयन् दुर्दिन न ॥ १ ॥
सद्विद्यापीठमेतन्नतनृपतिजनो भूपयन्नप्रभाव-
लोकान्निज्ञाप्यतेय नहुदिनमिह यत्पठ्यतेपाठ्यते तत् ।
सत्र ज्ञात्वा यथावत्स्वनियमवशतो दीयता स्थानमुच्च
यत्रैव पाठनाय प्रभवति सतत तन्मनो न प्रसादात् ॥ २ ॥

श्रीनारायणकवि ।

दोहा ।

निमल बनारस मैं भई, सरस सफाई साज ।
बादशाह के कुवर की, सुनी अवाई आज ॥ १ ॥

कवित्त ।

सवत उनीस सै अनूप तिथि पूरनिमा लगन ललित बार चद्र सुभ मानिके ।
लडन निवासी महारानी के कुवर अब आइगे बनारस मुलुक सब जानि के ॥
गगतें उतरि चढि गजपै नरायनजू लेत चले सुदर सलाम जिय जानि के ।
पाछे काशिराज भूप विजयनगर सोहें जटित जवाहिर धराय खान खान के ॥२॥

घर घर तोरन पताका है नरायनज कलस बिचित्र लिंग दीप दमकत हैं ।
रतन अमोल मंजु मालिका विविध जात भांत भांत धामओ धुधाम गमकत हैं ॥
मोतिन की झालर में झुमका झुमत झप जरी बादलान के चदोवा चमकत हैं ।
आवन अनूप शाहजादे को बनारस में सेंगलगे अजब अमीर झमकत हैं ॥३॥
बना रस आज देखि परत बनारस में नार नारिनीकी लगी लपति किनारा तें ।
कसि कुच काचुकी विराजति अटारिन पै अतर निकारि जग लगति निवारी तें ॥
कोऊ झूमि झांकति झरोखा तें नरायनज कोऊ ठाढ बढाति बिचित्रता तिवारी तें ।
धारी वैभवारी शाहजादे की अवाई सुनि दूनी दिव्य दीपति बढावत दिवारी तें ॥४॥
जाकी तेग तकत जकत जैतवार सबै सुदर सुगन्द शाहिजादा सुभसान में ।
लंडन निवासी महारानी को सपूत पूत विक्रम अपूर्व करतूत भो जहान में ॥
जाहिर जबर जगवारो लै जहाजी फौज मौज मान मंजुल नरायन प्रमान में ।
सुजस बढावत कपावत दुवन रूस फूम सो उडावत सु आयो हिंदुवान में ॥ ५ ॥

श्रीहनुमानकवि ।

कवित्त ।

जासों जोर जग जुरें जाहिर जे जोमदार तेऊ वैरी बृंद कहू बचत न भागेतें ।
दिन दिन दूनो दूनो बाढत प्रताप जाको मातुपद पंकज मे पूरी प्रीति पागेतें ॥
लंदनतें सुनिके अवाई साहजादा जूकी कहै हनुमान हियें अति अनुरागेतें ।
आनद अमेस लीनें नजर सुवेस दीने मिलें देस देस के नरेस आय आगतें ॥१॥

श्रीहरिश्चन्द्रकृत ।

कवित्त ।

काशीमें ग्रहणके दिन महाराजकुमार के आने के हेतु ।
वाको जनम जल याको रानीकूख सागरतें वह तो कलंकी यामें छींट हू न आई है ।
वह नित घटै यह बाढै दिनादिन वह बिरही दुखद यह जग सुख दाई है ।
जानि अधिकाई सब भांति राजपुत्रही में ग्रहन के मिस यह मति उपजाई है ॥
देखि आजु उदित प्रकाशमान भीमचंद नभ ससि लाजि मुख कालिमा लगाई है ॥

हरिश्चन्द्र कृत ग्रन्थों का नाम दाम, जो बिक्री के लिये तैयार हैं ।

---

१ ।	नाटक	।≶)
२ ।	सत्यहरिश्चन्द्र	।≶)
३ ।	मुद्राराक्षस	॥)
४ ।	हिंदी भाषा	≶)
५ ।	कर्पूरमञ्जरी	≶)
६ ।	चन्द्रावली	॥)
७ ।	विद्यासुन्दर	।)
८ ।	भारत जननी	≶)
९ ।	भारत दुर्दशा	।)
१० ।	नीलदेवी	≶)
११ ।	माधुरी	)
१२ ।	पाखण्डविडम्बन	≶)
१३ ।	अंधेरनगरी	≶)
१४ ।	दुर्लभ बन्धु	॥)
१५ ।	भाण	≶)
१६ ।	धनञ्जय विजय	।)
१७ ।	सतीप्रताप	≶)
१८ ।	प्रेमयोगिनी	≶)
१९ ।	काश्मीरकुसुम	॥)
२० ।	महाराष्ट्र देश का इतिहास	)
२१ ।	बूंदी राजवंश	/॥)
२२ ।	रामायण का समय	/॥)
२३ ।	अगरवालों की उत्पत्ति	)
२४ ।	खत्रियों की उत्पत्ति	॥)
२५ ।	उदयपुरोदय	।)
२६ ।	बादशाहदर्पण	१≶)
२७ ।	पुरावृत्त संग्रह	॥)

मनेजर—"खड्गविलास" प्रेस—बाँकीपुर।

जातीयसंगीत।

(हिन्दी भाषा में)

(१)

प्रभु रच्छहु दयाल महरानी,
बहु दिन जिऐ प्रजा सुखदानी;
हे प्रभु रच्छहु श्रीमहरानी·
सब दिसि मे तिनकी जय होई,
रहे प्रसन्न सकल भय खोई,
राज करै बहु दिन लौं सोई,
हे प्रभु रच्छहु श्रीमहरानी·

(२)

उठहु उठहु प्रभु त्रिभुवनराई !
तिन के अरिन देहु अकुलाई,
रन महँ तिनहि गिरावहु मारी·
सब दुख दारिद दूर बहाओ,
विद्या और कला फैलाओ,
हमरे घर महं शांति बसाओ,
देहु असीस हमें सुखकारी·

(३)

प्रभु निज अनंगन सुभग असीसा,
वरसहु सदा विजयिनी सीसा,
देहु निरुजता जस अधिकारा
कृषक, राजसुत, कै अधिकारी,
कराहिं राज को संभ्रम भारी;
निकट दूर के सब नर नारी,
कराहिं नाम आदर विस्तारा

(४)

रच्छहु निज भुज तर सह साजा,
सब समर्थ राजन के राजा,
अलखराज कर सब बल खानी !
विनय सुनहु विनवत सब कोई,
पूरव सो पच्छिम लौं जोई,
राज भक्त गन इक मन होई,
हे प्रभु रच्छहु श्री महरानी

(युद्ध के समय योधागण के गाने को)

उठहु उठहु प्रभु त्रिभुअनराई
तिनके शत्रु देहु छितराई,
रन महँ तिन्नहिं गिरावहु मारी

स्वामिनि स्वत्व हेतु जे वीरा,
लड़हिं हरहु तिनकी सब पीरा,
यह बिनवत हम तुव पद तीरा,
हे प्रभु जग स्वामी सुखकारी·

(अकाल और उपद्रव के समय गाने को)

उठहु उठहु प्रभु! त्रिभुवनराई!
कठिन काल मे होहु सहाई,
देहु हमहि अवलम्बन भारी·
अभय हाथ मम सीस फिराओ,
मुरझी भुव पर सुख बरसाओ,
पिता विपति सों हमहिं बचाओ,
आइ सरन तुव रहे पुकारी·

(सन १८७१ में श्रीमान् प्रिन्स आफ वेल्स के पीड़ित होने पर कविता।)

जय जय जगदाधार प्रभु, जगव्यापक जगदीस ।
जय जय प्रणतारति हरन, जय सहस्र पद सीस ॥
करुणा वरुनालय जयति, जय जय परम कृपाल ।
सुद्ध सच्चिदानन्द घन, जय कालहु के काल ॥
सब समर्थ जय जयति प्रभु, पूर्ण ब्रह्म भगवान ।
जयति दया मय दीन प्रिय, क्षमा सिन्धु जन त्रान ॥
हम सँ भारत की प्रजा, सब विधि दीन मलीन ।
तुम सों यह बिनती करत, दया करहु लखि दीन ॥
हाथ जोरि सिर नाइ कैं, दांत तरे तृन राखि ।
परम भक्त ह्वै कहत हैं, दीन बचन अति भाखि ॥
बिनवत हाथ उठाइ कै, दीजै श्री भगवान ।
जुवराजहि गत रुज करी, देहु अभय को दान ॥
तिन के दुख सों सब दुखी, नर नारिन के वृन्द ।
ताका तुरतहि रोग हरि, तिन कहं करहु अनन्द ॥
जिन की माता सब प्रजा, गन की जीवन प्रान ।
तिनहि निरोगी कीजिये, यह बिनवत भगवान ॥
बेग सुनै हम ज्ञान सों, प्रिन्स भए आनन्द ।
परम दीन ह्वै जोरि कर, यह बिनवत हरिचन्द ॥
